Machine Translated by Google

KILLER TRAPPED

ANIL GARG

Machine Translated by Google

डिटेक्टिव अनुज सीरीज

अनिल गर्ग द्वारा

Machine Translated by Google

हत्यारा फँस गया

Machine Translated by Google

अध्याय 1
अध्याय दो
अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5
अध्याय 6
अध्याय 7
अध्याय 8
अध्याय 9
अध्याय 10
अध्याय 11
अध्याय 12
अध्याय 13
अध्याय 14
अध्याय 15
अध्याय 16
अध्याय 17

Machine Translated by Google

अध्याय 1

खोया हुआ आदमी

इस समय, मैं दिल्ली के केशवपुरम थाने में इंस्पेक्टर नरसिंह के सामने बैठा था। मेरे बगल में एक महिला बैठी थी, शायद चालीस साल की, और उसके नैन-नक्श बिलकुल पंजाबी जैसे थे। उसका कद मध्यम और रंग गोरा था, लेकिन इस समय उसका चेहरा बेजान सा लग रहा था, मानो वह किसी गहरी सोच में डूबी हो। उसके बगल में एक लगभग हमउम्र आदमी बैठा था, शायद उसका साथी।

"तो आप कह रही हैं कि आपके पति सात दिन से लापता हैं और आप आज इसकी रिपोर्ट दर्ज कराने आई हैं?" थाने के प्रभारी इंस्पेक्टर नर सिंह ने थोड़े चिढ़े स्वर में पूछा।

"जी सर। वह अक्सर हमें बताए बिना तीन-चार दिन के लिए गायब हो जाता है। मुझे लगा था कि वह हमेशा की तरह वापस आ जाएगा, लेकिन अब जब पूरा एक हफ़्ता बीत गया है और वह वापस नहीं आया है, तो मुझे चिंता होने लगी है। इसीलिए मैं आज यहाँ आई हूँ," महिला ने इंस्पेक्टर की ओर देखते हुए बताया।

नरसिंह ने आगे पूछा, "इन तीन-चार दिनों की गुमशुदगी के दौरान वह आमतौर पर कहाँ जाता है? आपको कुछ तो पता होगा। क्या आपने उन जगहों की जाँच की है?"

"क्या कहूँ साहब... इस उम्र में भी वह किसी और औरत के प्यार में पड़ गया है।" वह उस शापित औरत के घर जाता रहता है," औरत ने गुस्से से कहा।

"तो क्या तुमने उस औरत से पूछताछ की?" इससे पहले कि मैं खुद को रोक पाती, ये शब्द मेरे मुँह से निकल गए।

"यही तो समस्या है! इस बार तो वह वहाँ भी नहीं गया," महिला ने हार मान कर जवाब दिया।

"भाभी, यकीन मानो, तुम्हारे पति के और भी कहीं चक्कर होंगे," बगल में बैठे आदमी ने बीच में ही टोकते हुए कहा। वह उसके पति का छोटा भाई लग रहा था, लेकिन वह अपनी ही बहन के खिलाफ था।

इंस्पेक्टर ने थकी हुई आवाज़ में कहा, "पहले मुझे अपने बारे में बताओ। बाकी बातें हम बाद में करेंगे।"

Machine Translated by Google

"मेरा नाम निधि है। मैं यहाँ ए-1 कॉलोनी में रहती हूँ। यह विक्रम है, मेरे पति का चचेरा भाई," महिला ने अपना और अपने साथी का परिचय दिया।

नरसिंह ने आगे कहा, ''आपके पति क्या करते हैं?''

निधि ने तुरंत जवाब दिया, "वह रियल एस्टेट के कारोबार में है। वह संपत्तियां खरीदता और बेचता है।"

"ठीक है। हमें उसकी तस्वीर और सारी जानकारी के साथ एक लिखित बयान दे दो। जैसे ही हमें उसके बारे में कोई खबर मिलेगी, हम तुम्हें सूचित कर देंगे।"
नरसिंह ने कहा कि लापता व्यक्ति के लिए मानक प्रक्रिया का पालन किया जा रहा है।
मामले.

यह सुनकर दोनों कमरे से बाहर चले गए।

जैसे ही वे बाहर निकले, नरसिंह मेरी ओर मुड़ा और पूछा, "अनुज, तुम्हें क्या लगता है? उसका पति कहाँ होगा?"

"खैर, विक्रम शायद सच कह रहा है। उस आदमी के शायद कई अफेयर्स हैं, या शायद निधि को उसके छिपने की जगह के बारे में पता चल गया होगा, इसलिए उसने इस बार अपना ठिकाना बदल लिया," मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

"वैसे, यह महिला लगभग चालीस साल की होगी, तो इसका पति निश्चित रूप से बड़ा होगा। इस उम्र में भी, वह अपना आकर्षण बनाए रखने में कामयाब हो रहा है?"
नरसिंह ने मेरी ओर मुस्कुराते हुए पूछा।

"इंस्पेक्टर साहब, वह प्रॉपर्टी के कारोबार में हैं, इसलिए उनके पास पैसा होना चाहिए।"
और जहाँ पैसा है, वहाँ ऐशो-आराम है। ऐसे मामलों में उम्र कोई मायने नहीं रखती, खासकर पुरुषों के लिए," मैंने दार्शनिक अंदाज़ में कहा।

"तुम बिल्कुल सही कह रहे हो अनुज। सारी दुनिया पैसे की गुलाम हो गई है," नरसिंह ने मेरी बात से सहमति जताई। "लेकिन यह बताओ, आज तुम मेरे यहाँ क्यों आए हो?"

"कुछ खास नहीं। अभी-अभी सुना कि आप इंस्पेक्टर बन गए हैं और अब उसी थाने के प्रभारी हैं जहाँ आप कभी कॉन्स्टेबल थे। सोचा कि आकर आपको श्रद्धांजलि अर्पित करूँ," मैंने मज़ाक में कहा।

नरसिंह ने विनम्रता से जवाब दिया, "अनुज, यह सब तुम जैसे भाइयों के आशीर्वाद से ही है कि मैं एक कॉन्स्टेबल से इंस्पेक्टर बन पाया हूँ।" यही उसकी सबसे बड़ी खूबी थी—उसमें कभी भी एक आम पुलिसवाले जैसा अहंकार नहीं दिखा।

Machine Translated by Google

"तो बताओ, तुम्हारा जासूसी का काम कैसा चल रहा है?" उसने पूछा।

"सब ठीक चल रहा है। नेताजी सुभाष प्लेस के पास मेरा एक छोटा सा दफ़्तर है, जिसमें दो लोग काम करते हैं। मुझे मिलाकर हम तीन लोगों की टीम है," मैंने उन्हें बताया।

"यह तो बढ़िया है! मैं इन दिनों आपके द्वारा सुलझाए जा रहे मामलों के बारे में सुनता रहता हूँ,"
नरसिंह मुस्कुराया.

"अगर कभी कोई विशेष रूप से मुश्किल मामला आपके पास आए, तो मुझे याद रखना। मैं आपकी सेवा में उपस्थित रहूंगा," मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

"पहले मैं तुम्हें कॉफ़ी पिला दूँ! बहुत दिन हो गए मिले, तो कॉफ़ी तो बनती ही है।" यह कहकर नरसिंह ने घंटी बजाई और एक सिपाही फौरन आ गया। उसने दो कप कॉफ़ी मँगवाई और कॉफ़ी खत्म करके मैंने नरसिंह को अलविदा कहा और थाने से बाहर निकल गया।

अब तक तो तुम मुझे पहचान ही गए होंगे—मैं तुम्हारा पुराना परिचित हूँ, अनुज। मैं जासूसी के पेशे से जुड़ा हूँ, जो भारत के सबसे सम्मानित व्यवसायों में से एक है। लेकिन जब भी मैं लोगों को अपने काम के बारे में बताता हूँ, तो वे मुझे ऐसे देखते हैं जैसे मैं किसी संग्रहालय का कोई दुर्लभ प्राणी हूँ। मैं सिर्फ़ हत्या के मामले ही लेता हूँ। शक, तलाक, विश्वासघात और लोगों का पीछा—इनमें से किसी में भी मेरी रुचि नहीं है, और न ही मैं ऐसे मामलों को कभी स्वीकार करता हूँ।

नरसिंह के कार्यालय से निकलकर मैं नेताजी सुभाष प्लेस स्थित अपने कार्यालय की ओर चला, जहां रागिनी और मेरे सहायक नरेश बेसब्री से मेरा इंतजार कर रहे थे - आखिरकार, यह वेतन मिलने का दिन था, इसलिए उनकी अधीरता स्वाभाविक थी।

जैसे ही मैं ऑफिस में दाखिल हुआ, नरेश ने तुरंत चाय बनानी शुरू कर दी, और रागिनी ने अपनी ख़ास मुस्कान के साथ मेरा स्वागत किया। मैं उस मुस्कान को अपने केबिन की तरफ़ बढ़ते हुए देख रहा था, रागिनी मेरे पीछे-पीछे अंदर आ रही थी।

रागिनी सरल होते हुए भी आकर्षक थी—असाधारण रूप से सुंदर नहीं, पर साधारण भी नहीं। उसमें एक ऐसा आकर्षण था जो किसी को भी पहली नज़र में ही अपना दीवाना बना सकता था। हालाँकि, इस 21वीं सदी में, वह 16वीं सदी की एक अवशेष सी थी—आधुनिक महिलाओं के बीच एक अपवाद।

वह मार्शल आर्ट में विशेषज्ञ थीं और मैंने पहले भी कई बार हथियारों के साथ उनका कौशल देखा था।

"अनुज साहब! क्या इस शहर में लोगों ने एक-दूसरे को मारना बंद कर दिया है? हम

Machine Translated by Google

रागिनी ने चिंतित स्वर में कहा, "हाल ही में एक भी मामला नहीं आया है!"

"हम क्या कर सकते हैं? हमारा व्यवसाय हत्याओं पर निर्भर है, लेकिन हम किसी की मृत्यु की कामना तो नहीं कर सकते," मैंने असहाय होकर उत्तर दिया।

रागिनी ने पिछली जांचों को याद करते हुए कहा, "पिछले दो मामलों में हमें कोई कमाई नहीं हुई। दरअसल, हमें अपनी ही नकदी खर्च करनी पड़ी।"
(आप सभी को 'द डेड मैन वर्थ 500 करोड़' और 'डेथ केम साइलेंटली' याद होंगे।)

"यह सब व्यवसाय का हिस्सा है। हमने इस नौकरी से भी अच्छी कमाई की है," मैंने उसे आश्वस्त किया।

"तो इसका मतलब हमारी सारी कमाई अभी भी तुम्हारे बैंक खाते में सुरक्षित है? तुमने उसे जुए और शराब में तो नहीं उड़ा दिया?" रागिनी ने मुझे चिढ़ाते हुए कहा।

"मैंने केवल तुम्हारा वेतन देने के लिए ही पैसे बचाये थे। बाकी सब खत्म हो गया है," मैंने हंसते हुए कहा।

"तुम्हें मेरा वेतन भी खर्च करना चाहिए था!" उसने चुटकी लेते हुए कहा, जैसे कोई पत्नी अपने पति को डांट रही हो।

"मुझे तुम पर भरोसा नहीं है। अगर मैंने तुम्हें पैसे नहीं दिए, तो तुम शायद मुझे लेबर कोर्ट ले जाओगी," मैंने गंभीरता से कहा, जिससे रागिनी जोर से हंस पड़ी।

तभी नरेश दो कप चाय लेकर आया। हमने चुस्कियाँ लेते हुए रागिनी को दोनों की तनख्वाह थमा दी—उसने भुगतान संभाल लिया। हमने चुपचाप चाय का आनंद लिया।

जैसे ही मैंने अपना खाली कप नीचे रखा, मेरा फ़ोन बज उठा। स्क्रीन पर इंस्पेक्टर नरसिंह का नंबर दिखाई दे रहा था। मैंने झट से फ़ोन उठाया।

"क्या बात है, सिंह सर? मुझे पहले से ही याद कर रहे हो?" मैंने मज़ाक किया।

"अनुज! क्या तुम्हें वह औरत याद है जिसने अपने पति की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी?" नरसिंह ने आग्रहपूर्वक पूछा।

"हां, वह प्रॉपर्टी डीलर जिसकी पत्नी ने कहा था कि उसके कई संबंध थे," मैंने जवाब दिया।

"उसका शव मिला है - उसकी अपनी ही एक संपत्ति में!"
नरसिंह ने जो खुलासा किया, उससे मैं एक पल के लिए स्तब्ध रह गया।

"यह अजीब है। जिस तरह से वह बोल रही थी, उससे ऐसा नहीं लग रहा था कि वह अंदर था

Machine Translated by Google

कोई ख़तरा तो नहीं था। अब अचानक वो मर गया? ये बात तो समझ में नहीं आती," मैंने कहा।

"अनुज, चलो इस केस को एक चुनौती के रूप में लेते हैं - देखते हैं इसे पहले कौन सुलझाता है!"
नरसिंह ने प्रस्ताव रखा।

"मैं तैयार हूँ! यह मजेदार लग रहा है," मैंने तुरंत स्वीकार कर लिया।

नरसिंह ने आश्वासन दिया, "तो फिर अपराध स्थल पर मुझसे मिलो। मैं सभी फोरेंसिक रिपोर्ट और पोस्टमार्टम रिपोर्ट तुम्हारे साथ साझा करूँगा ताकि यह एक निष्पक्ष प्रतियोगिता हो।"
मुझे।

"ठीक है! मुझे पता भेज दो, मैं जल्द ही वहाँ पहुँच जाऊँगा," मैंने मुस्कुराते हुए कहा। पहली बार, मैं किसी पुलिसवाले से किसी हत्या की गुत्थी सुलझाने की होड़ में था।

Machine Translated by Google

अध्याय दो

अपराध स्थल

इंस्पेक्टर नर सिंह ने मुझे एक पता भेजा था, जो केशवपुरम के एक अपार्टमेंट का निकला। यह मेरे ऑफिस से सिर्फ़ दस मिनट की ड्राइव पर था। जैसे ही मैं बताई गई जगह पर पहुँचा, मैंने देखा कि बाहर भारी भीड़ जमा थी। पुलिस पहले ही घटनास्थल पर पहुँच चुकी थी, और शायद दर्शकों का ध्यान भी इसी ओर गया होगा।

जैसे ही मैंने अपार्टमेंट के अंदर कदम रखा, इंस्पेक्टर नर सिंह मेरे ठीक सामने खड़े थे। उनके बगल में, मैंने निधि नाम की एक महिला और उसके तथाकथित भाई विक्रम को देखा, दोनों उदास लग रहे थे। मेरे कदम अनायास ही मुझे उनकी ओर खींच ले गए। नर सिंह ने मुझे पहले ही देख लिया था।

"शरीर कहाँ है?" मैंने उसके पास पहुँचते ही पूछा।

"अंदर बेडरूम में आओ, देखो," नर सिंह ने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया।

केशवपुरम में अपार्टमेंट एक विशिष्ट पैटर्न में संरचित थे - प्रवेश द्वार के ठीक बाद एक कमरा, उसके बाद एक बाथरूम और एक शौचालय, उसके बगल में एक रसोईघर, और फिर अंत में अंतिम कमरा।

मैं नर सिंह के साथ वाले आखिरी कमरे में पहुँचा। लगभग पैंतालीस साल का एक आदमी बिस्तर पर निश्चल पड़ा था, उसकी बेजान आँखें छत को घूर रही थीं। उसका रंग बेहद गोरा था—पंजाबियों में एक आम बात, मानो उन्हें यह प्राकृतिक रूप से मिला हो। उसकी उंगलियों में दो रत्नजड़ित अंगूठियाँ थीं, जो मंद रोशनी में चमक रही थीं, और लगभग दो तोले की सोने की चेन अभी भी उसके गले में लटक रही थी। हालाँकि, उस दृश्य में एक अजीब सी विशिष्टता थी—वह आदमी बिल्कुल नंगा था। ऐसा लग रहा था मानो इस तेजस्वी व्यक्ति ने अपने अंतिम क्षण भोग विलास में बिताए हों।

मुझे सबसे ज़्यादा जो बात खटक रही थी, वह थी किसी संघर्ष या बाहरी घुसपैठ का कोई निशान न दिखना। कमरा बहुत साफ़-सुथरा लग रहा था, मानो किसी ने मौके पर अपराध करने के बजाय लाश को वहाँ बड़ी सावधानी से रखा हो।

Machine Translated by Google

शव को देखने के बाद मैंने कहा, "यह कोई डकैती नहीं थी।"

"यह तो साफ़ है, जासूस। पीड़िता का सोना और गहने तो वैसे ही हैं। और कुछ भी नज़र आया?" नर सिंह की आवाज़ में व्यंग्य का भाव था।

"हाँ," मैंने मुस्कुराते हुए कहा। "वह आदमी किसी अंतरंग गतिविधि के बीच में ही मर गया।"

"और आपने यह सिर्फ इसलिए मान लिया क्योंकि वह नंगा है?" नर सिंह ने मेरी ओर हल्के से मनोरंजन से देखा।

"सिर्फ इतना ही नहीं। उसके शरीर के नीचे से एक महिला का अंतर्वस्त्र भी झांक रहा है," मैंने बताया।

"आपकी नज़रें बहुत तेज़ हैं। मैंने अभी तक इस पर ध्यान नहीं दिया था," नर सिंह ने थोड़ा शर्मिंदा होकर कहा।

"शरीर पर कोई चोट के निशान नहीं हैं, जिसका मतलब है कि उसका दम घुट गया था। सबसे ज़्यादा संभावना है कि उसके चेहरे पर तब तक कुछ दबाया गया जब तक उसकी साँसें बंद नहीं हो गईं," मैंने आगे विश्लेषण किया।

"मुझे भी यही शक है। शायद इस तकिये से," नर सिंह ने लाश के पास पड़े तकिये की ओर इशारा किया।

"एक और बात," मैंने नर सिंह की ओर देखते हुए कहा।

"क्या?" उसने उत्सुकता से पूछा.

मैंने कहा, "इस आदमी को यहां नहीं मारा गया।"

"अनुज, तुम इतना आश्वस्त कैसे हो सकते हो?" नरसिंह के चेहरे पर जिज्ञासा उभर आई।

"शरीर खुद सच्चाई बयां करता है। उसकी आँखें खुली हैं, यानी जब उस पर हमला हुआ तो वह पूरी तरह होश में था। लेकिन हैरानी की बात यह है कि संघर्ष के कोई निशान नहीं हैं। उसके पैर बिल्कुल सीधे हैं—अगर उसने प्रतिरोध किया होता, तो उसकी मुद्रा इतनी कठोर नहीं होती।"

नर सिंह ने जवाब दिया, "हत्यारा इसके बाद अपने पैर सीधे कर सकता था।"

"तो फिर उन्होंने उसकी आँखें बंद क्यों नहीं कीं? खुली आँखों वाला शव

Machine Translated by Google

"यह बहुत ही भयावह दृश्य है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। अगर हत्यारे ने शरीर को ठीक करने की ज़हमत उठाई होती, तो वे आँखें भी बंद कर लेते," मैंने समझाया।

"यह एक ठोस बात है," नर सिंह ने सिर हिलाकर कहा, मानो वह आश्वस्त हो गया हो।

मैंने पूछा, "पीड़ित का नाम क्या है?"

नर सिंह ने उत्तर दिया, "उसका नाम रुस्तम था।"

"ठीक है, अपनी कानूनी औपचारिकताएँ पूरी कर लो। तब तक, मैं विधवा से बात करूँगा," मैंने मुख्य हॉल की ओर चलते हुए कहा। तभी मैंने देखा कि एक फोरेंसिक टीम और एक फ़ोटोग्राफ़र कमरे में दाखिल हो रहे हैं। नर सिंह उनके पीछे-पीछे अंदर आ गया, लेकिन मैंने तय किया कि निधि से बात करना ही मेरी प्राथमिकता है।

निधि अपने भाई विक्रम के साथ बाहर वाले कमरे में खड़ी थी। अब तक कुछ महिला रिश्तेदार आ चुकी थीं और उसे घेर लिया था। मैंने निधि को एक तरफ हटने का इशारा किया।

वह लगभग चालीस साल की थीं, उनका चेहरा गोल, रंग उनके दिवंगत पति जैसा गोरा, और गहरी आँखें शांत जल जैसी थीं। हालाँकि, उनके अत्यधिक वज़न ने उनके आकर्षण को फीका कर दिया था। जैसे-जैसे वह मेरी ओर बढ़ीं, उनकी चाल मुझे लुढ़कते हुए ढोल की याद दिला रही थी। उनकी आँखों में सवालों और अस्पष्ट भावनाओं का मिश्रण था।

मैंने पूछा, "क्या आपको इस बात का कोई संदेह है कि आपके पति की हत्या किसने की?"

"कई संदिग्ध हैं। उसके दोस्तों से ज़्यादा दुश्मन थे। मैं शुरुआत कहाँ से करूँ?" उसने आह भरते हुए कहा।

"क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसका हाल ही में उसके साथ कोई गंभीर झगड़ा हुआ हो?" मैंने ज़ोर देकर पूछा।

"कुछ दिन पहले, पैसों को लेकर उसका अपने बिज़नेस पार्टनर संतोष से गरमागरम झगड़ा हुआ था। उन्होंने पिस्तौल भी तान ली थी। उस दिन मामला सुलझ गया था, लेकिन संतोष बार-बार रुस्तम को जान से मारने की धमकी दे रहा था," उसने याद किया।

"कोई और? शायद कोई औरत जिसके साथ उसका झगड़ा हुआ था?" मैंने आगे पूछा।

Machine Translated by Google

"उसके बहुत सारे अफेयर थे। वह अपनी कमाई का ज़्यादातर हिस्सा औरतों पर खर्च करता था, इसीलिए बहुत सारी औरतें उसके इर्द-गिर्द घूमती थीं," उसने बिना किसी नाराज़गी के जवाब दिया।

"उसकी पत्नी होने के नाते, क्या उसके कार्यों से तुम्हें गुस्सा नहीं आया? क्या तुमने कभी उसे छोड़ने के बारे में नहीं सोचा?" मैंने पूछा।

"एक महिला के पास हमेशा अपने पति का विरोध करने की सुविधा नहीं होती। यह तब और भी मुश्किल हो जाता है जब वह पूरी तरह से उस पर निर्भर हो। मेरे परिवार ने कभी मेरा साथ नहीं दिया, और मेरे बच्चे अब बड़े हो गए हैं। मेरे पास समायोजन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था," उन्होंने हार मानते हुए कहा।

"ठीक है निधि। हम तुम्हारे पति के हत्यारे को पकड़ने की पूरी कोशिश करेंगे," मैंने उसे आश्वासन दिया और बेडरूम की ओर मुड़ गया।

अब तक, फोरेंसिक टीम अपना काम पूरा कर चुकी थी। शव को चादर से ढक दिया गया था। निधि के ठंडे व्यवहार ने मुझे बेचैन कर दिया—उसमें वह दुःख नहीं था जो एक नव-विधवा से अपेक्षित होता है।

महिला।

मैंने देखा कि फोरेंसिक टीम ने नीले रंग के अंडरगारमेंट को एक प्लास्टिक बैग में बंद कर दिया था और उसे अहम सबूत मान रही थी। चूँकि रुस्तम की तकिये से गला घोंटकर हत्या की गई थी, इसलिए उसे भी जाँच के लिए भेजा जा रहा था।

"क्या यह अंडरगारमेंट हमें हत्यारे तक पहुंचा सकता है?" मैंने फोरेंसिक अधिकारी से पूछा।

अधिकारी ने बताया, "अगर उस पर उंगलियों के निशान हैं, तो हम उन्हें ढूंढ लेंगे। हमें तुलना के लिए पत्नी और उसके भाई से भी उंगलियों के निशान लेने हैं। जब हमें अन्य संदिग्धों का पता चल जाएगा, तो हम उनके भी निशानों का मिलान करेंगे।"

"क्या इस अधोवस्त्र का इस्तेमाल पीड़िता का मुंह बंद करने के लिए किया गया होगा?" मैंने सुझाव दिया।

उन्होंने जवाब दिया, "यह संभव है, लेकिन हम फोरेंसिक जांच के बाद इसकी पुष्टि करेंगे। इसमें कम से कम तीन दिन लगेंगे।"

"एक बात तो तय है," नर सिंह ने बीच में ही कहा। "इस आदमी की हत्या यहाँ नहीं हुई। उसके कपड़े घटनास्थल से गायब हैं, जिससे पुष्टि होती है कि उसकी हत्या कहीं और करके यहाँ लाकर छोड़ी गई है।"

"लगता है आपका मामला ठोस है, इंस्पेक्टर। फोरेंसिक रिपोर्ट में

Machine Translated by Google

मैंने कहा, "जल्द ही हत्यारे का पता चल जाएगा।"

"तो, इस मामले पर आपकी क्या राय है, अनुज?" नर सिंह ने बाहर निकलते ही पूछा।

"रिपोर्ट का इंतज़ार करते हैं। यह मामला उतना आसान नहीं है जितना दिख रहा है," मैंने टालते हुए कहा।

"आप ऐसा क्यों सोचते हैं?" उसने पूछा।

"क्योंकि रुस्तम ऐसा आदमी नहीं था जो बिना लड़े हार मान लेता। अगर हत्यारा इतना लापरवाह था कि इतने सारे सुराग छोड़ गया, तो ज़रूर कोई बड़ी बात होगी," मैंने तर्क दिया।

"मुझे लगता है कि आपने उसकी पत्नी से काफी कुछ सीखा है?" नर सिंह ने मुस्कुराते हुए कहा।

"अभी ज़्यादा कुछ नहीं। लोग तभी बात करना शुरू करते हैं जब उन्हें लगता है कि वे फँस गए हैं," मैंने जवाब दिया।

नर सिंह ने स्वीकार किया, "ठीक है।"

"ठीक है, रिपोर्ट आने पर मुझे फ़ोन करना। तब तक मैं ख़ुद ही जाँच कर लूँगा," मैंने कहा और चलते हुए उससे हाथ मिलाया।

Machine Translated by Google

अध्याय 3

रहस्यमयी आदमी रुस्तम

मैं वहाँ से निकलकर संतोष को ढूँढना चाहता था... वो कैसा व्यापारी था जो अपने साथ पिस्तौल रखता था और छोटी-मोटी बहस में भी उसे तान देता था? मैंने केशवपुरम के उस इलाके में घूमने का फैसला किया जहाँ रुस्तम रहता था और उसका प्रॉपर्टी ऑफिस था। केशवपुरम का वो इलाका ज़्यादा बड़ा नहीं था, और रुस्तम की बदनामी को देखते हुए, कोई भी मुझे आसानी से उसका ऑफिस बता सकता था। इसलिए, मैं वहाँ से निकल गया और सीधे उस इलाके की ओर चल पड़ा जहाँ मुझे रुस्तम का ऑफिस ढूँढना था।

रुस्तम का दफ़्तर ढूँढ़ने में ज़्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ी। इस इलाके को मुख्य सड़क से जोड़ने वाली सड़क पर एक चमकदार प्रॉपर्टी डीलर का साइनबोर्ड था जिसने दूर से ही मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया। बोर्ड पर अजीब तरह से लिखा था: "रुस्तम का गरीबखाना" - गरीबों के लिए रुस्तम का आश्रय।

उस आदमी की अपनी शैली थी, लेकिन यही शैली उसे समय से पहले ही इस दुनिया से ले गई।

मैंने अपनी कार उसके दफ़्तर के ठीक सामने रोक दी। दफ़्तर खुला था, लेकिन बाहर स्थानीय लोगों की भीड़ जमा हो गई थी। रुस्तम की हत्या की खबर इलाके में आग की तरह फैल गई थी। मैंने अपनी कार किनारे खड़ी की और उसके दफ़्तर के बाहर भीड़ में घुल-मिल गया।

"क्या हुआ भाई? यहाँ इतनी भीड़ क्यों है?" मैंने अनजान बनते हुए एक अजनबी से पूछा।

"अरे भाई! किसी ने हमारे रुस्तम साहब को मार डाला... क्या तुम यकीन कर सकते हो कि इतने नेक इंसान के दुश्मन भी हो सकते हैं?" उस आदमी के शब्द रुस्तम के लिए प्रशंसा से भरे थे, जिसने मुझे एक पल के लिए सोचने पर मजबूर कर दिया। क्या हमें गुमराह करने के लिए रुस्तम की छवि जानबूझकर बिगाड़ी जा रही थी?

"इतने अच्छे आदमी को किसने मारा?" मैंने बातचीत जारी रखी।

"कोई नहीं जानता, साहब! यह तो पुलिस ही पता लगाएगी। लेकिन जिसने भी यह किया है, उसने बहुत बड़ा पाप किया है... उस बदमाश ने कई गरीबों के मुँह से निवाला छीन लिया है," उसने अज्ञात हत्यारे को कोसा।

"ठीक है... रुस्तम साहब का एक पार्टनर था संतोष। क्या वो यहीं है?"

Machine Translated by Google

कार्यालय?" मैंने अंततः अपनी वास्तविक रुचि का कुछ पूछा।

"वह तुम्हें घर पर ही मिलेगा... वह यहीं पास के बी-2 फ्लैट में रहता है। क्या तुम्हें उससे कोई ज़रूरी काम है?" वह आदमी काफ़ी बातूनी लग रहा था।

"हाँ, मुझे उससे एक फ्लैट के बारे में बात करनी थी। इसीलिए मैं यहाँ आया था..."
खैर, मैं किसी और दिन आऊँगा। क्या ऑफिस में कोई है जो मुझे संतोष का कॉन्टैक्ट कार्ड दे सके?" मैंने और पूछताछ की।

"मैं आपके लिए ले आता हूँ, साहब। कार्ड बाहर मेज़ पर रखे हैं... हम तो यहाँ आते-जाते रहते हैं।" यह कहकर वह जल्दी से ऑफिस में चला गया। कुछ ही देर में उसके हाथ में दो-तीन कार्ड आ गए।

"ये लीजिए, साहब... इस कार्ड पर संतोष का नंबर है। लेकिन अगर रुस्तम साहब होते, तो आपको इससे भी बेहतर डील देते। संतोष तो रुस्तम साहब की मेहनत पर ही गुज़ारा कर रहा है," उस आदमी ने कुछ संभलकर कहा।

क्रोध।

मैंने अक्सर देखा है कि बहुत ज्यादा बातूनी लोग कभी-कभी ऐसी बातें बता देते हैं जो उन्हें किसी अजनबी से कभी नहीं कहनी चाहिए।

"युवक, यदि आप यहां इतना समय बिताते हैं, तो आपको इस क्षेत्र में संपत्ति के लेन-देन के बारे में काफी कुछ पता होगा," मैंने उसे उकसाया।

"अरे साहब! मैं रुस्तम साहब को यहाँ होने वाले सौदों की जानकारी देता था... टाइगर साहब बहुत अच्छे आदमी थे। किसी भी सौदे के बाद वो हमें हमारा हिस्सा देने से कभी इनकार नहीं करते थे। लेकिन ये संतोष तो बदमाश है, हमेशा लोगों से पैसे ठगने की ताक में रहता है," संतोष से रंजिश रखने वाले उस आदमी ने शिकायत की।

"लगता है संतोष ने किसी सौदे में आपका हिस्सा ठग लिया है।
इसीलिए तुम उससे इतनी नाराज़ हो," मैंने बातचीत का रुख थोड़ा और ढीला किया।

"अरे साहब! आज मेरा दिल भारी है। किसी और दिन आकर मिलिए, मैं आपको सब कुछ बता दूँगा। अभी तो बस टाइगर साहब के जाने का गम मना रहा हूँ," उस आदमी ने कहा। लेकिन यह कहने के बावजूद कि उसका बात करने का मन नहीं है, वह बोलता रहा।

"ठीक है प्यारेलाल... तुम मुझे यहाँ फ्लैट ढूँढ़ने में मदद क्यों नहीं करते? फिर मैं

Machine Translated by Google

"मुझे उस बेईमान संतोष से निपटने की भी ज़रूरत नहीं पड़ेगी," मैंने उसे एक बड़ा चारा दिया।

उस आदमी का चेहरा तुरंत चमक उठा। "साहब, मेरा नाम चमन लाल है। एक-दो दिन में वापस आकर मुझसे यहीं मिलिए। किसी से भी चमन लाल के बारे में पूछ लीजिए, वे आपको तुरंत बता देंगे।"

चमन लाल की आशाओं का बगीचा खिलने लगा था।

"ठीक है, चमन लाल। मैं फिर मिलूँगा," मैंने उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाते हुए कहा। उसने हाथ ऐसे पकड़ा जैसे विरोधी टीम का कोई फ़ील्डर तेंदुलकर का शॉट पकड़ने के लिए डाइव लगा रहा हो।

जैसे ही मैं अपनी गाड़ी की तरफ मुड़ा, एक औरत की तेज़ चीख़ ने मुझे रोक दिया। तीन-चार औरतें उसे दिलासा देने की कोशिश कर रही थीं, लेकिन उसकी करुण पुकार पूरे इलाके में गूँज रही थी। वह शायद रुस्तम की कोई रिश्तेदार थी।

मैं रुस्तम के घर की ओर मुड़ा, जहां तक उसके कार्यालय वाले रास्ते से ही पहुंचा जा सकता था।

शोक में डूबी महिला उसकी बहन थी। अपने भाई की मौत पर उसका विलाप वहाँ मौजूद सभी लोगों की आँखों में आँसू लाने के लिए काफ़ी था।

"उस घटिया औरत ने मेरे भाई को मार डाला! मैंने उसे उस वेश्या से तलाक लेने की चेतावनी दी थी... वो किसी दिन उसे मरवा ही देगी!" रुस्तम की बहन की बातें सुनकर मेरे कान खड़े हो गए और मेरा दिमाग़ तेज़ी से दौड़ने लगा।

मैं उसके करीब पहुँच गया था। उसके साथ आई महिलाएँ उसे फ्लैट के अंदर ले जाने की कोशिश कर रही थीं।

उसकी बातों से साफ़ ज़ाहिर था कि वो रुस्तम की पत्नी निधि की बात कर रही थी। क्या रुस्तम को भी निधि से अपनी जान का ख़तरा था? जिस फ्लैट में रुस्तम की लाश मिली थी, वो उसका ही था और निधि के लिए वहाँ पहुँचना सबसे आसान था।

मैं इंस्पेक्टर नर सिंह से एक महत्वपूर्ण सवाल पूछना भूल गया था - रुस्तम की लाश उस फ्लैट में होने की सूचना पुलिस को किसने दी थी?

रुस्तम कैसा आदमी था? उसके घर के अंदर और बाहर, दोनों जगह दुश्मन थे। दुनिया में कम से कम एक जगह तो ऐसी होनी चाहिए जहाँ वो चैन से बैठ सके। लेकिन रुस्तम को तो बस बिस्तर पर ही सुकून मिलता था।

Machine Translated by Google

जिन महिलाओं के साथ वह रातें बिताता था।

मैं एक मरे हुए आदमी के बारे में क्यों सोच रहा था? लेकिन मुझे सोचना ही था—मेरे पेशे की वजह से मुझे कभी-कभी मरे हुए आदमी को भी संदिग्ध मानना पड़ता था।

मैं उन महिलाओं के पीछे-पीछे फ्लैट में चला गया। उस समय मेरा एकमात्र उद्देश्य रुस्तम की बहन से अकेले में बात करना था। हालाँकि, आने वाले रिश्तेदारों की संख्या बढ़ती जा रही थी। मुझे एहसास हुआ कि उससे अकेले में मिलने की मेरी संभावना बहुत कम है।

मैंने अपनी योजना थोड़ी बदली और फ्लैट से बाहर निकल गया।

Machine Translated by Google

अध्याय 4

संतोष के साथ बैठक

उस वक़्त मेरा मन संतोष से मिलने का कर रहा था। अब तक तो उसे रुस्तम की मौत की खबर मिल ही गई होगी। मैंने चमनलाल से लिया हुआ कार्ड निकाला और संतोष के नाम के आगे लिखा नंबर डायल किया।

बिना किसी देरी के फोन की घंटी बजी और संतोष ने तुरंत जवाब दिया।

"क्या यह संतोष बोल रहा है?" मैंने उसकी आवाज सुनते ही पूछा।

"हाँ, यह संतोष है। यह कौन है?" उसने उत्तर दिया।

"मेरा नाम अनुज है। अब तक आपने रुस्तम की मौत के बारे में सुना होगा," मैंने बातचीत को खुला छोड़ते हुए कहा।

"हाँ, सुना है। पर तुम मुझसे रुस्तम के बारे में ऐसे क्यों पूछ रहे हो?"
और आप वास्तव में कौन हैं? संतोष ने थोड़ा चिढ़कर पूछा।

"देखिए, मृतक की विधवा को शक है कि आप उसके पति की हत्या में शामिल थे। मैं एक निजी जासूस हूँ, और मैंने आपको इस मामले की सच्चाई जानने के लिए बुलाया है," मैंने साफ़ और सीधे तौर पर कहा।

"ओह, वह औरत तो पूरी तरह से षडयंत्रकारी है! अगर उसे मुझ पर शक भी है तो क्या फ़र्क़ पड़ता है? वह तो हमेशा से ही अपने पति को मरवाने के लिए तैयार रहती थी!"
संतोष ने बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी भड़ास निकाल दी। मेरे जैसे अन्वेषक के लिए ऐसे बेबाक शब्द अक्सर मूल्यवान साबित होते हैं।

उन्होंने कहा, ''कौन किसे मरवाना चाहता था, इसका खुलासा जांच के बाद ही होगा।
अभी तो बताओ, हम कब मिल सकते हैं? मैंने सीधे पूछा।

"कल सुबह दस बजे के बाद मुझसे मिलो। आने से पहले फ़ोन कर देना," संतोष ने बिना किसी हिचकिचाहट के सहमति दे दी।

"ठीक है संतोष। मैं तुम्हें कल फोन करूंगा," मैंने कहा और फोन काट दिया।

पहले रुस्तम की बहन, और अब संतोष—दोनों ही निधि पर रुस्तम की हत्या में हाथ होने का आरोप लगा रही थीं। अब, निधि के बारे में कोई राय बनाने से पहले मुझे उसकी पृष्ठभूमि भी खंगालनी थी।

फ़िलहाल, मैंने घर लौटना ही बेहतर समझा। कुछ रहस्यों की ज़रूरत है

Machine Translated by Google

मैं गहरी सोच में डूबा हुआ था, और मुझे अपने दिमाग को काम पर लगाने के लिए एक कड़क कप कॉफ़ी की सख्त ज़रूरत थी। मैंने अपनी कार स्टार्ट की और अपने अपार्टमेंट की ओर चल पड़ा।

जैसे ही मैं अपने फ्लैट पर पहुँचा, मेरा फ़ोन ज़ोरदार सायरन की आवाज़ के साथ बज उठा, जो मैंने पुलिस कॉल के लिए सेट किया था। मैंने स्क्रीन पर नज़र डाली - नरसिंह का नाम चमक रहा था।

"अरे जासूस, तुम कहाँ गायब हो गए? जब से गए हो, वापस नहीं लौटे!" मेरे जवाब देते ही नरसिंह बोला।

"वहाँ ज़्यादा देर रुकने का कोई मतलब नहीं था। मैं मामले के बारे में और जानकारी इकट्ठा करने रुस्तम के दफ़्तर गया था। लेकिन वहाँ मुझे सिर्फ़ उसकी मौत पर शोक मनाती भीड़ मिली—इसलिए मैं किसी से बात नहीं कर सका," मैंने एक ही बार में सब कुछ समझा दिया।

नरसिंह ने स्पष्ट सत्य बताया, "मृतक अनुज इलाके का जाना-माना आदमी था, इसलिए उसके घर लोगों का जमावड़ा होना स्वाभाविक था। इसके अलावा, अमीर लोगों के पास हमेशा ढेरों रिश्तेदार होते हैं।"

"हाँ, तुम सही कह रहे हो! वैसे, तुम्हें कैसे पता चला कि रुस्तम की लाश उस फ्लैट में मिली थी?" मैंने वह सवाल पूछा जो मुझे परेशान कर रहा था।

नरसिंह ने मुझे बताया, "हमें 100 नंबर पर कॉल आया। उनकी पत्नी के तथाकथित भाई ने इसकी सूचना दी।"

"उसे कैसे पता चला कि रुस्तम की लाश उस फ्लैट में है? कुछ देर पहले तो वे पुलिस स्टेशन में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराने गए थे," मैंने जिज्ञासा जताई।

नरसिंह ने बताया, "मैंने भी उनसे यही पूछा था। उन्होंने बताया कि वे फ्लैट की सफाई करने गए थे और कमरे में रुस्तम का शव मिला। शव देखकर उन्होंने तुरंत पुलिस को फोन किया।"

"क्या यह अजीब नहीं लगता कि एक महिला जिसका पति एक सप्ताह से लापता था, अचानक उस फ्लैट की सफाई करने लगी जो आमतौर पर बंद रहता था?" मेरे शब्दों के बाद दूसरी तरफ थोड़ी देर के लिए सन्नाटा छा गया।

नरसिंह ने जवाब दिया, "तुम्हारी बात सही है, अनुज। लेकिन रुस्तम का हफ़्तों तक गायब रहना उनके लिए सामान्य बात थी। वह अक्सर घर से गायब हो जाता था और खुद ही वापस आ जाता था।"

"लेकिन यह केवल वह तस्वीर है जो उन दो तथाकथित भाई-बहनों ने चित्रित की है

Machine Translated by Google

"हम। हमने किसी और से इसकी पुष्टि नहीं की है कि क्या रुस्तम सचमुच इस तरह गायब हुआ था और फिर खुद ही वापस आ गया था," मैंने जवाब दिया।

"हम इसकी जांच करेंगे! हम आगे जांच करेंगे। मुझे अब भी लगता है कि निधि ही इसके पीछे की मास्टरमाइंड है," नरसिंह ने कहा, और एक निष्कर्ष निकाला जिस पर मैं अभी तक निश्चित नहीं था।

"कुछ भी हो सकता है, मेरे दोस्त। फ़िलहाल, चलो हम दोनों अपने काम पर ध्यान केंद्रित करते हैं। और मैं तुम्हें बता दूँ कि मेहता साहब यह सोचकर ग़लत थे कि यह मामला किसी पहाड़े जितना आसान होगा," मैंने नरसिंह से कहा।

"देखते हैं रिपोर्ट क्या बताती है। हमने अभी तक असली जाँच शुरू भी नहीं की है। ठीक है, कल मिलते हैं। शुभ रात्रि," नरसिंह ने फ़ोन काट दिया।

मैंने अपना फोन बिस्तर पर फेंक दिया और कॉफी बनाने के लिए रसोई में चला गया।

अगले दिन, मैं संतोष के सामने बैठा था। वह अपने बिज़नेस पार्टनर रुस्तम की उम्र का ही था। उसके बाल आधे सफ़ेद थे, और रुस्तम जहाँ गोरा था, वहीं संतोष सांवला था—इतना सांवला कि मरहूम शायर राहत इंदौरी जैसा दिखता था।

"रुस्तम के साथ तुम्हारे झगड़े का कारण क्या था?" मैंने पूछा, क्योंकि मैं छोटी-मोटी बातों में समय बर्बाद नहीं करना चाहता था।

संतोष ने बताया, "यह एक प्रॉपर्टी डील का मामला था। रुस्तम बेईमान हो गया था। उसने मुझे बिना बताए लगभग पाँच लाख रुपए अलग रख लिए। उसका राज़ तब खुला जब हम भुगतान की प्रक्रिया पूरी कर रहे थे।"

मैंने आगे पूछा, "झगड़ा इतना बढ़ गया कि आप दोनों ने पिस्तौल निकाल लीं और एक-दूसरे को जान से मारने की धमकी देने लगे।"

"उसने पिस्तौल निकाली, मैंने नहीं। मैंने जीवन में कभी पिस्तौल नहीं तानी।"
संतोष ने निधि के पहले के बयान का खंडन किया।

"लेकिन गवाहों का कहना है कि आप दोनों ने एक-दूसरे पर बंदूकें तान दी थीं।"
मैंने उसके चेहरे को गौर से देखते हुए कहा।

"तुम्हें ये किसने बताया? निधि? वो औरत तकिये के नीचे बंदूक रखकर सोती है! उसे हमेशा डर रहता है कि कहीं रुस्तम बीच रास्ते में उसका गला न घोंट दे।"

Machine Translated by Google

संतोष ने एक नई जानकारी का खुलासा करते हुए बताया, "रात में ऐसा हुआ था।"

"लगता है आप निधि के बारे में बहुत कुछ जानते हैं - यहाँ तक कि उसके बेडरूम के बारे में भी," मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

संतोष ने अपना बचाव करते हुए कहा, "रुस्तम जब भी नशे में होता था तो मुझे बताता था।"

मैंने पूछा, "उसने तुम्हें अपनी पत्नी के बारे में और क्या बताया?" संतोष एक पल के लिए झिझका, लेकिन जल्दी ही अपने आप पर काबू पा लिया।

"उनके सारे झगड़ों की जड़ निधि का वह तथाकथित भाई था,"
संतोष थोड़ा सा झुक गया।

"तुम्हारा मतलब विक्रम है?" मुझे उसका नाम याद आया।

"तुम्हें भी उसके बारे में पता है?" संतोष थोड़ा हैरान हुआ।

"सब कुछ जानना मेरा काम है," मैंने शांत भाव से उत्तर दिया।

संतोष ने धीरे से कहा, "रुस्तम और निधि के बिगड़ते रिश्ते की असली वजह विक्रम ही है।"

"लेकिन विक्रम तो उसका सच्चा भाई है। वह उनके झगड़े का कारण कैसे हो सकता है?"

"कसम भाई? मेरा पैर! ये तो बस उनके नाज़ायज़ रिश्ते को छुपाने की एक चाल है। एक बार रुस्तम ने उन्हें उसी फ़्लैट में रंगे हाथों पकड़ लिया था जहाँ उसकी लाश मिली थी," संतोष ने अनजाने में एक बड़ा राज़ खोल दिया।

"लेकिन रुस्तम को मारने के पीछे भी तो तुम्हारे पास एक वजह थी—उसने तुमसे पाँच लाख रुपये ठगे थे। इससे तुम्हें यह सोचने पर मजबूर होना पड़ेगा कि उसने तुम्हें पहले कितनी बार धोखा दिया होगा," मैंने उसकी प्रतिक्रिया जानने की कोशिश की।

"लेकिन यह मेरे लिए उसे मारने का कोई ठोस कारण नहीं है। हमारे धंधे में, ये विश्वासघात तो होते ही रहते हैं। अगर मैं हर विश्वासघात के लिए हत्याएँ करने लगूँ, तो अब तक पाँच-सात लोगों की हत्या कर चुका होता। दूसरों के पास रुस्तम को मारने के लिए मुझसे भी बड़े कारण थे," संतोष ने और भी संदिग्धों की ओर इशारा किया।

मैंने पूछा, "और कौन रुस्तम को मरवाना चाहता था?"

"जैसे-जैसे तुम गहराई से खोजोगे, जासूस, असली अपराधी सामने आने लगेंगे

Machine Translated by Google

"खुद को। लेकिन आप मुझ पर शक करके अपना समय बर्बाद कर रहे हैं—मुझमें किसी को मारने की हिम्मत नहीं है," संतोष ने कहा।

"हालांकि आप कथित तौर पर हत्या का हथियार अपने पास रखते हैं?" मैंने उसे चुनौती दी।

"यह झूठी सूचना है। आप अभी मेरी और मेरे घर की तलाशी ले सकते हैं," उन्होंने आत्मविश्वास से कहा।

"ठीक है संतोष। अगर हथियार का इस्तेमाल होता, तो मैं पूरी कानूनी तलाशी लेता। लेकिन इस बार हत्यारे ने अलग ही तरीका अपनाया। अगर तुम्हें कुछ और याद आए, तो मुझे फ़ोन करना," मैंने जाने से पहले उसे अपना कार्ड देते हुए कहा।

जैसे ही मैं बाहर निकला, संतोष ने मुझे पीछे से पुकारा, "निधि और उसके 'भाई' विक्रम पर नज़र रखो। हो सकता है कि तुम्हें हत्यारे का पता तुम्हारे अनुमान से भी पहले लग जाए।"

Machine Translated by Google

अध्याय 5

रुस्तम की अंतिम विदाई

संतोष की बातों से एक बात साफ़ हो गई—निधि ने पुलिस को उस फ्लैट में जाने की वजह झूठ बताई थी। असल में, वह उसका और विक्रम का एक गुप्त ठिकाना था। कल वे वहाँ मिलने गए थे, लेकिन वहाँ उन्हें रुस्तम की बेजान लाश मिली। घबराहट में उन्होंने एक नई कहानी गढ़ी और पुलिस के सामने पेश कर दी।

अब, निधि की बजाय विक्रम को अपने पाले में लाना ज़्यादा ज़रूरी था, क्योंकि मैं उससे पहले ही बात कर चुका था। वह ऐसी नहीं थी जो आसानी से अपनी बात मान ले या शब्दों के जाल में फँस जाए।

मैंने सबसे पहले नर सिंह को फोन करके रुस्तम के शव के बारे में जानकारी लेने का निर्णय लिया।
पूरा दिन उनके अंतिम संस्कार में बीत जाएगा, यानी मुझे निधि से कुछ दिनों तक बात करने का मौका नहीं मिलेगा। लेकिन विक्रम—मैं उससे जल्दी बात कर सकता था। जैसे ही मैंने नर सिंह का नंबर डायल किया, उसने तुरंत जवाब दिया।

"अनुज, अगर ज़रूरी हो, तो जल्दी बोलो। मैं अभी एसीपी साहब के पास हूँ," उन्होंने अपनी व्यस्तता ज़ाहिर करते हुए कहा।

"मुझे बस यह जानना है कि क्या रुस्तम का शव पोस्टमार्टम के बाद उसके परिवार को सौंप दिया गया है,"
मैंने सीधे पूछा.

"यह दोपहर 2 बजे तक सौंप दिया जाएगा। पोस्टमार्टम अभी चल रहा है," उन्होंने जवाब दिया।

यह सुनकर मैंने फ़ोन रख दिया। विक्रम का घर पर मिलना तो दूर की बात थी—शायद वह पोस्टमार्टम हाउस के बाहर इंतज़ार कर रहा होगा। मैंने घड़ी देखी; अभी दोपहर भी नहीं हुई थी। सबसे अच्छा विकल्प नेताजी सुभाष प्लेस स्थित अपने दफ़्तर जाना था। दोपहर के खाने के बाद, मैं विक्रम से मिल सकता था।

मैंने अपनी गाड़ी ब्रिटानिया चौक की तरफ मोड़ दी। रुस्तम का ऑफिस भी उसी रास्ते पर था, और जैसे ही मैं वहाँ से गुज़रा, मैंने देखा कि बाहर एक बड़ी भीड़ जमा है, जो उसकी मौत पर शोक मना रही है। यह तो होना ही था। मैंने भीड़ पर एक नज़र डाली और फिर अपने ऑफिस की तरफ़ बढ़ गया।

"परम पूज्य! कभी-कभी, कृपया अपने बेचारे कर्मचारियों को अपने ठिकाने के बारे में बताएँ ताकि हम आपकी महिला प्रशंसकों को बता सकें कि आपको कहाँ ढूँढना है,"

Machine Translated by Google

रागिनी ने मुझे देखते ही चुटकी ली।

मुझे नहीं पता था कि मैं किस तरह का बॉस हूं, लेकिन मेरे कर्मचारी मुझे चिढ़ाने का कोई मौका नहीं छोड़ते थे।

"ओह, तो तुम उन्हें नहीं बता पाए कि मैं कहाँ हूँ? क्या इसीलिए वे सब मुझे ढूँढ़ने ऑफिस आए हैं? जाकर बाहर देखो; ज़रूर कोई लंबी बात होगी, मैंने जवाब दिया।"
कतार,

"नहीं साहब! ये भीड़ आज के अख़बार में आपकी शादी का विज्ञापन देखकर यहाँ आई है," उसने झट से जवाब दिया।

“अगर मैं शादी कर लूं तो ऑफिस में बैठा ये भूत हमेशा के लिए कुंवारा ही रह जाएगा।”
मैं मुस्कुराया.

रागिनी ने नाराज़गी जताते हुए पूछा, "अगर आप शादी कर लेंगे तो मैं अविवाहित कैसे रहूंगी?"

"तो, तुम मानते हो कि तुम ही भूत हो?" मैं मुस्कुराया।

"नहीं! आपने ऑफिस में भूत होने की बात कही थी, और मैं यहाँ अकेली हूँ," उसने घबराकर जवाब दिया।

"मैंने कहा 'भूत'। मैंने कभी नहीं कहा कि तुम हो। अगर कोई खुद को भूत समझ ले, तो क्या इसमें मेरी गलती है?" मैंने मज़ाक करते हुए कहा।

"अगर मैं सचमुच भूत होती, तो मैं तुमसे इतनी कसकर चिपक जाती कि कोई ओझा भी नहीं चिपक पाता," उसने जवाब दिया। "अगर मैं सचमुच भूत होती, तो मैं तुमसे इतनी कसकर चिपक जाती कि कोई ओझा ...

"आगे बढ़ो! तुम्हें कौन रोक रहा है?" मैंने अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कुराकर कहा।

"नरेस! फेविकोल की एक शीशी लाओ। चलो इसे दिखाते हैं कि असल में चिपकना क्या होता है," उसने हमारे ऑफिस असिस्टेंट को आवाज़ दी।

"मैडम, मैं सर के लिए चाय बना रहा था। मैं फेविकोल बाद में ले आऊँगा," नरेश ने हँसते हुए उनकी बात टाल दी।

जैसे ही मैं विजयी भाव से अपने केबिन में गया, रागिनी ने उसे एक घातक निगाह से देखा।
आज, काफी समय बाद पहली बार, वो मेरे पीछे अंदर नहीं आई। शायद वो अपना बदला लेने की योजना बना रही थी। तभी नरेश दो कप चाय लेकर अंदर आया, और रागिनी भी अपनी योजनाएँ दरकिनार करते हुए अंदर चली आई।

"उस मामले में क्या हुआ? वही जिस पर तुमने कल दांव लगाया था?" उसने पूछा।

Machine Translated by Google

"मैं अभी भी इस पर काम कर रहा हूँ। अभी-अभी जाँच करके लौटा हूँ। कई संदिग्ध हैं; यह मामला काफ़ी पेचीदा लग रहा है," मैंने चाय की चुस्की लेते हुए जवाब दिया।

"मुझे यकीन है कि आपके इंस्पेक्टर दोस्त को पहले से ही इस मामले की जटिलता का अंदाजा था, इसीलिए उसने आपको इसकी जांच करने के लिए उकसाया," उसने सुझाव दिया।

"नहीं, केस मिलते ही उन्होंने मुझे फ़ोन किया था। उन्होंने अभी तक कोई राय भी नहीं बनाई थी," मैंने स्पष्ट किया.

“क्या इस मामले में आपको मेरी और आपके मुखबिर की ज़रूरत पड़ेगी?” उसने पूछा।

"बिल्कुल! क्या मैं तुम दोनों के बिना कोई केस सुलझा सकता हूँ? ज़रूरत पड़ने पर मैं तुम्हें फ़ोन करूँगा," मैंने उसे आश्वासन दिया.

"अरे नहीं! मैंने तो ग़लत समय पर चाय पी ली। मैं तो यहाँ लंच के लिए आया था।"
मुझे अचानक एहसास हुआ.

"कोई बात नहीं! जब तक तुम्हारा लंच आएगा, तब तक चाय पच जाएगी," उसने मज़ाक में कहा।

"या इससे भी बेहतर, अपना घर का बना खाना मुझे दे दो और अपने लिए भी खाना मँगवा लो। मुझे घर का बना खाना मुश्किल से ही नसीब होता है।" मैंने विनती की.

"तुम कभी नियमित रूप से ऑफिस नहीं आते। वरना मैं तुम्हारे लिए भी खाना लाती।" उसने शिकायत की।

"बस आज के लिए, प्लीज़? अगर तुम रोज़ खाना लाओगे, तो मुझे आदत हो जाएगी, और एक दिन ये आदत तुम्हारे लिए बोझ बन जाएगी," मैंने तर्क किया.

"तो, क्या आपको लगता है कि मैं आपको खाना खिलाना बोझ समझूंगी?" उसने पूछा, उसकी आवाज़ थोड़ी कांप रही थी।

"नहीं, मेरा वो मतलब नहीं था! परेशान मत हो। बात बस इतनी है कि मैं रोज़ ऑफिस नहीं आता। अगर तुम खाना लेकर आओ और मैं न आऊँ, तो वो बर्बाद हो जाएगा।"
मैने समझाया.

लेकिन उसने मेरे स्पष्टीकरण का इंतज़ार नहीं किया। वह चली गई, अपना लंचबॉक्स उठाया, मेरे सामने रखा और नरेश को अपने लिए खाना लाने भेज दिया। मेरे केबिन में छाई खामोशी ने पुष्टि कर दी कि वह सचमुच परेशान थी। आमतौर पर, वह इतनी शांत कभी नहीं रहती।

दोपहर के भोजन के बाद, मैं रुस्तम के घर की ओर चल पड़ा। मेरा लक्ष्य उससे बात करना था।

Machine Translated by Google

विक्रम—इस मामले की अगली अहम कड़ी। अगर विक्रम और निधि के बीच कोई आपसी मनमुटाव था, तो हत्या का सबसे बड़ा कारण यही हो सकता था। लेकिन मैं उनसे उनके रिश्ते के बारे में सीधे तौर पर नहीं पूछ सकता था। उनसे भिड़ने से पहले मुझे ठोस सबूत चाहिए थे।

मैं विचारों में डूबा हुआ रुस्तम के घर पहुँचा। उसका पार्थिव शरीर आ चुका था, और चारों तरफ मातमी चीखें गूंज रही थीं। मैंने अपनी गाड़ी थोड़ी दूर खड़ी की और भीड़ पर नज़र डालने लगा। मैं विक्रम को ढूँढ रहा था—और मनोहर को भी, जो शहर का गप्पबाज़ था। उसके जैसे लोग अक्सर काम आते थे।

मैंने विक्रम को लोगों से घिरा हुआ देखा। वह मुझसे पहले दो बार मिल चुका था, इसलिए उससे संपर्क करना मुश्किल नहीं था। उसे अब भी लगता था कि मैं पुलिसवाला हूँ, क्योंकि न तो उसे और न ही निधि को पता था कि मैं एक प्राइवेट जासूस हूँ। उनका यह अंदाज़ा मेरे लिए फायदेमंद था।

हालाँकि, उस समय सब लोग रुस्तम के शव को श्मशान ले जाने की तैयारी में व्यस्त थे। विक्रम जल्दी से घर के अंदर चला गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे चला गया।

अंदर, मैंने रुस्तम की बहन को देखा—वही औरत जिसने एक दिन पहले निधि पर अपने भाई की हत्या का आरोप लगाया था। अब, वह एक कोने में चुपचाप बैठी थी, मानो उसके आँसू सूख गए हों। मैं उसके पास गया। बात करने के लिए यह सही जगह या समय नहीं था, लेकिन ऐसे पल मुझे बहुत पसंद आते हैं।

मैंने पूछा, “क्या आप रुस्तम की बहन हैं?”

उसने आंसू भरी आंखों से मेरी ओर देखा और सिर हिलाया।

"मुझे रुस्तम की हत्या के बारे में आपसे बात करनी है। मुझे पता है कि यह सही समय या जगह नहीं है, लेकिन मुझे यकीन है कि आप चाहते हैं कि उसके हत्यारे जल्द से जल्द पकड़े जाएँ,"
मैंने सावधानी से कहा.

“तुम कौन हो?” उसने पूछा.

"मेरा नाम अनुज है। मैं तुम्हारे भाई के हत्यारों को पकड़ने की कोशिश कर रहा हूँ।"
मैंने अस्पष्टता से उत्तर दिया.

"ओह! तो तुम पुलिस में हो?" उसने अपनी मोटी पंजाबी लहजे में पूछा।

"ऐसा कुछ, " मैं मुस्कराया।

Machine Translated by Google

"सुनो बेटा, मैं यहाँ बात नहीं कर सकती। अपना नंबर दो, मैं बाद में तुम्हें फ़ोन करूँगी," उसने कहा।

मैंने उसे अपना कार्ड दिया और उसने झट से ले लिया। बिना कुछ कहे, मैं बाहर निकल गया। औरतें श्मशान घाट जा चुकी थीं। निधि और विक्रम की बातचीत देखने का मौका मैं अभी के लिए गँवा चुका था।

Machine Translated by Google

अध्याय 6

मेरे पसंदीदा प्यारेलाल

मैं पास ही एक चाय की दुकान पर बैठ गया और श्मशान घाट से लोगों के लौटने का इंतज़ार करने लगा। मैंने चायवाले से एक कप चाय बनाने को कहा।

"भाई, क्या कोई बड़ा आदमी गुज़र गया था? शवयात्रा के पीछे काफ़ी भीड़ थी," मैंने चायवाले से पूछा, रुस्तम का पड़ोसी होने के नाते उसकी राय जानने की उम्मीद में। उसने मुझे एक नज़र देखा। अगर किसी मोहल्ले के बारे में सब कुछ जानना हो, तो किसी स्थानीय नाई की दुकान या सड़क किनारे किसी चाय की दुकान पर जाइए। बस बातचीत शुरू करनी होती है, और मैं वो कर चुका था।

"साहब, मरे हुओं की बुराई करना ठीक नहीं है, लेकिन आजकल दिल्ली में दो चीज़ें बहुत कीमती हैं - ज़मीन और चालाकी। और इस आदमी के पास दोनों ही चीज़ें बहुतायत में थीं," चायवाले ने बड़े ही आकर्षक अंदाज़ में कहा।

"तो इसीलिए उसके पीछे इतनी बड़ी भीड़ थी," मैंने उसकी ओर दिलचस्पी से देखते हुए कहा।

"जी हाँ, सर। आजकल तो ऐसे ही लोग भीड़ खींचते हैं। अगर आप या मैं मर भी जाएँ, तो कोई आवारा कुत्ता भी हमारी तरफ़ नहीं देखेगा। सब पैसे का खेल है," उसने कहा, उसके लहजे में अमीरों के प्रति उसकी नाराज़गी साफ़ दिखाई दे रही थी।

"तुमने उसे चालाक क्यों कहा?" मैंने बातचीत को आगे बढ़ाया।

"सर, मैंने आपको पहले कभी नहीं देखा," चाय विक्रेता ने आसपास का माहौल देखते हुए सावधानी से पूछा।

"मैं बस वहाँ से गुज़र रहा था और इतनी भीड़ देखी, तो रुक गया। फिर तुम्हारी चाय की दुकान पर नज़र पड़ी और एक कप चाय पीने का मन हुआ। इसीलिए मैं यहाँ आया हूँ," मैंने जवाब दिया। मेरी बातों से उसे राहत मिली। अब जब उसे पता चल गया था कि मैं एक अजनबी हूँ, तो वह खुलकर अपनी बात कह सकता था।

"सर, वे कहते हैं कि किसी को मृतकों के बारे में बुरा नहीं बोलना चाहिए, लेकिन मृत्यु किसी के गलत कामों को सही में नहीं बदल देती," उन्होंने मेरी ओर पुष्टि के लिए देखते हुए कहा।

"तो आप यह कहना चाहते हैं कि मृतक अच्छा व्यक्ति नहीं था?" मैंने उससे आँखें मिलाते हुए पूछा।

Machine Translated by Google

"बिल्कुल नहीं, साहब। वो सबसे घटिया आदमी था जो मैंने कभी देखा। वो लोगों को घर के सपने दिखाकर फुसलाता था, लेकिन उन्हें किराया देने लायक भी नहीं छोड़ता था," बोलते हुए उसकी आवाज़ धीमी हो गई। उसकी तीखी नज़रें आसपास के माहौल को घूर रही थीं।

"फिर भी, उनके अंतिम संस्कार में इतनी बड़ी भीड़ कैसे जुटी?" मैंने जिज्ञासा व्यक्त करते हुए पूछा।

"हर कोई सच नहीं जानता, सर। लोग झुंड के पीछे चलते हैं। मेरी दुकान यहीं है; मैं उन्हें विदाई देने नहीं गया था," उन्होंने मुझे चाय का कप देते हुए कहा।

"क्या उसने बहुत से लोगों को धोखा दिया? उनके पैसे ले लिए और उन्हें उनके घर नहीं दिए?" रुस्तम के काले पक्ष में मेरी दिलचस्पी बढ़ गई थी।

"कई लोगों ने, साहब! कुछ लोग तो उसे अदालत में भी ले गए, लेकिन कहावत है: 'कौन बड़ा है, बेशर्म आदमी या भगवान?' ऐसे बेशर्म इंसान को कोई छू भी नहीं सकता," उसने कड़वाहट से कहा।

"प्यारेलाल, तुम बहुत अच्छी चाय बनाते हो। मुझे एक और कप दो," मैंने कहा। मुझे अभी बहुत कुछ सीखना था।

"सर, मैं वर्षों से चाय बना रहा हूं; इसीलिए मैं अभी भी यहां हूं," उसने गर्व से कहा।

मैंने पूछा, "आप यहां कब से हैं?"

"बारह साल से, साहब। यह चाय की दुकान मेरी आजीविका रही है।"

"मुझे बताओ, उसने लोगों को कैसे धोखा दिया?" मैं अपने मुख्य प्रश्न पर लौट आया।

"साहब, उसके जैसे लोग बड़े चालाक होते हैं। और लोग खुशी-खुशी उनके जाल में फँस जाते हैं। नीमड़ी कॉलोनी के श्यामलाल को ही ले लीजिए - इस आदमी ने उससे पच्चीस लाख रुपए ऐंठ लिए। बेचारा उसके पीछे भाग-भागकर थक गया, पर रुस्तम ने एक पैसा भी नहीं लौटाया," प्यारेलाल ने एक और राज़ खोला।

"पच्चीस लाख बहुत बड़ी रकम है प्यारेलाल। इतने पैसों के लिए कोई किसी की जान भी ले सकता है," मैंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा।

"कुछ लोग करते हैं, महोदय। लेकिन उस बेचारे आदमी को दो बेटियों की देखभाल करनी थी।"
अगर उसने रुस्तम को मार दिया होता, तो उसकी बेटियों की देखभाल कौन करता?

Machine Translated by Google

जबकि वह जेल में सड़ रहा था?" प्यारेलाल ने सहानुभूति से भरी आवाज़ में कहा।

"मैं भी नीमड़ी कॉलोनी में रहता हूँ। आपने श्यामलाल का ज़िक्र किया था—क्या आप उनके बारे में ज़्यादा जानते हैं?" मैंने उम्मीद भरी नज़रों से पूछा।

"अरे साहब! अगर आप वहाँ रहते हैं तो आपको पुराना प्राधिकरण कार्यालय ज़रूर पता होगा।"
श्यामलाल की बगल में ही एक छोटी सी किराने की दुकान है। आप उनसे कभी भी पूछ सकते हैं। मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ," उन्होंने कहा, यह सोचकर कि मुझे उनकी बात पर शक है।

"प्यारेलाल, तुम मुझसे झूठ क्यों बोलोगे?" मैंने उसे आश्वस्त किया।

"लेकिन सर, मैंने आपको अपना नाम कभी नहीं बताया। आपको कैसे पता चला?" उसने आश्चर्य से पूछा।

मैं मुस्कुराया। यह दूसरी बार था जब मेरे प्यारेलाल कहने के बाद कोई सचमुच का प्यारेलाल निकला था।

"किसी ने मुझे बताया कि केशवपुरम में रुस्तम के प्रॉपर्टी ऑफिस के बगल में एक मशहूर चाय की दुकान है। उन्होंने कहा, 'एक बार प्यारेलाल की चाय चख लो, और तुम अपनी बीवी की चाय हमेशा के लिए भूल जाओगे।'" मैंने उनकी खुशामद की।

"वाह, सर! क्या मेरी दुकान मशहूर है?" वह गर्व से चमक उठा।

"बिल्कुल, प्यारेलाल। तुम सच में बहुत अच्छी चाय बनाते हो। इसीलिए मैंने एक बार में दो कप पी लिए।" मैंने उसे पैसे दिए।

प्यारेलाल ने चापलूसी भरे लहजे में कहा, "सर, जब भी आप आसपास हों, चाय के लिए ज़रूर रुकिएगा। मुझे आपसे बात करके बहुत अच्छा लगा।"

"ज़रूर आऊँगा, प्यारेलाल। इन दिनों मुझे इस इलाके में कुछ काम है, इसलिए मैं बार-बार आता रहूँगा," मैंने उसकी उम्मीदें जगाते हुए कहा। वह मुझे तब तक देखता रहा जब तक मैं उसकी नज़रों से ओझल नहीं हो गया।

प्यारेलाल से बात करने पर रुस्तम का एक नया रूप सामने आया। वो सिर्फ़ प्रॉपर्टी डीलर ही नहीं था, बल्कि एक धोखेबाज़ भी था जो लोगों को ठगता था और अपने प्रभाव से उन्हें चुप करा देता था। ये एक ख़तरनाक पहलू था। पता नहीं उसने कितने लोगों के साथ अन्याय किया होगा? शायद उसके किसी शिकार ने ही उसकी हत्या की होगी।

मेरे सामने एक नई संभावना खुल गई थी।

इंसान का असली रूप अक्सर उसके पड़ोसियों के ज़रिए ही सामने आता है। मेरा हमेशा से यही अनुभव रहा है। अब तक मैंने रुस्तम के बारे में दो लोगों से बात की थी—एक उसका भक्त था और दूसरा उसका कट्टर आलोचक। लेकिन

Machine Translated by Google

प्यारेलाल की बातें ज़्यादा तार्किक लगीं। ऐसा लग रहा था कि मुझे उनकी दुकान पर कई बार और चाय पीनी पड़ेगी।

मैंने गाड़ी स्टार्ट की और पुलिस स्टेशन की तरफ़ मुड़ गया। चाय के बाद, मेरा मन नर सिंह के साथ कॉफ़ी पीने का हुआ।

जब तक मैं थाने पहुँचा, एसीपी साहब जा चुके थे। मैंने नर सिंह को उनके दफ़्तर में पाया। उन्होंने मेरी तरफ़ देखा और मुस्कुराकर मुझे बैठने का इशारा किया।

"बताइए अनुज बाबू, आप कहां से आ रहे हैं?" नरसिंह ने सहजता से पूछा।

"अभी रुस्तम के घर से आया हूँ, पर समय की बर्बादी हो गई। वे सब श्मशान घाट पर हैं," मैंने जवाब दिया।

"हाँ, उन्हें लगभग दो बजे शव मिला। वे अब वहाँ होंगे। मैं शाम को उनसे पूछताछ करने जाऊँगा," उन्होंने फ़ाइल पलटते हुए कहा।

मैंने पूछा, "इस मामले पर अब तक आपकी क्या राय है?"

"हमने अभी तक पूछताछ शुरू नहीं की है। अभी तक हम सिर्फ़ क़ानूनी प्रक्रियाओं का पालन कर रहे हैं। पुलिस का काम करने का तरीक़ा एक निजी जासूस के काम करने के तरीक़े से बहुत अलग है," नर सिंह ने मेरी तरफ़ देखते हुए कहा।

"बिल्कुल! पुलिस किसी को भी पीट सकती है और उससे अपराध कबूल करवा सकती है। एक जासूस के पास ऐसी कोई शक्ति नहीं होती," मैंने उसे मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

"यह शक्ति हमें कानून द्वारा दी गई है। हमें इसका प्रयोग क्यों नहीं करना चाहिए?"
नर सिंह ने जवाब दिया।

"बिल्कुल मेरी बात! इसीलिए हमारे तरीके अलग हैं," मैंने प्रतिवाद किया।

"तो, अब तक तुम्हें क्या मिला?" नर सिंह ने पूछा।

"अभी किसी निष्कर्ष पर मत पहुँचो! रुस्तम के दोस्तों से ज़्यादा दुश्मन थे," मैंने चेतावनी दी।

नर सिंह ने मुझे बताया, "हम उनके फ्लैट के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज का भी विश्लेषण कर रहे हैं।"

"अच्छा। फिर मैं चलता हूँ। कल मिलते हैं। तब तक रिपोर्ट आ जानी चाहिए," मैंने उससे हाथ मिलाते हुए कहा।

Machine Translated by Google

मैं स्टेशन से निकलकर श्यामलाल से मिलने नीमड़ी कॉलोनी की ओर चल पड़ा। मैं जानना चाहता था कि उसने रुस्तम को इतनी बड़ी रकम क्यों दी थी।

Machine Translated by Google

अध्याय 7

श्यामलाल से मिलें

मुझे श्यामलाल की दुकान ढूँढ़ने में ज़्यादा देर नहीं लगी। बाज़ार में लगी कई छोटी-छोटी दुकानों में से एक थी वो। श्यामलाल अपनी दुकान पर मौजूद थे, एक बुज़ुर्ग, शायद साठ साल के। उनके चेहरे पर मुश्किल ज़िंदगी के निशान थे, वक़्त और हालात से हारे हुए इंसान के। अगर रुस्तम ने वाकई ऐसे ही किसी इंसान को धोखा दिया था, तो ये बहुत बड़ी नाइंसाफ़ी थी।

"क्या आप श्यामलाल हैं?" मैंने उसकी दुकान पर पहुँचते हुए पूछा।

"हाँ, मैं हूँ। लेकिन आप कौन हैं? मैं आपको नहीं पहचानता," श्यामलाल ने अपने चश्मे के पीछे से मेरी ओर देखा।

"अब तक तो आपने सुन ही लिया होगा कि रुस्तम की हत्या हो गई है। मुझे इस बारे में आपसे बात करनी है," मैंने साफ़-साफ़ कहा।

"हाँ, मुझे पता है कि कल किसी ने उसे मार डाला... लेकिन तुम मुझसे इस बारे में बात क्यों करना चाहते हो?" उसने सवालिया निगाहों से मेरी तरफ देखा।

मैंने जवाब दिया, "उस आदमी ने आपके 25 लाख रुपये ले लिए। इसलिए उसकी हत्या के बारे में आपसे बात करना ज़रूरी है।"

यह सुनकर श्यामलाल को गहरा सदमा लगा।

"आपको यह कैसे पता? हमने कभी किसी को नहीं बताया कि रुस्तम ने हमारे 25 लाख रुपये ले लिए," उन्होंने अभी भी हैरान होकर पूछा।

"ऐसी बातें जानना मेरा काम है, श्यामलाल जी। अब बताइए, आख़िर आपने वो पैसे उससे कैसे गँवा दिए?" मैंने तीखी नज़रों से पूछा।

"लेकिन पहले मुझे बताओ कि तुम कौन हो और तुम्हें ये सब कैसे पता?" वह पहले मेरे बारे में अपनी शंकाएँ दूर करने में ज़्यादा रुचि रखता था।

"मेरा नाम अनुज है। मैं एक निजी जासूस हूँ, रुस्तम की हत्या की जाँच कर रहा हूँ और उसके हत्यारे को ढूँढने की कोशिश कर रहा हूँ। इसीलिए मैं यहाँ हूँ," मैंने स्पष्ट किया।

श्यामलाल को भले ही मेरा पेशा पूरी तरह से समझ में न आया हो, लेकिन वह "हत्या" और "जांच" जैसे शब्दों को जरूर समझता था, जो उसके लिए यह अनुमान लगाने के लिए पर्याप्त था कि मैं किसी प्रकार का पुलिस अधिकारी हूं।

Machine Translated by Google

"सर, यह तो बहुत समय पहले की बात है... हम उस धोखाधड़ी और रुस्तम के बारे में तो भूल ही चुके थे," उसने थकी हुई आवाज़ में कहा।

"25 लाख कोई छोटी रकम नहीं है, श्यामलाल जी। आपके चेहरे से तो ऐसा लग रहा है कि ये आपकी ज़िंदगी भर की कमाई है। आप इसे कैसे भूल गए?" मैंने अविश्वास से पूछा।

"आप सही कह रहे हैं, सर। कोई भी नहीं भूल सकता। लेकिन जब कोई व्यक्ति हर चौखट पर न्याय की भीख मांगता है और कोई उसकी बात सुनने को तैयार नहीं होता, तो वह लाचार होकर सब कुछ भूलने को मजबूर हो जाता है," उनके शब्दों ने मुझे कुछ पल के लिए अवाक कर दिया।

"आखिर हुआ क्या था?" मैंने पूरी कहानी सुनने की इच्छा से पूछा।

"साहब, पहले अंदर आकर आराम से बैठिए। मैं आपके लिए कुछ पीने को लाता हूँ," श्यामलाल अपनी कहानी सुनाने को तैयार था। मैं मान गया और उसके पीछे उसकी दुकान के अंदर चला गया। उसने किसी को चाय के लिए आवाज़ लगाई।

"तीन साल पहले, मुझे अखबार में रोहिणी में बिक्री के लिए उपलब्ध एक फ्लैट के बारे में एक पर्चा मिला। आप जानते ही हैं कि रोहिणी में प्रॉपर्टी कितनी कीमती होती है। मैंने हाल ही में अपने गाँव में कुछ ज़मीन बेची थी और प्रॉपर्टी में निवेश करना चाहता था। जब मैंने पर्चा पर दिए गए नंबर पर कॉल किया, तो वह नंबर रुस्तम का निकला। उसने मुझे केशवपुरम स्थित अपने ऑफिस में बुलाया और रोहिणी के एक दूरदराज इलाके में एक फ्लैट दिखाया, जो मुझे पसंद आ गया।" उसने फिर चाय के लिए आवाज़ लगाई।

"चाय आएगी, आप जारी रखें," मैंने अधीरता से उससे आग्रह किया।

"सौदा 25 लाख रुपये में तय हुआ। एक महीने के अंदर ही मैंने पूरा भुगतान कर दिया और दस्तावेज़ भी मिल गए। मेरा पूरा परिवार बहुत खुश था।"
हमने फ्लैट लॉक किया और घर वापस आ गए," श्यामलाल ने कहा, लेकिन इससे पहले कि वह आगे कुछ कह पाते, लगभग बीस साल की एक युवा लड़की एक ट्रे में दो कप चाय लेकर आ गई। उसने उससे ट्रे ले ली और उसके जाने से पहले मुझे एक कप चाय दी।

"आपका घर पास ही होगा; ऐसा लगता है कि आपने चाय वहीं से ली है," मैंने टिप्पणी की।

"जी हाँ, सर। मेरा घर दुकान के ठीक पीछे है। मेरी आवाज़ वहाँ तक आसानी से पहुँच जाती है," उसने हल्की सी मुस्कान के साथ जवाब दिया।

"फिर क्या हुआ?" मैंने चाय का घूँट लेते हुए पूछा।

"लगभग बीस दिन बाद, मैं फ्लैट देखने गया और पाया कि अन्य लोग भी फ्लैट में थे।

Machine Translated by Google

वहाँ रहने वाले लोग। मेरा दिल बैठ गया। मैंने उनसे पूछा कि वे कौन हैं, और उन्होंने मुझे बताया कि वे फ्लैट के असली मालिक हैं। वे पहले किसी दूसरे शहर में तैनात थे, इसलिए फ्लैट खाली था। अब जब वे दिल्ली वापस आ गए हैं, तो वे यहाँ रहने आ गए हैं," घटना को याद करते हुए उनकी आवाज़ काँप रही थी।

"रुस्तम ने मुझे जाली दस्तावेज़ों का इस्तेमाल करके फ्लैट बेचा था। असली मालिकों के पास सभी असली कागज़ात थे," उसने बेबस नज़रों से मेरी तरफ़ देखते हुए कहा।

इस तरह की संपत्ति धोखाधड़ी आम बात थी, लेकिन श्यामलाल जैसे व्यक्ति के लिए यह एक विनाशकारी झटका था।

"फिर तुमने क्या किया? तुमने रुस्तम का सामना किया होगा?" मैंने पूछा।

"मैंने किया। और मैं दो साल तक उसके पास जाता रहा। मैंने सब कुछ गँवा दिया था। घर पर सिर्फ़ मैं और मेरी दो बेटियाँ थीं। अगर मैं मुकदमा लड़ने के लिए दुकान छोड़ देता, तो दुकान भी बंद हो जाती और हम भूखे मर जाते। अनगिनत झगड़े हुए, कोर्ट-कचहरी हुई, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। आख़िरकार, मैंने हार मान ली और अपनी दुकान चलाने पर ध्यान केंद्रित किया। अब बताइए, साहब, मेरे जैसा आदमी, जो अपना पैसा भी नहीं वसूल पाया, वो कैसे हत्या कर सकता है?" उसकी आवाज़ में हार का भाव था।

"लेकिन अगर तुम्हारे पास उसे मारने की ताकत होती, तो क्या तुम ऐसा करते?" मैंने उससे एक असामान्य सवाल पूछा।

"हाँ, मैं ऐसा करता... अगर बाद में मेरे बच्चों की देखभाल करने वाला कोई होता," उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के जवाब दिया।

"तुम दो साल तक उससे झगड़ती रही। क्या तुम्हें कभी पता चला कि उसने दूसरों को भी धोखा दिया है?" मैंने सवाल जारी रखा।

"साहब, रुस्तम का पूरा धंधा धोखाधड़ी पर टिका था। उसने लोगों को नकली संपत्तियाँ बेचीं और बिना कुछ दिए उनका पैसा हड़प लिया।"
श्यामलाल ने एक क्षण सोचने के बाद कहा।

"ऐसा आदमी ज़्यादा दिन तक खुलेआम अपना धंधा नहीं चला सकता था। उसे किसी न किसी मोड़ पर भागना ही पड़ता। हर कोई तुम्हारी तरह लाचार नहीं होता,"
मैंने इंगित किया।

"वह एक बेशर्म आदमी था, सर। उसे अपनी प्रतिष्ठा की परवाह नहीं थी।"
उनके कार्यालय में शायद ही कोई दिन ऐसा गुजरता था जब कोई झगड़ा या विवाद न होता हो।"
श्यामलाल ने एक चौंकाने वाला तथ्य उजागर किया।

Machine Translated by Google

रुस्तम का व्यक्तित्व मेरे लिए अब भी एक रहस्य था। उसकी पत्नी उसे एक व्यभिचारी के रूप में देखती थी। उसके पड़ोसी उसे एक ठग के रूप में जानते थे। फिर भी, वह बिना किसी नतीजे के, लोगों को धोखा देते हुए, इतना खुलेआम काम करता था। उसके जैसे आदमी के खिलाफ पुलिस थाने में कई शिकायतें दर्ज होनी चाहिए थीं। लेकिन इंस्पेक्टर नर सिंह की प्रतिक्रिया से ऐसा लग रहा था जैसे वह रुस्तम का नाम पहली बार सुन रहा हो।

"ठीक है, श्यामलाल जी, अगर आपको रुस्तम के बारे में कुछ और याद आए, तो मुझे इस नंबर पर फ़ोन कर दीजिएगा। ज़रूरत पड़ने पर मैं आपसे संपर्क करूँगा," मैंने उन्हें अपना कार्ड देते हुए कहा। उन्होंने अनिच्छा से कार्ड लिया, शायद किसी हत्या के मामले में फँसना नहीं चाहते थे।

मैं उसकी दुकान से निकला और अपनी घड़ी देखी। शाम के 7 बज चुके थे। अब अपने घर वापस जाने का समय हो गया था।

अगले दिन, मैं अंततः विक्रम से मिल ही गया...

Machine Translated by Google

अध्याय 8

क्लियोपेट्रा, जीवित ताजमहल

गुरप्रीत उर्फ पम्मी का फ्लैट ढूँढ़ने में ज़्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ी। मैंने शाही अंदाज़ वाली डोरबेल बजाई... घंटी की आवाज़ अंदर गूँजी... कुछ ही पल बाद दरवाज़ा खुला... और मैं एकदम दंग रह गया।

दरवाज़ा खोलने वाली महिला बेहद खूबसूरत थी। अगर रुस्तम उसके जाल में फँस जाता, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। अगर वह क्लिंटन के दफ़्तर में होती, तो ख़ुद क्लिंटन भी उसके जाल में फँस जाते। आपका विनम्र कथावाचक वहाँ खड़ा इस क्लियोपेट्रा जैसी जादूगरनी को देखता रह गया।

शायद उसे मेरे जैसे मर्दों के ऐसे व्यवहार की आदत हो गई थी, इसलिए वो बस मुझे देखकर हल्की सी मुस्कुराई। लेकिन जब मेरी नज़रें नहीं हटीं, तो उसे अपनी खामोशी तोड़नी पड़ी।

"घूरना बंद करो? अब बताओ तुम कौन हो और तुमने घंटी क्यों बजाई," उसने पूछा, उसकी आवाज मंदिर की घंटी जैसी मधुर थी।

उसकी आवाज़ ने मुझे अचानक मेरी तंद्रा से बाहर निकाला, "मैं रुस्तम के बारे में बात करना चाहती थी।"

रुस्तम का नाम सुनते ही उसके गुलाबी रंग में हल्का सा परिवर्तन आ गया, लेकिन इससे उसकी अलौकिक सुंदरता में कोई कमी नहीं आई।

"आप कौन हैं?" मंदिर की घंटी फिर बजी।

"मैं अनुज हूँ," मैंने अभी भी मंत्रमुग्ध होकर जवाब दिया। आमतौर पर मैं एक ही साँस में अपना परिचय दे देता था, लेकिन इस समय मैं मुश्किल से अपना नाम बोल पा रहा था।

"अनुज कौन?" उसके निष्कलंक चेहरे पर चिंता की एक झलक उभर आई, जो इतनी सुन्दरता के साथ अन्याय था।

"मैं एक निजी जासूस हूँ। मुझे लगता है आपने रुस्तम की हत्या के बारे में सुना होगा।"
मैं आपसे इस बारे में कुछ प्रश्न पूछने आया हूँ।" अंततः मैं उसके मोहजाल से मुक्त होने और अपने वास्तविक उद्देश्य पर लौटने में सफल हो गया था।

"मैं आमतौर पर लोगों को अंदर नहीं आने देती... लेकिन आप अंदर आ सकते हैं।" उसने ऐसे कहा जैसे वह मुझ पर कोई बड़ा एहसान कर रही हो।

Machine Translated by Google

मैं इस दिव्य सौंदर्य के स्वप्नलोक में कदम रख चुका था।

"बैठो," दिव्य प्राणी ने एक बार फिर अपने मंदिर की घंटी बजाई।

मैं आज्ञाकारी होकर वहीं बैठ गया जहाँ उसने इशारा किया था।

"अब बताओ, रुस्तम के बारे में क्या पूछना चाहती हो?" उसने अपनी मोहक निगाहें मुझ पर गड़ा दीं।

"तुम रुस्तम को कब से जानती हो?" मैंने अपना पहला सवाल उससे पूछा।

"मैंने कब कहा कि मैं उसे जानती हूँ?" उसने तुरंत मेरे प्रश्न को टाल दिया।

"तो शायद वह तुम्हें जानता था?" मैंने सहजता से जवाब दिया।

"आह, अब तुम सही बोल रही हो," उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, मानो उसके दाँतों में मोती हों। मैं सोच रहा था कि भगवान ने ऐसी कौन सी दिव्य कार्यशाला छिपा रखी होगी जहाँ उन्होंने ऐसी उत्कृष्ट कृति बनाई हो, और उसे किसी दुर्लभ अवकाश पर जीवंत कर दिया हो।

"मुझे रुस्तम के साथ अपने रिश्ते के बारे में बताओ," मैंने उसकी सुंदरता के आकर्षण को झटकते हुए पूछा।

"उस बदमाश से मेरा क्या रिश्ता हो सकता है? उसने मेरे दस लाख निगल लिए और मर गया!" उसकी बात सुनकर मेरा सिर घूम गया।
रुस्तम यहाँ भी अपना जादू चला रहा था। क्या आदमी है!

"तो क्या उसने तुम्हें भी ठगा?" मैंने उसे गौर से देखते हुए पूछा।

"हाँ! वह बदमाश सिर्फ़ मीठी-मीठी बातों पर ही बच गया। उसने मुझे एक ऐसे प्रोजेक्ट में दस लाख रुपये लगाने का लालच दिया जो कभी अस्तित्व में ही नहीं था!"

पम्मी—यह यकीन करना मुश्किल था कि इतनी साधारण सी नाम वाली महिला का नाम इतनी असाधारण महिला था। उसका नाम क्लियोपेट्रा या लेडी डायना होना चाहिए था। कोई भी भारतीय नाम उसकी खूबसूरती के साथ न्याय नहीं कर सकता था।

"तुम उसकी चाल में कैसे फंस गए?" मैंने फिर पूछा।

"उसकी योजना अचूक थी। उसने छह महीने में मेरे पैसे दोगुने करने का वादा किया था। सरकार ने एक नई राजमार्ग परियोजना की घोषणा की थी, और उसने मुझे उस जगह के पास ज़मीन में निवेश करने के लिए राज़ी कर लिया। उसने दावा किया कि निर्माण शुरू होते ही ज़मीन की कीमत आसमान छू जाएगी।"

Machine Translated by Google

जैसे ही वह बोल रही थी, दूसरों के सपने चुराने वाली महिला अपने ही सपने में खोई हुई लग रही थी।

"और फिर?" मेरी आवाज़ ने उसे वास्तविकता में वापस ला दिया।

"फिर क्या? उस समय हाईवे प्रोजेक्ट की खबर हर जगह थी। मैंने उस पर यकीन कर लिया। और तो और, उसका आभामंडल इतना प्रभावशाली था कि कोई भी उसकी बात पर तुरंत यकीन कर लेता। इसलिए, मैंने उसे दस लाख रुपए दे दिए।" उसने अपने मंदिर की घंटी को थोड़ी देर आराम दिया।

"और फिर?" अगर मेरा बस चले, तो मैं सारा दिन वहीं बैठकर उसे बोलते हुए देख सकता हूँ। हर खूबसूरत औरत जानती है कि उसका मर्दों पर क्या असर होता है, और वो मन ही मन इसका आनंद भी लेती है।

"फिर सरकार बदल गई, और हाईवे प्रोजेक्ट ठंडे बस्ते में चला गया। मुझे तो यह भी नहीं पता कि रुस्तम ने वह ज़मीन कभी खरीदी भी या नहीं। उसने मुझे कभी कोई कागज़ नहीं दिखाए। मुझे बस इतना पता है कि मेरे दस लाख कभी वापस नहीं आए।" उसके आखिरी शब्द अब मंदिर की घंटियों जैसे नहीं लग रहे थे—वे किसी अंतिम संस्कार के गीत जैसे शोकपूर्ण थे।

"क्या तुमने कभी उससे अपने पैसे वापस मांगे?" मैंने आगे पूछा।

"कई बार! लेकिन वो कमीना मुझे नए-नए सपने दिखाता रहा—मेरा पैसा कहीं और लगाने का वादा करता रहा। और वक़्त यूँ ही गुज़रता रहा।" वो अपने ग़म के गहरे सागर में डूबती चली गई, और इस दिव्य सुंदरी को उसके ग़म से उबारना मेरा फ़र्ज़ था।

"कमाल है! तुम्हें देखकर तो कोई भी तुम्हें अपनी पूरी दौलत दे देता, पर उस मूर्ख ने तुम्हें लूटना ही बेहतर समझा!" मैंने पहली बार उसके पक्ष में बात की।

उसने चमकती आँखों से मेरी तरफ देखा, और उसके होठों पर एक ऐसी मुस्कान थी जो दुनिया को हिला देने वाली थी। उसकी मुस्कान ने उस कमरे की हर चीज़ में जान डाल दी।

"आपको क्या लगता है कि कोई मुझे अपना पूरा भाग्य देने को क्यों तैयार होगा?"

हर औरत अपनी खूबसूरती जानती है, फिर भी उसे मर्दों के मुँह से सुनना अच्छा लगता है। और चूँकि तुम्हारी विनम्र कथावाचक का जन्म ही सुंदरता का गुणगान करने के लिए हुआ था, इसलिए मुझे उसकी चाहत पूरी करने में कोई हिचकिचाहट नहीं हुई।

Machine Translated by Google

"क्या आपके दर्पण ने कभी आपको स्वयं से परिचित नहीं कराया?" अंततः मैंने अपने वास्तविक स्वरूप को स्वीकार कर लिया।

"आईने को भूल जाओ! मैं तुम्हारी ईमानदार राय सुनना चाहती हूँ," उसने नशीली आँखों से मेरी ओर देखते हुए ज़ोर दिया।

उस पल मुझे लगा कि अगर उसने रुस्तम की हत्या की होती, तो मैं ख़ुशी-ख़ुशी इल्ज़ाम अपने ऊपर ले लेता, चाहे इसके लिए मुझे फाँसी पर ही क्यों न झूलना पड़े। लेकिन अभी तक, उसके दोषी होने का कोई संकेत नहीं था। दरअसल, वह रुस्तम की साज़िशों का एक और शिकार लग रही थी।

"मुझे सच-सच बताओ - क्या तुम अपने दस लाख के लिए रुस्तम को मार देते?" मैंने पूछा, मुझे नहीं पता था कि मुझे इतना लापरवाह क्यों होना पड़ा।

"क्या मैं सच बताऊं?" उसने मेरी ओर एक तीखी नज़र से देखा।

"सौ प्रतिशत," मैंने उसे आश्वस्त किया।

"अगर किस्मत ने मेरे भाग्य में एक भी हत्या लिखी होती, तो मैं रुस्तम को मारना चुनता!"

उसकी बातें सुनकर मुझे एहसास हुआ—सब रुस्तम को मरवाना चाहते थे। कैसी ज़िंदगी जी रहा था वो?

"लेकिन मैंने सुना है कि आपने रुस्तम को अपने जाल में फंसा लिया है," मैंने उसके मोह से मुक्त होते हुए कहा।

"किस अख़बार ने ये बकवास छापी? मैंने तो कभी पढ़ी ही नहीं! लोग मुझे फँसाने का सपना देखते हैं, न कि मुझे फँसाने का!" उसने नाज़ुक शालीनता से आरोप को खारिज कर दिया।

"रुस्तम के परिवार ने वह अख़बार निकाला था। इसलिए मैं आपसे मिलने के लिए इतना उत्सुक था।"

"तो फिर यह वही मूर्ख विक्रम होगा जो अपना जहर उगल रहा होगा," उसने कहा, मानो उसने अभी-अभी कोई कड़वी चीज निगल ली हो।

तभी, मैंने उसके अपार्टमेंट में कुछ ऐसा देखा जिसने मुझे रुककर हर चीज़ पर दोबारा सोचने पर मजबूर कर दिया। कुछ ऐसा जिसने मेरे विचारों को एक गहरे रहस्य की ओर मोड़ दिया...

Machine Translated by Google

अध्याय 9

पैंटी दुविधा

मैं अब इंस्पेक्टर नर सिंह से मिलने के लिए अपनी गाड़ी थाने की ओर मोड़ चुका था। मेरे ख्याल से, इस मामले में अब तक पुलिस से ज़्यादा लोगों से मेरी मुलाक़ात हो चुकी थी। हालाँकि, बात अभी बातचीत से आगे नहीं बढ़ी थी। इंस्पेक्टर नर सिंह उस समय अपने दफ़्तर में नहीं थे; वे इलाके में गश्त पर गए हुए थे। मैंने सोचा कि उन्हें फ़ोन कर दूँ—ऐसा तो मुझे यहाँ आने से पहले ही कर लेना चाहिए था। शायद उस ख़ूबसूरती का आकर्षण अभी भी मेरे मन में छाया हुआ था।

लेकिन इस वक़्त भी नर सिंह मेरा फ़ोन नहीं उठा रहे थे... शायद वो किसी और झंझट में फँस गए थे। इन पुलिसवालों के हाथ तो सैकड़ों तरह की समस्याओं से भरे हैं। जैसे ही मैं थाने से निकलने ही वाला था कि एक पुलिस जीप परिसर में दाखिल हुई। उसमें से उतरने वाला आदमी कोई और नहीं बल्कि इंस्पेक्टर नर सिंह थे।

"मुझे पता था कि आप स्टेशन पर होंगे, इसलिए मैंने आपका फोन नहीं उठाया," नर सिंह ने अपनी शर्मिंदगी छिपाते हुए मुस्कुराते हुए कहा।

"कोई बात नहीं, महाराज... मैं तो बस आपकी प्रजा हूँ। आप जब चाहें मुझ पर ध्यान दे सकते हैं," मैंने उन्हें हल्के से चिढ़ाया।

"अरे, दो कॉफ़ी ले आओ... हमारे आदरणीय अतिथि हमसे नाराज़ हैं," नर सिंह ने मेरे व्यंग्य को भाँप लिया और उसी तरह जवाब दिया। उन्होंने मेरा हाथ इस तरह पकड़ा कि ऐसा लगा जैसे उन्हें सचमुच मेरी नाराज़गी की चिंता हो और मुझे अपने दफ़्तर ले गए।

नर सिंह ने अपनी कुर्सी पर बैठते हुए कहा, "फोरेंसिक और पोस्टमार्टम रिपोर्ट आ गई हैं।"

"वे क्या कहते हैं?" मैंने उत्सुकता से पूछा।

नर सिंह ने मेरी ओर देखते हुए कहा, "रुस्तम की मौत दम घुटने से हुई... और सबसे आश्चर्य की बात यह है कि उसके शरीर पर कोई निशान नहीं था।"

"उसे तकिये से ज़रूर दबा दिया गया होगा... लाश की हालत भी यही इशारा कर रही थी। रुस्तम की खुली आँखें छत की ओर थीं," मेरा मन अब उस खूबसूरत औरत के जादू से मुक्त हो चुका था।

Machine Translated by Google

"लेकिन शव के पास जो तकिया मिला था, उस पर कोई निशान नहीं था," नर सिंह ने विचारमग्न होकर मेरी ओर देखते हुए कहा।

"सीधी बात है! चूँकि लाश कहीं और से वहाँ लाई गई थी, तो हत्यारा वह तकिया क्यों ले गया जिससे उसने पीड़िता का गला घोंटा था?" मेरे तर्क से नर सिंह अवाक रह गया।

"लेकिन जो पैंटी हमें वहां मिली... उस पर भी कुछ नहीं मिला," नर सिंह ने जोर से सोचा।

"तो शायद वह पैंटी पहले से ही वहां थी... मुझे मत बताना कि वह फ्लैट किसी जाने-माने प्रेमी का अड्डा था," मैंने नर सिंह की ओर देखते हुए मुस्कुराते हुए कहा।

नर सिंह ने स्वीकार किया, "यह भी एक संभावना है... जैसा कि हमने शुरू में संदेह किया था।"

तभी एक कांस्टेबल दो मग कॉफी लेकर आया।

मैंने पूछा, "पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मृत्यु के समय के बारे में क्या लिखा है?"

रिपोर्ट के अनुसार, शव मिलने से 24 घंटे पहले ही उनकी मृत्यु हो गई थी।
नर सिंह ने अपना कॉफी मग उठाते हुए जवाब दिया।

"मतलब, लाश मिलने से एक दिन पहले," मैंने मन ही मन हिसाब लगाया।

"हाँ," नर सिंह ने सिर हिलाकर पुष्टि की।

"क्या तुमने वह पैंटी रुस्तम की पत्नी को दिखाई थी, यह देखने के लिए कि क्या वह उसे पहचानती है?" मैंने नर सिंह से पूछा।

नर सिंह ने कहा, "यह जानते हुए भी कि उसका जवाब 'नहीं' होगा, मैंने फिर भी पूछा।"

"और जवाब था 'नहीं'," मैंने दोहराया।

"हाँ," नर सिंह ने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा।

"मैं उस पैंटी को एक बार फिर देखना चाहता हूँ," मैंने नर सिंह से कहा।

"क्यों? क्या इससे तुम्हें किसी की याद आ गई?" नर सिंह ने मज़ाक किया।

"मैं ऐसी चीज़ों से दूरी बनाए रखता हूँ... मैं कुंवारा हूँ। कौन जाने

Machine Translated by Google

"जब मेरी इज़्ज़त ख़तरे में पड़ सकती है, तब क्या करूँ?" मैंने उसी मज़ाकिया लहजे में जवाब दिया। फिर नर सिंह ने एक सिपाही को बुलाया।

नर सिंह ने आदेश दिया, "जाओ, एसआई दिलबाग को बुलाओ।" कांस्टेबल तुरंत वहाँ से चला गया।

"क्या तुमने निधि और विक्रम से बात की?" मैंने उनसे उनकी पिछली पूछताछ के बारे में पूछा।

"हाँ, लेकिन वे अब भी वही राग अलाप रहे हैं जो पहले अलाप रहे थे," नर सिंह ने निराशा से उत्तर दिया।

मैंने नर सिंह की ओर देखते हुए कहा, "हमारे पास अभी तक उन पर संदेह करने के लिए कोई ठोस सबूत नहीं है।"

"हम सबूत ढूंढ लेंगे... आखिरकार, किसी ने तो उसे मारा ही होगा," नर सिंह ने कहा, अब वह किसी दार्शनिक की तरह गहरी सोच में डूब गया।

"आप सही कह रहे हैं, लेकिन इस मामले में आपका सामना कई लोगों से होगा। पीड़िता का रिकॉर्ड बहुत साफ़ नहीं था," मैंने नर सिंह को चेतावनी दी।

"हाँ! हमें तो यहाँ थाने में उसकी करतूतों की एक फाइल भी मिल गई। उसने कई लोगों को ठगा था, लेकिन पिछले एक साल से वह छिपा हुआ था।"
उसके खिलाफ कोई नई शिकायत नहीं आई थी। इसीलिए, जब उसकी पत्नी गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराने आई, तो मैं उसे तुरंत पहचान नहीं पाया," नर सिंह ने बताया, और मुझे समझ आ गया कि वह रुस्तम को क्यों नहीं जानता था।

"मैं रुस्तम के दो धोखेबाज पीड़ितों से मिल चुका हूँ... और दिलचस्प बात यह है कि हर कोई उसका खून चाहता था,
लेकिन वास्तव में किसी ने उसे नहीं मारा," मैंने नर सिंह से कहा, जो अब बड़ी दिलचस्पी से मेरी ओर देख रहा था।

"भाई, आप इस मामले को 200 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से निपटा रहे हैं... लगता है आप इसे 72 घंटों में सुलझाने की योजना बना रहे हैं!" नर सिंह ने फिर मज़ाक किया।

"अगर हम इसे एक हफ़्ते में भी सुलझा लें, तो इसे चमत्कार ही समझिए। यह मामला बहुत पेचीदगियों से भरा है। फ़ोरेंसिक रिपोर्ट से भी कोई मदद नहीं मिली... मेहता साहब जो दावा कर रहे थे, वह पूरी तरह बेबुनियाद निकला," मैंने नर सिंह की ओर देखते हुए कहा।

तभी एसआई दिलबाग कमरे में दाखिल हुए।

"जी सर...आपने फ़ोन किया था?" दिलबाग़ ने आदरपूर्वक पूछा।

Machine Translated by Google

"हाँ, रुस्तम मामले की रिपोर्ट और सबूत ले आओ," नर सिंह ने आदेश दिया। दिलबाग तुरंत वहाँ से चला गया।

"क्या दिलबाग सिंह इस मामले के जांच अधिकारी हैं?" मैंने नर सिंह से बातचीत करते हुए पूछा।

"हाँ! किसी को तो कागज़ात दुरुस्त रखने होंगे," नर सिंह ने जवाब दिया।
जल्द ही दिलबाग़ हाथ में एक फाइल लेकर वापस आ गया।

"यह लीजिए, सर," उन्होंने फाइल नर सिंह के सामने रखते हुए कहा।

"ठीक है, दिलबाग! तुम जा सकते हो। ज़रूरत पड़ी तो मैं तुम्हें फ़ोन करूँगा," नर सिंह ने उसे जाने दिया।

"यह रही आपकी पैंटी... इसमें अभी भी खुशबू बाकी है," नर सिंह ने पैंटी मेरी ओर सरकाते हुए मज़ाक किया।

"आप इसकी खुशबू का आनंद ले रहे हैं, सर... अब यह आपकी है। मुझे तो बस इसका रंग और डिज़ाइन देखना था," मैंने हल्के-फुल्के अंदाज़ में जवाब दिया।

"ठीक है! मुझे जाना होगा... अभी एक ज़रूरी काम याद आ गया," मैं अचानक उठ गई, जिससे नर सिंह हक्का-बक्का रह गया।

"क्या पैंटी से हत्यारे की गंध आ गई? तुम अचानक क्यों जा रहे हो?" नर सिंह ने हैरानी से पूछा।

"एक आखिरी बात - मृत्यु का सही समय क्या था?" मैंने बाहर निकलने से पहले पूछा।

"शाम 5 से 7 बजे के बीच," नर सिंह ने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया।

उसका जवाब सुनकर मैं तुरंत स्टेशन से बाहर भागा।

Machine Translated by Google

अध्याय 10

पड़ोसियों से पूछताछ

उस वक़्त मैं केशवपुरम में था, ठीक उसी फ्लैट के बाहर जहाँ रुस्तम की लाश मिली थी। पुलिस ने फ्लैट सील कर दिया था, और मैं उस पल के बारे में सोच रहा था जब मैंने पहली बार रुस्तम की लाश देखी थी।

उसकी खुली आँखें छत की ओर घूर रही थीं, जिसका मतलब था कि मौत के वक़्त वह पूरी तरह होश में और जागा हुआ था। अगर किसी ने उसका मुँह बंद करके उसका दम घोंट दिया होता, तो उसे ज़रूर तकलीफ़ होती। उसके पैर सीधे नहीं, बल्कि मुड़े हुए होते। क्योंकि अगर हत्यारा एक ही होता, तो रुस्तम के मुँह और पैरों, दोनों को एक साथ काबू में रखना नामुमकिन होता। इसका मतलब था कि कम से कम दो लोगों ने रुस्तम की हत्या की थी।

अजीब बात यह थी कि जिस कमरे में रुस्तम की लाश मिली थी, उसकी इतनी सफाई की गई थी मानो किसी ने अभी-अभी झाड़ू लगाई हो। फिर भी, आस-पड़ोस के सभी लोगों ने बताया कि फ्लैट ज़्यादातर समय बंद ही रहता था।

हत्यारे ने कोई सबूत नहीं छोड़ा था। न उंगलियों के निशान, न ही किसी तरह का कोई सुराग। अगर रुस्तम किसी औरत को वहाँ भोग-विलास के लिए लाया होता, खासकर अगर वह उसकी पत्नी न हो, तो वह कुछ भोग-विलास की चीज़ें ज़रूर साथ लाया होता। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं मिला—सिवाय एक पैंटी के जो उसी तकिये के नीचे रखी थी जिससे उसका दम घुटा था। उस पैंटी को वहाँ छोड़ने के पीछे हत्यारे का क्या इरादा रहा होगा? हत्या शाम पाँच से सात बजे के बीच हुई थी—ऐसा समय जब यह मोहल्ला कभी सुनसान नहीं होता। यानी अगर रुस्तम पाँच बजे से पहले किसी औरत के साथ यहाँ आया था, तो किसी ने उन्हें ज़रूर देखा होगा। यह नामुमकिन था कि किसी ने उन्हें देखा न हो। और अगर किसी ने उन्हें आते देखा था, तो ज़रूर किसी ने उस औरत को फ्लैट से निकलते भी देखा होगा।

लेकिन पुलिस की जाँच में यह पहलू अभी तक सामने क्यों नहीं आया? हत्या को तीन दिन हो चुके थे, और हत्यारे का कोई सुराग नहीं था। एकमात्र सबूत —वह पैंटी—जासूसी लग रही थी, बस जाँच को गुमराह करने के लिए।

Machine Translated by Google

मेरा अगला कदम स्पष्ट था: मुझे पड़ोस में किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढना था जिसने उस दिन रुस्तम को देखा हो।

मैंने फ्लैट के आस-पास नज़र दौड़ाई और देखा कि बगल वाले फ्लैट के बाहर एक बुजुर्ग महिला कुर्सी पर बैठी हैं। मैं सबसे पहले उनके पास गया। जैसे ही मैं उनके सामने खड़ा हुआ, उन्होंने मेरी तरफ देखा।

"मैडम, क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?" मैंने विनम्रता से कहा।

"क्या बात है, बेटा? बोलो," उसने जिज्ञासा से भरी आँखों से उत्तर दिया।

मैंने कहा, "मैं रुस्तम के बारे में पूछना चाहता था, जो मेरे बगल में रहता था।"

"बेटा, पुलिस हमसे पहले ही पूछताछ कर चुकी है, और हमने उन्हें बताया है कि हमने कुछ नहीं देखा। तुम कौन हो?" पूछताछ शुरू करने से पहले ही उस बुज़ुर्ग महिला ने मेरी उम्मीदें तोड़ दीं।

"मैं गुप्त पुलिस विभाग से हूँ। हमारे साथ साझा की गई कोई भी जानकारी पूरी तरह गोपनीय रखी जाती है, जिसमें मुखबिर की पहचान भी शामिल है," मैंने झांसा देते हुए कहा।

"चाहे आप इसे गुप्त रखें या पोस्टरों पर छापें, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। हमने तो कुछ देखा ही नहीं, तो हम आपको क्या बताएँ?" बुढ़िया बहुत तेज़ थी; उसने दुनिया को इतना देख लिया था कि मेरी चालों में नहीं फँसती थी।

मैंने असहाय भाव से उसकी ओर देखा और एक आखिरी प्रयास करने का निर्णय लिया।

"क्या आप हर दिन ऐसे ही यहाँ बैठते हैं?" मैंने एक अप्रासंगिक प्रश्न पूछा।

उसने थोड़ी झुंझलाहट से मेरी तरफ़ देखा, "हाँ बेटा, मैं रोज़ यहीं बैठती हूँ!"
क्या आपको इस बात से कोई तकलीफ है?"

अब उसके हाव-भाव से साफ़ ज़ाहिर था कि वह मुझ पर बरसने वाली थी।
मुझे।

"क्या आप हर दिन इसी समय यहाँ बैठते हैं?" मैंने उसके बढ़ते गुस्से को अनदेखा करते हुए फिर पूछा।

"हाँ, मैं सारा दिन यहीं बैठती हूँ। यह मेरा घर है—मैं यहाँ दिन-रात, जब चाहूँ बैठ सकती हूँ। तुम कौन होते हो पूछने वाले?" उसने झल्लाकर कहा।

"तो फिर तुम झूठ क्यों बोल रही हो?" मैंने अंततः उसे चुनौती देने का निर्णय लिया।

Machine Translated by Google

"मैंने क्या झूठ बोला है?" उसकी आवाज़ तेज़ होती जा रही थी, और जल्द ही वहाँ भीड़ जमा हो जाएगी।

"क्या आपको पता है कि किसी अपराध या अपराधी के बारे में जानकारी छिपाना क़ानूनी अपराध है?" इस बार, मैंने अपना तुरुप का पत्ता खेला, जो निशाने पर लगा।

"लेकिन मैंने तो किसी भी बात पर झूठ नहीं बोला, तो फिर कानून मेरा क्या कर सकता है?" उसका स्वर थोड़ा नरम हो गया था।

"तुमने कहा था कि तुम सारा दिन यहीं बैठते हो। फिर तुमने रुस्तम को शाम चार बजे एक औरत के साथ फ्लैट में घुसते देखकर क्यों नहीं बताया? अगर यह झूठ नहीं है, तो और क्या है?" मैं अब हावी हो गया था।

"किस दिन की बात कर रही हो?" बुढ़िया आसानी से हार मानने वाली नहीं थी।

"रुस्तम की हत्या से एक दिन पहले," मैंने सख्ती से जवाब दिया।

"लेकिन क्या परसों ही उसकी हत्या नहीं हुई थी? उस दिन मैंने किसी को यहाँ आते नहीं देखा - केवल उसकी पत्नी को एक अन्य व्यक्ति के साथ फ्लैट का ताला खोलते देखा था," उसने खुलासा किया।

उसके उत्तर ने मेरे मन में खतरे की घंटी बजा दी।

"रुस्तम की हत्या परसों नहीं हुई थी—उसकी हत्या तो उससे एक दिन पहले हुई थी। पुलिस को उसकी लाश परसों ही मिली थी। तो रुस्तम ज़रूर उसी दिन यहाँ आया होगा; वरना उसकी लाश फ्लैट में कैसे पहुँची?" मैंने उसे घूरते हुए पूछा।

जवाब देने के बजाय, बूढ़ी औरत घर की ओर मुड़ी और पुकारा, "सविता, बाहर आओ।"

एक तीस वर्षीय महिला, जो एक पारंपरिक भारतीय बहू जैसी दिख रही थी, बाहर आई।

"सविता, क्या हम रुस्तम की लाश मिलने से एक दिन पहले शाम 7 बजे तक यहीं बैठे नहीं थे?" बूढ़ी औरत ने पूछा।

"हाँ, हम काफ़ी देर से यहाँ बैठे थे। क्या हुआ माँजी?"
सविता ने उत्सुकता से मेरी ओर देखा।

Machine Translated by Google

"यह सज्जन पुलिस से हैं। वह जानना चाहते हैं कि क्या हमने उस दिन रुस्तम को किसी के साथ उनके फ्लैट में घुसते देखा था," बुज़ुर्ग महिला ने समझाया।

"नहीं, हमने उसे नहीं देखा। उस शाम मैं अपनी पड़ोसन चाची जी के साथ यहाँ बैठी थी। अगर रुस्तम आता, तो माँजी को पता चल जाता क्योंकि वह हमेशा अपने फ्लैट में घुसने से पहले माँजी को नमस्ते करता था," सविता ने आत्मविश्वास से कहा।

मुझे उसकी बातों पर संदेह करने का कोई कारण नहीं था।

"बहुत-बहुत धन्यवाद, सविता जी। और माँजी, अगर मैंने आपको किसी भी तरह से ठेस पहुँचाई हो, तो कृपया मुझे माफ़ कर दीजिए," मैंने सम्मान में हाथ जोड़ते हुए कहा, और उनके जवाब का इंतज़ार किए बिना वहाँ से चला गया।

उनके बयान ने मेरे इस शक को और पुख्ता कर दिया कि रुस्तम की हत्या कहीं और की गई थी, और उसकी लाश फ्लैट में फेंक दी गई थी। पैंटी इसलिए लगाई गई थी ताकि यह भ्रम पैदा किया जा सके कि वह किसी औरत के साथ था जिसने भागने से पहले उसकी हत्या कर दी थी।

थोड़ा आगे बढ़ने पर मुझे एक कोल्ड ड्रिंक की दुकान दिखाई दी और मैंने एक ड्रिंक लेने का फैसला किया। लगभग बाईस साल का एक युवक काउंटर पर बैठा था।

"आपके पड़ोस में हुई हत्या के बारे में सुना है? मैंने सुना है कि वह एक बड़ा आदमी था," मैंने अपनी ड्रिंक पीते हुए सहजता से बातचीत शुरू की।

"जी हाँ, सर। रुस्तम जी बहुत बड़े आदमी थे। उनका जाना हमारे लिए भी बहुत बड़ी क्षति है," युवक ने आह भरते हुए कहा।

"नुकसान? क्या उस पर तुम्हारा कोई पैसा बकाया था?" मैंने पूछा।

"नहीं साहब। वह भुगतान के मामले में बहुत समय के पाबंद थे। लेकिन जब भी आते थे, कम से कम दो-तीन सौ रुपए का सामान ज़रूर खरीदते थे। अब वह धंधा बंद हो गया है," युवक ने समझाया।

"तो जब भी वह आपसे मिलने आता था, तो आपसे कुछ न कुछ खरीदता था?" मैंने हल्के से पूछा।

"जी हाँ, सर। गोल्ड फ़्लेक सिगरेट का एक पैकेट ज़रूरी था। कभी-कभी शराब के साथ सोडा और स्नैक्स भी।"

"क्या उसने उस दिन कुछ खरीदा था जिस दिन उसकी हत्या हुई थी?" मैंने आगे पूछा।

Machine Translated by Google

"अरे नहीं, सर। हमें उसे देखे हुए एक हफ़्ता हो गया था। हमें उसकी मौत के बारे में उसके बाद ही पता चला।"

"लेकिन अगर उसका शव फ्लैट में मिला था, तो वह यहाँ आया होगा, है ना?" मैंने उसकी परीक्षा ली।

"दिन में नहीं। हो सकता है कि वह रात में हमारी दुकान बंद होने के बाद आया हो।"

उनके जवाब से इसकी पुष्टि हो गई - रुस्तम उस दिन जीवित फ्लैट पर नहीं गया था।

Machine Translated by Google

अध्याय 11

ताजमहल की एक और यात्रा

रुस्तम की हत्या वाले दिन, दो लोगों ने उसके वहाँ होने की संभावना से पूरी तरह इनकार किया था। उनमें से एक ने तो यह जानकारी सिर्फ़ संयोगवश दी थी। लेकिन दोनों ने मेरे इस शक की पुष्टि की कि रुस्तम की हत्या कहीं और की गई थी और उसकी लाश यहाँ रखी गई थी।

उस बुज़ुर्ग महिला के मुताबिक़, जिस दिन लाश मिली थी, उसने निधि को फ्लैट का दरवाज़ा खोलते देखा था। उसने निधि के साथ एक आदमी को भी देखा था, जो शायद उसका प्रेमी विक्रम था। अब, हो सकता है कि चाबियों के दो सेट रहे हों—एक रुस्तम के पास और दूसरा निधि के पास। लेकिन क्या हत्यारे ने वाकई रुस्तम की जेब से चाबी निकाली थी? ताले पर उंगलियों के निशान निधि के ही रहे होंगे।

हत्यारा चाहे जो भी हो, उसने न केवल पुलिस को बेवकूफ बनाया बल्कि मुझे भी सिर खुजाने पर मजबूर कर दिया।

एक बार फिर, मैंने अपनी कार उस ब्रह्माण्ड-स्तरीय सुन्दरी के फ्लैट की ओर मोड़ दी।
कुछ बात मुझे परेशान कर रही थी और मुझे उससे इस बारे में बात करनी थी।
लेकिन असली चुनौती तो यह थी कि मैं इस बारे में बात कैसे करूँ? फिर भी, मैं उससे बात करने का कोई रास्ता ढूँढ़ने वहाँ जा रहा था।

मैंने उस ताजमहल जैसे घर में लगी "जहाँगीरी घंटी" बजाई, जो काफी देर तक बजती रही। दरवाज़ा खुला, लेकिन मुझे हैरानी हुई कि उस खूबसूरत महिला की जगह एक नौकरानी खड़ी थी। उसने मुझे सवालिया निगाहों से देखा।

"किससे मिलना है?" नौकरानी की आवाज़ भी सुरीली थी, शायद अपनी मालकिन से प्रभावित होकर। मैं अपने ही विचार पर थोड़ा मुस्कुराया।

"पम्मी मैडम," मैंने अपनी बात पूरी ही की थी कि मैंने पम्मी को अंदर से आते देखा।

"अच्छा, सुन्दर! क्या तुम पहले कुछ पूछना भूल गए थे, या तुम्हारे आने का कोई और कारण है?"

उसके आते ही नौकरानी चुपचाप चली गई।

Machine Translated by Google

"यही बात है, पम्मी मैडम... मैं कहीं और जाने की योजना बनाता हूं, लेकिन किसी न किसी तरह, मैं हमेशा यहीं पहुंच जाता हूं," मैंने एक फिल्मी गीत की एक पंक्ति आधी गाकर कही।

इस बार, वहाँ कोई घंटियाँ, घड़ियाल या तुरही नहीं थी—बस पम्मी की एक मनमोहक मुस्कान थी। वह मुझे अंदर आने देने के लिए एक तरफ हट गई। मैं उसके पीछे अंदर चला गया, अभी भी उस चीज़ को ढूँढ़ रहा था जिसने मुझे सुबह-सुबह चौंका दिया था।

"आप क्या ढूंढ रहे हैं, जासूस सर?"

इस बार, मैं उसी सोफे पर बैठ गया जिस पर मैं सुबह बैठा था, उसके इशारे का इंतजार किए बिना।

"मैं कुछ भी नहीं ढूंढ रहा हूं... मैं वास्तव में आपको चेतावनी देने आया हूं," मैंने रहस्यमय लहजे में कहा।

"मुझे किस बात के बारे में चेतावनी दो?"

मैंने देखा कि उसके माथे पर हल्की सी चिंता की लकीरें उभर आई थीं।

"विक्रम ने पुलिस को आपके बारे में मेरे साथ साझा किए गए संदेह के बारे में बताया है," मैंने हमारी बातचीत के लिए मंच तैयार किया।

"तो क्या हुआ? मैंने कुछ ग़लत नहीं किया, तो मुझे डर क्यों लग रहा है? अगर कुछ हुआ भी है तो उस आदमी की वजह से मुझे दस लाख रुपए का नुकसान हुआ है!" उसने थोड़े चिढ़े स्वर में जवाब दिया।

"देखो, पुलिस का मानना है कि हत्या में एक महिला शामिल थी क्योंकि उन्हें रुस्तम के शव के पास एक महिला की पैंटी मिली थी। अब जब विक्रम ने तुम पर उंगली उठाई है, तो पुलिस ज़रूर तुम्हारे दरवाज़े पर दस्तक देगी - अगर अभी तक नहीं दी है तो।"

मैं उसकी ओर आँखें गड़ाए उसकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा कर रहा था।

"नहीं, वे अभी तक नहीं आये हैं," उसने थोड़ा चिंतित स्वर में उत्तर दिया।

"अब, मैं तुम्हें बताती हूँ कि मैं पहले क्या ढूँढ रही थी। आज सुबह तुम्हारे घर में जो ब्रा मैंने देखी थी, उसका रंग और डिज़ाइन उसी पैंटी जैसा था जो पुलिस को रुस्तम की लाश के पास मिली थी।"

मैंने अपनी पैनी निगाहें उसके सुन्दर, लाल चेहरे पर गड़ा दीं।

"अरे, छोड़ो भी! जिस कंपनी ने वह सेट बनाया होगा, उसने सिर्फ़ एक ही पीस बनाया होगा और उसे ख़ास तौर पर मुझे ही तोहफ़े में दिया होगा?" पम्मी की मुस्कान थोड़ी फीकी लग रही थी।

Machine Translated by Google

इस बार थोड़ा फीका पड़ गया। यह नज़ारा देखकर मेरा दिल दुख गया।

"नहीं, लेकिन पुलिस दो-प्लस-दो तर्क लागू करेगी - रुस्तम के साथ आपका घनिष्ठ संबंध, और समान अधोवस्त्र, इस मामले में आपकी संलिप्तता के बराबर है।"

"आपको अपनी अलमारी की जांच करनी चाहिए कि क्या ब्रा-पैंटी का सेट अभी भी पूरा है।"

"मुझे कैसे पता चलेगा कि आप किस रंग के सेट की बात कर रहे हैं?"

"मैरून। जाँच करके देखो। अगर तुम्हारी पैंटी गायब है, तो यकीन मानो, तुम बड़ी मुसीबत में हो।"

उसका चेहरा काला पड़ गया। "ठीक है, मैं अभी देखती हूँ।"

जैसे ही वह चलता-फिरता, बोलता हुआ खूबसूरत एफिल टावर मेरी नज़रों से ओझल हुआ, मुझे अचानक पर्दों के पीछे से तेज़ कदमों की आहट सुनाई दी। लेकिन एक पल बाद, मैंने उसे अपनी कल्पना समझकर नकार दिया।

कुछ पल बाद पम्मी लौटी, उसके हाथ में सिर्फ़ मैरून रंग की ब्रा थी। उसके माथे पर चिंता की लकीरें गहरी हो गई थीं।

"यहाँ केवल ब्रा है। मैचिंग पैंटी दराज़ से गायब है।"

मैंने उसके चेहरे का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया।

"आपकी पैंटी अपने आप गायब नहीं हो गई।"

"कसम से, मुझे नहीं पता कि वह कहाँ है! और मैंने उसे रुस्तम के पास तो बिल्कुल नहीं छोड़ा।"

ऐसा लग रहा था जैसे उसकी लालिमा को किसी बुरी नज़र ने शाप दे दिया हो।

"मुझे आपकी बात पर पूरा यकीन है, लेकिन पुलिस को नहीं। 6.5 अरब लोगों में से किसी भी दो लोगों के फिंगरप्रिंट एक जैसे नहीं होते। इसी तरह, रुस्तम जिन दो महिलाओं के साथ जुड़ा था, उनके पास एक ही ब्रांड के एक जैसे अधोवस्त्र होने की संभावना नामुमकिन है।"

उसने हताश होकर मेरी तरफ़ देखा, "तो फिर मुझे क्या करना चाहिए? क्या मुझे यह ब्रा जला देनी चाहिए?"

उसने मेरा हाथ पकड़ लिया, मेरी धड़कनें तेज़ हो गईं। मुझे अब भी यकीन नहीं हो रहा था कि

Machine Translated by Google

ऐसे नाज़ुक हाथ क़त्ल करने में भी सक्षम थे। अगर मुझे इस बात पर यकीन होता, तो मैं ख़ुशी-ख़ुशी उस अपराध का दोष खुद पर ले लेता—क्योंकि मैं एक खूबसूरत औरत को मुसीबत में देखना बर्दाश्त नहीं कर सकता था।

"अगर तुम निर्दोष हो तो डर क्यों रहे हो?"

मैं अनजाने में ही औपचारिक से अनौपचारिक बातचीत पर आ गया था - संभवतः उसके स्पर्श के कारण।

"तुम ही मुझे डरा रहे हो!"

उसने मुझे मनमोहक मासूमियत से देखा।

"तो फिर मुझे बताओ - तुम्हारी पैंटी वहाँ कैसे पहुँची?"

"तुम्हारी कसम, अनुज! मुझे कुछ पता नहीं। मैंने पिछले पंद्रह दिनों से वो सेट नहीं पहना है। ज़रा सोचो—अगर मैं उसे वहीं छोड़ देती, तो क्या सिर्फ़ एक नहीं, दोनों गायब हो जाते?"

उसकी बात सही थी।

"ऐसा लगता है कि किसी ने जानबूझकर आपको फंसाने के लिए अपराध स्थल पर आपका अधोवस्त्र रखा था।"

पम्मी की लालिमा धीरे-धीरे लौट आई, "तुम बिल्कुल सही कह रहे हो, अनुज।
यही तो होगा!

उसने मेरा हाथ और भी ज़ोर से पकड़ लिया। "लेकिन असली सवाल तो यह है कि तुम्हारी पैंटी किसने ली और उसे घटनास्थल पर रख दिया?"

मेरे हाथ पर उसकी पकड़ और भी मज़बूत हो गई। वह अपने हथियार अच्छी तरह जानती थी।
हर खूबसूरत औरत अपनी ताक़त और कौन सा तीर चलाना है, ये अच्छी तरह जानती है। और यकीन मानिए, उसका जादू मुझ पर पूरी तरह से काम कर गया था।

मुझे यह पता लगाना था कि पम्मी को कौन फंसाने की कोशिश कर रहा था।

"क्या यह विक्रम होगा?" वह अचानक बोली। "वह लगभग एक हफ़्ते पहले रुस्तम को ढूँढ़ते हुए मेरे घर आया था!"

"विक्रम को आपकी अलमारी तक कैसे पहुँच मिली?"

"वह कभी बैठा ही नहीं। वह सोफे के पास खड़ा होकर रुस्तम के बारे में चिल्लाता रहा, जबकि मैं उससे बहस करती रही।"

Machine Translated by Google

मैंने पूछा, "क्या उस दिन घर पर कोई और भी था?"

"केवल मैं और मेरी नौकरानी। मैं अकेला रहता हूँ।"

मैंने एक पल सोचा, "क्या ऐसा हो सकता है कि विक्रम आपके घर न आने पर वापस आया हो और उसने आपकी नौकरानी को आपकी पैंटी चुराने के लिए मना लिया हो या धमकाया हो?"

पम्मी का चेहरा पीला पड़ गया। "मुझे कुछ पता नहीं... क्या मैं उसे फ़ोन करूँ ताकि तुम उससे पूछ सको?"

"नहीं। आप उससे सहजता से पूछकर मुझे बताइए।"

मैंने पम्मी को आश्वस्त किया, "अगर तुम निर्दोष हो, तो पुलिस को सब कुछ सच-सच बता दो। सत्य को परेशान किया जा सकता है, लेकिन उसे कभी पराजित नहीं किया जा सकता।"

जैसे ही मैं उसके फ्लैट से बाहर निकला, मुझे बाहर पुलिस जीप की चीख़ सुनाई दी।
इंस्पेक्टर नर सिंह आ चुके थे।

अब मैं देखूंगा कि क्या पम्मी ने पुलिस को सच बताया है जैसा उसने मुझे बताया था।
अगर उसने ऐसा किया, तो मैं उसकी रक्षा करने का अपना मौन वचन निभाऊँगा। अगर नहीं, तो मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि पूरा ब्रह्मांड उसे दोषी साबित करने में लग जाए।

Machine Translated by Google

अध्याय 12

क्लियोपेट्रा का असली चेहरा

अगले दिन, मेरे मुखबिर ने मुझे दोपहर के आसपास अशोक विहार स्थित दीप सिनेमा मार्केट में मिलने के लिए बुलाया। दीप मार्केट पहले दीप सिनेमा हुआ करता था, लेकिन लगभग छत्तीस साल पहले, इस देश में अशांति की आंधी आई और दीप सिनेमा जलकर राख हो गया। बाद के वर्षों में, इसके मालिकों ने इसे एक शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में बदल दिया, और आज, यह अशोक विहार स्थित दीप सिनेमा मार्केट के नाम से जाना जाता है।

अशोक विहार की गलियों से मैं अनजान नहीं था। मेरा पहला हत्याकांड, बंसल हत्याकांड (पढ़ें: ख़तरे में मरा हुआ आदमी), मुझे यहाँ ले आया था। और अब, मैं फिर से उसी मोहल्ले में खड़ा था। थोड़ी देर इंतज़ार करने के बाद, मेरा मुखबिर अपनी बाइक पर मेरी कार के पास आकर रुका।

"गुरु, मुझे आशा है कि आपको ज्यादा देर तक इंतजार नहीं करना पड़ा होगा," उसने मेरी कार के पास अपनी बाइक खड़ी करते हुए कहा।

"बिल्कुल नहीं। मैं तो बस नज़ारा देख रहा था जब आप आ गए," मैंने सहजता से जवाब दिया।

"आओ गुरु! यहाँ देखने लायक क्या है? मैं तुम्हें असली नज़ारा करीब से दिखाता हूँ," उसने शरारत से चमकती आँखों से कहा।

"सुनो, बच्चे। हम यहाँ घूमने नहीं आए हैं। हम यहाँ व्यापार करने आए हैं।"
और जब तक तुम मेरे साथ हो, इसे हर समय ध्यान में रखना," मैंने उसे हल्के से डाँटा। यह बदमाश काम पर रहते हुए भी अपना ध्यान भटकाने वाली चीज़ों से हटा नहीं पाता।

"गुरु, आप तो मामूली सी बात पर भी गुस्सा हो जाते हैं। अगर मेरे सामने कोई मनमोहक दृश्य हो तो मैं क्या करूँ? मेरी आँखें निकाल दूँ?" वह झुंझलाकर बुदबुदाया।

"नहीं, उन्हें मत नोचो। बस उन्हें शुद्ध रखो। तुम जो चाहो सोच सकते हो, लेकिन उसे अपने चेहरे या आँखों पर मत आने दो," मैंने उसे सलाह दी और मुफ्त में कुछ ज्ञान दिया।

"समझ गया गुरु! इसीलिए मैंने आपको अपना गुरु बनाया है। आपको एक होना चाहिए

Machine Translated by Google

"हे विश्व नेता! अब, क्या हम बाहर जा रहे हैं, या आपके पास बताने के लिए और भी ज्ञान है?" उन्होंने नाटकीय ढंग से दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

"पहले अपनी बाइक पास के पुलिस स्टेशन में खड़ी कर दो। वहाँ ज़्यादा सुरक्षित रहेगा। अगर कोई पूछे, तो बस शर्मा जी का नाम ले लेना," मैंने हिदायत दी। बिना कोई तर्क किए, वह कुछ ही कदम दूर पुलिस स्टेशन की तरफ़ तेज़ी से चल पड़ा।

पांच मिनट बाद वह मेरी कार में वापस आ गया, जाने के लिए तैयार।

"गुरु, एक मोड़ लीजिए और कुलाची हंसराज स्कूल के सामने रुक जाइए। यहीं हमारी 'ब्लेड वाली सुंदरी' रहती है," उसने सीट पर बैठते हुए कहा।

जिस हवेली में हमने घंटी बजाई थी, उसका आकार कम से कम पाँच सौ वर्ग गज था। "व्यवसाय" के लिए इतनी महंगी संपत्ति किराए पर लेने का मतलब था कि शो चलाने वाली महिला कोई साधारण महिला नहीं थी—उसके गंभीर संबंध थे।

लगभग बीस या इक्कीस वर्ष का एक युवक ने दरवाज़ा खोला।

"मैडम इतनी सुबह किसी से नहीं मिलतीं," उसने रूखेपन से कहा।

"मेरे प्यारे बेटे, दोपहर के लगभग एक बज रहे हैं। क्या तुम्हें अब भी लगता है कि सुबह हो गई है?" मैंने झट से जवाब दिया।

"यह घर शाम 7 बजे के बाद जागता है। अभी सब सो रहे हैं," उसने उसी लहजे में जवाब दिया।

"यह क्या है, अमेरिका? क्या यहाँ सूरज शाम 7 बजे उगता है?" मैंने मज़ाक किया।

"एक मिनट रुको, गुरु," मेरे मुखबिर ने बीच में ही टोक दिया। उसने उस युवक को एक तरफ़ खींच लिया और उसके कान में कुछ फुसफुसाया। कुछ ही पलों में, उस आदमी ने सहमति में सिर हिलाया और अंदर गायब हो गया। मेरा मुखबिर एक आत्मसंतुष्ट मुस्कान के साथ मेरी ओर मुड़ा। कुछ ही देर में, दरबान वापस आ गया।

"अंदर जा सकते हो। मैडम तुम्हें बुला रही हैं," उसने कहा, मानो उसने अभी-अभी कोई बड़ी रकम गँवाई हो। मेरे मुखबिर ने विजयी भाव से मेरी तरफ़ मुस्कुराया और रास्ता दिखाते हुए आगे बढ़ गया। मैं उसके कदमों के पीछे-पीछे चल पड़ा।

हम एक विशाल हॉल में दाखिल हुए। जैसे ही हम अंदर गए, एक युवती हमारे पास आई और हमें आलीशान सोफ़े पर बैठने का इशारा किया।

"कृपया प्रतीक्षा करें। मैडम शीघ्र ही यहाँ आएंगी," उसने गायब होने से पहले कहा।

Machine Translated by Google

भारी पर्दों के पीछे।

कुछ मिनट बाद मैडम ने शानदार अंदाज़ में प्रवेश किया। उन्हें देखते ही मेरे दिमाग़ में एक गाना बज उठा—
"हज़ारों टुकड़े मेरे दिल के बिखर गए... कुछ यहाँ, कुछ
वहाँ..."

मेरे सामने खड़ी थी मेरी सपनों की रानी, मेरी क्लियोपेट्रा, अजंता-एलोरा की एक जीवंत मूर्ति, मानव रूप में एक ताजमहल। फिर भी, उसके चेहरे पर जो सदमा था, वह उस सदमे के सामने कुछ भी नहीं था जो मुझे उसे यहाँ देखकर महसूस हुआ था।

"अनुज, तुम?" पम्मी की आवाज़, अविश्वास से भरी हुई, अब मंदिर की घंटी की झंकार जैसी नहीं लग रही थी - यह हिमेश रेशमिया की नाक की झंकार जैसी लग रही थी।

"यही सवाल मेरे दिमाग में गूंज रहा है, मैडम - आप, यहाँ?" मैंने उसका सवाल उसी पर उछाल दिया।

"अब जब तुम यहाँ हो, तो छिपाने के लिए कुछ भी नहीं बचा है," पम्मी ने आह भरते हुए कहा और अपनी आवाज धीमी कर ली।

"गुरु, क्या आप उसे जानते हैं?" मेरे मुखबिर ने आँखें फाड़कर मुझे घूरा।

"हाँ। मैं उससे कल ही मिला था - दो बार, उसके घर पर," मैंने समझाया।

"धिक्कार है! उसे ढूंढने की मेरी सारी कोशिशें बेकार गईं," मेरे मुखबिर ने नाराज़ होकर कहा।

"नहीं, मेरे प्यारे प्रशिक्षु। कुछ भी व्यर्थ नहीं जाता। वास्तव में, यहाँ आना एक बड़ी सफलता होगी," मैंने कहा, मेरे शब्द अर्थपूर्ण थे।

"तो फिर उसे यहाँ देखकर आप इतने हैरान क्यों हो गए, गुरु?" यह कमबख्त मुखबिर मेरे दुखते स्थानों को दबाने से बाज नहीं आ रहा था।

मैं चिल्लाना चाहता था,
"लोग जब चाहें नई दुनिया बना लेते हैं...
वे एक ही चेहरे पर हजार चेहरे पहनते हैं।"

लेकिन मैंने खुद को रोका और विषय बदलने का फैसला किया।

"पम्मी जी, आप बैठ क्यों नहीं जातीं? आख़िर ये आपका राज्य है,"
मैंने सोफे की ओर इशारा किया.

Machine Translated by Google

ऐसा लग रहा था जैसे वो मेरे बुलावे का इंतज़ार कर रही थी। वो तुरंत मेरे सामने बैठ गई। तभी वही लड़की नाश्ते का ठेला धकेलती हुई फिर से प्रकट हुई। ज़ाहिर है, मैडम ने सब कुछ बहुत ही शानदार तरीके से व्यवस्थित किया था। कल, अपने घर पर, उन्होंने मुझे एक कप चाय भी नहीं पिलाई थी!

लड़की ने हम सबके लिए अलग-अलग प्लेटों में स्नैक्स परोसे और हमें खुशबूदार कॉफ़ी के गरमागरम मग थमा दिए। जैसे ही मैंने कॉफ़ी मग पर अपनी उंगलियाँ रखीं, मेरा सारा गुस्सा, निराशा और नाराज़गी गायब हो गई। कॉफ़ी मेरा पहला प्यार था—बाकी सब उसके बाद।

मुझे अपना ध्यान केंद्रित रखना था। मैं यहाँ किसी के काम का फ़ैसला करने नहीं आया था; मैं यहाँ एक हत्या का मामला सुलझाने आया था। लेकिन धिक्कार है मेरे इस दिल पर! इसने हमेशा मुझे धोखा दिया।

"कल रात, जब मैं आपके अपार्टमेंट से निकला तो मैंने एक पुलिस जीप को आते सुना।
क्या वे आपसे मिलने आये थे?" मैंने बातचीत शुरू की।

"हाँ, थाने से एक इंस्पेक्टर आया था—उसका नाम नर सिंह था।
वह उसी बात के बारे में पूछ रहा था जिसके बारे में आपने मुझे चेतावनी दी थी," पम्मी ने स्वीकार किया।

मैंने पूछा, "तुमने उससे क्या कहा?"

"मैंने उनसे वही कहा जो मैंने आपसे वादा किया था। फिर उन्होंने फोरेंसिक जाँच के लिए उनका कुछ सामान ले लिया। उन्होंने कहा कि वे नतीजों के बाद इस बारे में आगे बात करेंगे," उसने सच्चाई से जवाब दिया।

"क्या आप जानते हैं कि मरने से पहले रुस्तम किस तरह के संदिग्ध लेन-देन में शामिल था?" मैंने आखिरकार असली सवाल पूछा।

"वह पैसे की पूजा करता था। अगर उसे पैसे मिलते, तो वह श्मशान में लाश से कफ़न भी चुरा लेता," पम्मी ने रुस्तम के बारे में बात करते हुए पहली बार व्यंग्य किया।

"लेकिन वह तो बहुत समय से ऐसे काम कर रहा था। उसे अब क्यों मारा गया?" मैंने ज़ोर देकर पूछा।

"हर व्यक्ति की मृत्यु भाग्य में लिखी होती है। उसका समय पूरा हो गया था, इसलिए वह मर गया," उसने दार्शनिक भाव से कहा।

"रुस्तम की हत्या वाले दिन शाम 4 बजे से 7 बजे के बीच आप कहाँ थे?"

Machine Translated by Google

हत्या कर दी गई?" मैंने पहली बार उसे संदेह से देखा।

उसने तुरंत मेरे हाव-भाव भांप लिए, "क्या तुम मुझ पर शक कर रहे हो?"

"जब तक हत्यारा पकड़ा नहीं जाता, हमें सब पर शक है," मैंने दृढ़ता से कहा। पम्मी असहज होकर हिल गई।

"मैं उस दिन यहीं थी," उसने हिचकिचाते हुए उत्तर दिया।

"कौन सा दिन?" मैंने स्पष्ट रूप से पूछा।

उन्होंने स्पष्ट किया, "उसका शव मिलने से एक दिन पहले।"

मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "लगता है तुम्हें हर छोटी-बड़ी बात पता है। तुम सब पर कड़ी नज़र रख रहे हो, है ना?"

"आपने खुद मुझे चेतावनी दी थी कि मेरी गर्दन खतरे में पड़ सकती है। मैं तो बस जानकारी रख रही हूँ," उसने बचाव करते हुए कहा।

"अगर मुझे आपसे दोबारा मिलना हो तो क्या मुझे आपके घर आना चाहिए या यहीं?" मैंने एक आखिरी सवाल पूछा।

"कहीं भी, कभी भी। आपके लिए हर दरवाज़ा खुला है," उसने धीरे से कहा।

मैं खड़ा हो गया, "ठीक है, पम्मी जी। ज़रूरत पड़ी तो फिर मिलूँगा।"

जब मैं बाहर निकला तो मैं सोचने से खुद को रोक नहीं पाया - "लोगों
के सपने यहां टूट जाते हैं...
क्योंकि हर चेहरे में एक मुखौटा छिपा होता है।"

Machine Translated by Google

अध्याय 13

नौकरानी - एक नई पहेली

वहाँ से मेरा अगला पड़ाव केशवपुरम में पम्मी के घर था। मुझे उस औरत की तह तक पहुँचना था, और घर की नौकरानी के अलावा, इस काम के लिए उससे बेहतर कोई और नहीं था। मैंने अपने मुखबिर को कार में बाहर छोड़ा और पम्मी के फ्लैट की तरफ चल पड़ा। मैंने दरवाजे की घंटी बजाई। दरवाज़ा खुलने में देर होने पर मैंने फिर घंटी बजाई। इस बार कोई दौड़कर दरवाज़ा खोलने आया। कल वाली उसी लड़की ने दरवाज़ा खोला।

जैसे ही उसने मुझे देखा, उसके चेहरे पर कई भाव उभर आये।
उसके चेहरे पर भय और बिखरे बालों से यह स्पष्ट हो रहा था कि वह अंदर ही अंदर किसी बात को लेकर चिंतित थी।

"सर, मैडम घर पर नहीं हैं," वह हकलाते हुए बोली।

"मुझे पता है... मैं तुमसे मिलने आया हूँ। लेकिन तुम इतनी डरी हुई क्यों लग रही हो?" मैंने उसे धीरे से एक तरफ धकेलते हुए अंदर कदम रखते हुए पूछा।

"सर, कृपया मैडम के घर आने पर आइएगा। अगर मैंने उनकी अनुपस्थिति में किसी को अंदर आने दिया, तो वह मुझ पर बहुत गुस्सा होंगी। हो सकता है कि वह मुझे नौकरी से भी निकाल दें," लड़की ने शिकायत की।

"कोई बात नहीं! मैं खुद तुम्हें नौकरी दे दूँगा," मैंने सहजता से कहा और अंदर चला गया।

"सर, आप कहाँ जा रहे हैं? आपको जो भी पूछना है, आप यहीं पूछ सकते हैं," उसने मुझे अपने शब्दों से रोकने की कोशिश की।

"तुम्हारा नाम क्या है, लड़की?" मैंने दृढ़, अधिकारपूर्ण स्वर में पूछा।

"प्रिया, सर," उसने जवाब दिया।

जब तक मैंने उसका नाम पूछा, मैं अंदर वाले कमरे में पहुँच चुका था। अंदर का नज़ारा देखकर तुरंत समझ आ गया कि वह इतनी घबराई हुई क्यों थी और दरवाज़ा खोलने में उसे इतनी देर क्यों लगी थी।

अंदर एक युवक, जिसने सिर्फ अंडरवियर पहना हुआ था, कानों में ईयरफोन लगाए बिस्तर पर लेटा हुआ था और मोबाइल में पूरी तरह से मग्न था।

Machine Translated by Google

फ़ोन। वह इतना मग्न था कि उसे कमरे में मेरी मौजूदगी का एहसास ही नहीं हुआ। बाहर निकलने से पहले मैंने उसे एक नज़र देखा। प्रिया पीली पड़ी चेहरे के साथ मेरा इंतज़ार कर रही थी, उसकी आँखों में आँसू थे।

"तो, जब तुम्हारी मालकिन घर से बाहर होती हैं तो तुम यही करते हो? वो भी अपने बिस्तर पर?" मैंने उस पर कड़ी नज़र गड़ाते हुए कहा।

"सर, मुझसे गलती हो गई! मैं कसम खाती हूँ कि मैं दोबारा ऐसा नहीं करूँगी... वह बदमाश हमेशा मुझे परेशान करने यहाँ आता है... मैंने उसे बुलाया नहीं था, सर!" वह सिसकते हुए बोली।

"लेकिन तुमने उसे अंदर तो आने दिया था न? और अब जब तुम पकड़े गए हो, तो सारा दोष उस पर डाल रहे हो? मुझे तुरंत तुम्हारी मालकिन को इस बारे में बता देना चाहिए," मैंने जेब से मोबाइल फ़ोन निकालते हुए कहा।

"नहीं सर! कृपया ऐसा मत कीजिए! मैडम मुझे नौकरी से निकाल देंगी... इस बड़े शहर में मैं कहाँ जाऊँगी?" उसने मेरे पैरों पर गिरते हुए विनती की।

"उठो," मैंने उसकी प्रतिक्रिया से आश्चर्यचकित होकर तेजी से कहा।

उसने आँसुओं भरी आँखों से मेरी तरफ देखा। मेरा उस लड़की को नुकसान पहुँचाने का कोई इरादा नहीं था। अगर वह अपनी मालकिन की गैरमौजूदगी में मज़े कर रही थी, तो मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन मुझे जवाब चाहिए थे, और उसे डराए रखना ही जवाब पाने का एकमात्र तरीका था, क्योंकि आम हालात में वह बोलती ही नहीं।

"खड़े हो जाओ! अगर तुम मेरे सवालों का सच-सच जवाब दोगे, तो मैं तुम्हारी मैडम को यह नहीं बताऊंगा कि जब वह बाहर होती हैं तो तुम उनके बिस्तर पर क्या करते हो," मैंने कहा, और उसे आंसू पोंछते हुए देखा।

"मुझसे कुछ भी पूछिए, सर। मैं जो कुछ भी जानती हूँ, आपको बता दूँगी," प्रिया ने हिचकिचाते हुए कहा।

"क्या आप श्री रुस्तम को जानते हैं?" मैंने अपना पहला प्रश्न पूछा।

उसने सहमति में सिर हिलाया.

"तो फिर तो आप विक्रम को भी जानते होंगे," मैंने आगे कहा।

उसने फिर सिर हिलाया।

"तो फिर आपको पता ही होगा कि मिस्टर रुस्तम की हत्या हो गई है?" मैंने अपने अगले सवाल को पिछले सवालों से जोड़ते हुए पूछा।

Machine Translated by Google

"जी, सर, मुझे पता है," उसने कहा, इस बार केवल सिर हिलाने के बजाय उसने बोला।

"क्या तुम्हें पता है कि उसे किसने मारा होगा?" मैंने पूछा, हालांकि मुझे जवाब की उम्मीद नहीं थी।

"नहीं, सर, मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता," उसने मासूमियत से जवाब दिया।

"रुस्तम और तुम्हारी मैडम के बीच किस तरह का रिश्ता था?" मैंने अपने सवाल का रुख पूरी तरह बदल दिया।

उसने चुपचाप मेरी ओर देखा, मानो उत्तर देने से पहले मेरी प्रतिक्रिया जानने की कोशिश कर रही हो।

"उनके बीच अवैध संबंध थे," उसने धीरे से कहा।

"जैसे अंदर वाले लड़के के साथ तुम्हारा है?" मैंने पूछा। वह एक पल के लिए झिझकी, लेकिन फिर सहमति में सिर हिला दिया।

"क्या तुमने कभी रुस्तम और अपनी मैडम को अपनी आँखों से ऐसी स्थिति में देखा है?" मैंने पूछा, हालाँकि मुझे पहले से ही जवाब का अंदाज़ा था।

"मैडम ने इस फ्लैट में कभी कुछ छिपाकर नहीं रखा। यहाँ तक कि जब वे बेडरूम में होते थे, तब भी वे मुझे सामान लाने के लिए बुला लेते थे," उसकी आँखों और आवाज़ से पता चल रहा था कि वह सच कह रही थी।

"क्या तुमने मैडम को विक्रम के साथ भी इसी तरह देखा है?" मैंने उन पर नज़रें गड़ाए हुए पूछा।

"कई बार! लगभग हर बार जब वह आया," प्रिया ने अप्रत्यक्ष शब्दों में स्वीकार किया, जिससे पुष्टि हुई कि पम्मी का दोनों के साथ संबंध था।
पुरुष.

पम्मी के रहस्य मेरे सामने खुल रहे थे, और जितना अधिक मैं उजागर करता, उतना ही मेरा संदेह उसकी ओर बढ़ता जाता।

"क्या रुस्तम उस दिन यहीं था जिस दिन उसकी हत्या हुई थी?" मैंने उसका जवाब जानने के लिए उत्सुक होकर पूछा।

"मुझे ठीक से याद नहीं, पर मुझे नहीं लगता कि वह उस दिन आया था। हालाँकि विक्रम आया था," प्रिया ने झिझकते हुए कहा।

"क्या उस दिन तुम्हारी मैडम और विक्रम में कोई बहस हुई थी?"

Machine Translated by Google

"नहीं साहब, विक्रम उस दिन बहुत अच्छे मूड में था। वो मैडम के साथ सीधा बेडरूम में चला गया। लेकिन साहब, एक बात कहूँ? विक्रम मैडम के साथ अपनी पत्नी जैसा व्यवहार करता था। वो उन्हें एक पति की तरह हुक्म चलाता था, और मैडम एक पत्नी की तरह उसकी बात मानती थीं।"

"क्या रुस्तम ने कभी उसके साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया?" मैंने हल्के से मुस्कुराते हुए कहा।

"नहीं सर। मैडम हमेशा रुस्तम को गालियाँ देती रहती थीं... उनके लिए तो वह एक कुत्ते से ज़्यादा कुछ नहीं था," प्रिया ने कुछ नया बताया।

पम्मी ने कल मुझे पूरी तरह से मूर्ख बना दिया था, या शायद मैंने खुद को उसकी सुंदरता से मूर्ख बनने दिया था।

अब सबसे बड़ा सवाल ये नहीं था कि पम्मी का अंडरवियर रुस्तम की लाश के पास कैसे पहुँचा, बल्कि ये था कि इन लोगों ने रुस्तम की लाश उस फ्लैट तक कैसे और कब पहुँचाई। ऐसा लग रहा था कि उसकी हत्या कहीं और की गई थी और बाद में उसकी लाश को कहीं और ले जाया गया।

लेकिन अगर पम्मी हत्या में शामिल थी, तो वह इतना बड़ा सबूत क्यों छोड़ गई? इससे तो उसका पतन ही तय होगा।

मैं इन्हीं विचारों में खोया हुआ अपनी कार तक पहुंचा।

"बॉस, आप वहाँ बस गए या क्या? आपने बहुत समय लगा दिया!" मेरे मुखबिर ने चुटकी ली।

"सुनो, तुम्हें आज ही एक ज़रूरी काम से अमृतसर जाना है," मैंने गाड़ी स्टार्ट करते हुए कहा।

"ठीक है, बॉस! क्या काम है?" उसने पूछा।

मैंने उसे उसके मिशन का ब्यौरा दिया और उन लोगों की सूची दी जिनकी उसे जाँच करनी थी। मुझे इस मामले और अमृतसर के बीच संबंध नज़र आने लगे थे।

उसे जानकारी देने के बाद, मैंने उसे कुछ यात्रा खर्च के साथ ऑटो में विदा किया और फिर निधि से मिलने उसके फ्लैट पर चला गया।

जब मैंने अपनी कार रुस्तम के कार्यालय के बाहर पार्क की तो मेरी मुलाकात उनके एक कर्मचारी मनोहर से हुई।

"कैसे हो प्यारेलाल?" मैंने अपने चिरपरिचित अंदाज में उनका अभिवादन किया।

Machine Translated by Google

"सर... हमारा शुभचिंतक चला गया... उसके बिना, आपको क्या लगता है मैं कैसा होता?" उसने उदास भाव से कहा।

"जिंदगी चलती रहती है, मनोहर। हमें आगे बढ़ते रहना है," मैंने दार्शनिक अंदाज में कहा।

"यह सच है, सर। लेकिन इस दर्द को कम होने में समय लगेगा," उसने आह भरी।

"क्या निधि मैडम अंदर हैं?" मैंने विषय बदलने के लिए पूछा।

मनोहर ने जवाब दिया, "हां, अंतिम संस्कार के बाद से वह बाहर नहीं निकली है।"

मैं उसके पीछे अंदर चला गया, निधि से और अधिक उत्तर पाने की तैयारी में।

Machine Translated by Google

अध्याय 14

अंधेरे में तीरंदाजी

वहाँ से निकलकर, मैं एक बार फिर थाने में इंस्पेक्टर नर सिंह के सामने बैठा था। आज मैं इस मामले के सभी तथ्यों को व्यवस्थित रूप से नर सिंह से जोड़ना चाहता था। हर हत्या के मामले में, हमें हर विवरण का गहराई से विश्लेषण करना होता है। हमारी एक छोटी सी चूक या तो अपराधी को हमारी पहुँच से दूर कर सकती थी या किसी निर्दोष को फाँसी के फंदे तक पहुँचा सकती थी। कानून के रखवालों के लिए दोनों ही परिस्थितियाँ अस्वीकार्य थीं।

"तो जासूस साहब... हत्यारा आपकी पकड़ से कितना दूर है?" नरसिंह की आवाज़ में व्यंग्य का हल्का सा भाव था।

"हत्यारा जल्द ही पकड़ा जाएगा, साहब! लेकिन पहले ये तो बताओ—क्या तुमने अपने मन में हत्यारे की कोई तस्वीर बना ली है, या बस मेरा इंतज़ार कर रहे थे?" मैंने नर सिंह के व्यंग्य का जवाब मीठी-मीठी बातों में दिया।

नर सिंह ने ब्रा और पैंटी की फोरेंसिक रिपोर्ट का जिक्र करते हुए कहा, "हम सिर्फ फोरेंसिक लैब रिपोर्ट का इंतजार कर रहे हैं... एक बार जब यह आ जाएगी, तो हम प्रेस और मीडिया के सामने हत्यारे का खुलासा कर देंगे।"

"तो, आपने पहले ही तय कर लिया है कि पम्मी रुस्तम की हत्यारी हो सकती है?"
मैंने नर सिंह को हल्का सा झटका दिया।

"तुम्हें कैसे पता?" नरसिंह के चेहरे पर आश्चर्य की झलक उभरी।

"सर, जब आप कल रात वहाँ पहुँचे... मैं आपसे थोड़ी देर पहले ही वहाँ से निकला था। मोहल्ले के बाकी लोगों के साथ, मैंने भी आपकी जीप का सायरन सुना था।"

"ओह! तो तुम पुलिस से एक कदम आगे चल रहे हो, अनुज!" नर सिंह हँसा।

"मैं क्या कर सकता हूँ! आपके पास पालन करने के लिए सरकारी प्रोटोकॉल हैं, लेकिन मुझे केवल अपने शब्दों से लोगों को फंसाना है।"

"तुम सही कह रहे हो अनुज... हम बिना ठोस सबूत के किसी पर हाथ नहीं डाल सकते। और इस मामले में, हमारे पास एकमात्र सबूत एक पैंटी है, और हमें यह भी नहीं पता कि वह किसकी है," नर सिंह ने स्वीकार किया।

Machine Translated by Google

"सबूत वहाँ नहीं हैं क्योंकि हम गलत जगह देख रहे हैं। हमें असली अपराध स्थल पर सबूत मिलेंगे," मैंने नर सिंह की ओर गौर से देखते हुए कहा।

"तुम्हारी बात सही है, अनुज... लेकिन अभी तक हमें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है। तो फिर सबूत ढूँढ़ना कहाँ से शुरू करें?" नर सिंह ने हताशा में आह भरी।

"बताओ, क्या सीसीटीवी फुटेज से कुछ पता चला? क्या उस रात रुस्तम के फ्लैट के पास कोई गाड़ी रुकी थी?" मैंने सीसीटीवी फुटेज के बारे में पूछा।

"हमारे पास गली के प्रवेश द्वार तक की फुटेज है, लेकिन कोई भी गाड़ी गली में प्रवेश करती नहीं दिखी। दुर्भाग्य से, उस गली की सभी इमारतें रिहायशी हैं, और वहाँ कोई सीसीटीवी कैमरा नहीं लगा है," नर सिंह ने बेबसी से जवाब दिया।

"क्या मुझे वह सीसीटीवी फुटेज मिल सकती है? मैं अपने दृष्टिकोण से उसका विश्लेषण करना चाहता हूँ," मैंने पूछा।

नर सिंह ने कहा, "मुझे अपना ईमेल आईडी दीजिए। मैं आज ही आपको सारी फुटेज भेज दूंगा।"

"अब तक की पूछताछ से लगता है कि विक्रम और पम्मी ही मुख्य संदिग्ध हैं," मैंने नर सिंह से अपने विचार साझा किए।

"मुझे भी सबसे ज़्यादा शक पम्मी पर है। कई खूबसूरत चेहरे बिल्कुल अलग-अलग हक़ीक़त छिपाते हैं," नर सिंह ने रहस्यमयी लहजे में कहा।

"तो क्या तुम भी उसकी सुन्दरता से मंत्रमुग्ध हो गए थे?" मैंने चिढ़ाते हुए पूछा।

नर सिंह ने अपना अनुभव साझा करते हुए कहा, "नहीं, हम पुलिस अधिकारियों के लिए तो यह रोज़मर्रा का मामला है। ज़्यादातर मामले ज़मीन, महिलाओं या पुरानी दुश्मनी से जुड़े होते हैं।"

"इस मामले में, आपको तीनों का मिश्रण मिलेगा - बस परतों के खुलने का इंतज़ार कीजिए," मैंने नर सिंह से कहा।

"मेरा मन कर रहा है कि विक्रम को हिरासत में लेकर उससे सख्ती से पूछताछ करूँ। वह सब कुछ उगल देगा!" नर सिंह पुलिसिया तरीका अपनाने को तैयार था।

"थोड़ा इंतज़ार करो... कौन जाने, हमें ऐसे तरीकों की ज़रूरत ही न पड़े। हो सकता है हत्यारा सामने आकर अपना गुनाह कबूल कर ले," मैंने पूरे विश्वास के साथ कहा।

Machine Translated by Google

नर सिंह ने बड़बड़ाते हुए कहा, "अभी तो हम अंधेरे में टटोल रहे हैं।"

"यहाँ पूरी तरह से अँधेरा नहीं है। हत्यारे की परछाईं देखने के लिए पर्याप्त रोशनी है। जल्द ही उसका चेहरा भी सामने आ जाएगा," मैंने उसे आश्वस्त किया।

"यह पूरा पम्मी वाला एंगल... विक्रम ने ही सबसे पहले हमें उसका ज़िक्र किया था। क्या हो अगर विक्रम ही असली मास्टरमाइंड हो और उसने हमें गुमराह करने के लिए पम्मी को इस मामले में शामिल किया हो? हो सकता है कि पम्मी के घर पर पैंटी के साथ ब्रा का होना किसी साजिश का हिस्सा हो," नर सिंह ने सही अनुमान लगाया।

"अब आप सही सोच रहे हैं, सर। मेरा भी यही विचार था। बस कल का इंतज़ार कीजिए—रुस्तम के चौथे दिन के अनुष्ठान के बाद, हम उसके हत्यारों को सज़ा दिलाएँगे," मैंने पूरे विश्वास के साथ कहा।

"क्या आप भी यही सोच रहे हैं?" नर सिंह ने मुझसे पूछा।

"मैं एक साथ कई दिशाओं में सोच रहा हूँ। लेकिन मेरा मानना है कि ये सभी रास्ते अंततः हत्यारे तक पहुँचेंगे," मैंने दार्शनिक भाव से कहा।

"वाह अनुज! एसीपी साहब आज इस केस के बारे में एक और मीटिंग करने वाले हैं। मैं उनके साथ इन नए तथ्यों पर चर्चा करूँगा," नर सिंह ने नए उत्साह से कहा।

"ठीक है, सर! मैं अब चलता हूँ। अगर इस मामले में कुछ नया सामने आया, तो मैं आपको बता दूँगा," मैंने उठते हुए कहा।

"रुको, तुम कहाँ जा रहे हो? हम बात कर रहे थे तो मैं चाय या कॉफ़ी ऑर्डर करना ही भूल गया," नर सिंह ने शर्मिंदा होकर कहा।

"अगली बार कॉफ़ी लूँगा, सर। अभी मुझे अपने ऑफिस जाना है," मैंने हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाते हुए कहा। इस बार नर सिंह ने गर्मजोशी से मेरा हाथ मिलाया।

मैं नर सिंह के ऑफिस से निकलकर अपने ऑफिस की ओर चल पड़ा। अचानक मेरे फ़ोन पर रागिनी का मैसेज आया, जिसमें बताया गया था कि मेरे ऑफिस में एक महिला मेरा इंतज़ार कर रही है। इसीलिए मुझे नर सिंह से माफ़ी मांगनी पड़ी—वरना मैं कॉफ़ी के लिए कभी मना नहीं करता।

मेरे ऑफिस में, रागिनी के अलावा, मेरा इंतज़ार कर रही महिला रुस्तम की बहन निकली। मैं हैरान थी—उसे मेरा ऑफिस कैसे मिल गया? फिर मुझे याद आया कि मैंने उसे अपना कार्ड दिया था।

Machine Translated by Google

"तुम यहाँ हो! मैं कल तुमसे मिलने आने वाला था," मैंने उसे अपने केबिन में आने का इशारा किया। रागिनी और वह दोनों साथ-साथ अंदर आईं।

"रागिनी, चाय बना लो... तुम्हारा संदेश मिलते ही मैंने सब कुछ पुलिस स्टेशन पर छोड़ दिया," मैंने रागिनी की ओर मुस्कुराते हुए कहा।

रागिनी ने जवाब दिया, "नरेश तो पहले से ही इस पर है, साहब।" उसने पहले रुस्तम की बहन को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया, फिर उसके बगल में बैठ गई।

"आपके भाई के साथ जो हुआ वह दुर्भाग्यपूर्ण था... पुलिस को अभी भी उसके हत्यारों के बारे में कोई सुराग नहीं मिला है," मैंने बातचीत शुरू की।

"मेरे भाई रुस्तम का जीवन भी ऐसा ही था—उसने अपना पूरा जीवन दुश्मन बनाने में बिताया। कोई भी नहीं था—न परिवार, न दोस्त—जो वास्तव में उसकी परवाह करता था। वह अपनी ताकत से दूसरों को दबाकर जीता था," रुस्तम की बहन ने अपने भाई के चरित्र को सटीक रूप से चित्रित किया।

"पहले मुझे अपना नाम बताओ," मुझे एहसास हुआ कि मैं अभी तक उसका नाम नहीं जानता था।

"मेरा नाम सतवंत कौर है, लेकिन घर पर सब मुझे संतो कहते हैं," उसने जवाब दिया।

"तुम रुस्तम की छोटी बहन हो?" मैंने उसकी ओर देखते हुए पूछा।

"नहीं, वह मुझसे दो साल छोटा था। जब हम अमृतसर में रहते थे, तब वह ऐसा नहीं था। यहाँ आने के बाद वह बदल गया। लेकिन उसने मेरे साथ कभी कोई गलत काम नहीं किया... दरअसल, जब हम टूटे-फूटे और हताश होकर दिल्ली पहुँचे, तो रुस्तम ने हमें शरण दी और बाद में, उसने बिना एक पैसा लिए वह घर मेरे नाम कर दिया," संतो ने रुस्तम के बारे में कृतज्ञतापूर्वक बताया।

"लेकिन आपकी भाभी निधि का दावा है कि आपने उस घर पर अवैध रूप से कब्ज़ा कर लिया था। उन्होंने कहा कि उन्होंने आपको केवल अस्थायी रूप से रहने की अनुमति दी थी, लेकिन बाद में आपने जाने से इनकार कर दिया," मैंने निधि से सुनी बात का हवाला देते हुए कहा।

"वह बेचारी औरत कुछ भी कह सकती है! जब उसने हमारे परिवार में शादी की थी, तो उसके पास कुछ भी नहीं था। उसके पिता शादी के मेहमानों को खाना खिलाने के लिए भी पैसे नहीं जुटा पा रहे थे। मेरे पिता ने पूरी शादी का खर्च उठाया था," सैंटो ने अपना गुस्सा निकाला।

रागिनी की प्रतिक्रिया पर हम दोनों ने एक-दूसरे को हँसी से देखा। बातचीत अभी शुरू ही हुई थी, और लग रहा था कि आगे बहुत लंबी रात बाकी है।

Machine Translated by Google

अध्याय 15

वह तेज आँखों वाली... लेकिन...

अगले दिन, सुबह ग्यारह बजे के आसपास, मैं डिंपल के ड्राइंग रूम में, उसके ठीक सामने बैठा था। डिंपल लगभग छब्बीस-सत्ताईस साल की लड़की थी, तीखे और सुडौल नैन-नक्श वाली। उसके हाव-भाव और रहन-सहन ने उसकी खूबसूरती में चार चाँद लगा दिए थे। हालाँकि उसका रंग सांवला था, लेकिन उसकी आकर्षक आँखों और तीखे नैन-नक्श में एक ऐसा आकर्षण था जो किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर सकता था।

"तो, तुमने अंततः वास्तविक जीवन में देख ही लिया कि एक जासूस वास्तव में किस प्रकार का विचित्र संग्रहालय नमूना होता है," मैंने डिम्पल की ओर देखते हुए मुस्कुराते हुए कहा।

"अरे यार! तुम जासूस से ज़्यादा फ़िल्मी हीरो लगते हो। मतलब, इतने चॉकलेटी चेहरे के साथ तुमने जासूसी जैसा ख़तरनाक पेशा क्यों चुना?" लगता था डिंपल को भी मज़ाकिया बातें करने की आदत थी।

"मैं जासूस क्यों बनी... इस बारे में मैं किसी दिन किताब लिखूँगी। लेकिन चलिए असली मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिसके लिए मैं यहाँ हूँ।" बोलते हुए मैंने उसकी काजल से भरी आँखों में देखा।

"बिल्कुल! पूछो, जो चाहो पूछो," डिम्पल ने इस बार थोड़े गंभीर स्वर में उत्तर दिया।

मैंने पहला सवाल पूछने के लिए मुँह खोला ही था कि एक नौकरानी चाय की ट्रे लेकर अंदर आई। डिंपल ने मुझे एक कप दिया और खुद भी एक ले लिया। मैं नौकरानी को गौर से देखता रहा—उसका चेहरा मुझे तुरंत प्रिया की याद दिला गया। ऐसा लगा जैसे प्रिया खुद मेरे सामने खड़ी हो, बिल्कुल उसकी हूबहू प्रतिरूप।

डिंपल ने देखा कि मैं उसकी नौकरानी को कितनी गौर से देख रहा था, और वह हल्के से मुस्कुराई। तब तक नौकरानी चाय रखकर जा चुकी थी।

"क्या बात है, साहब? क्या आप मेरी नौकरानी के प्यार में पड़ गए हैं?" डिम्पल ने बनावटी गुस्सा दिखाते हुए चिढ़ाते हुए कहा।

"मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने उसे पहले कहीं देखा है," मैंने सहजता से कहा।

Machine Translated by Google

"ओह, प्लीज़! ये पुराने ज़माने की पिकअप लाइन 80 के दशक में काम करती थी। ये 21वीं सदी है, प्यारे जासूस!" डिंपल मुस्कुराई।

"मुझे उन लोगों से मिलने का समय ही नहीं मिलता जो पहले से ही मुझमें रुचि रखते हैं।
मैं किसी नये व्यक्ति को लुभाने में अपना प्रयास क्यों बर्बाद करूँ?

"तो, अब हम केस के बारे में बात शुरू करें? चाय भी खत्म हो गई है," मैंने डिंपल की तरफ देखते हुए कहा।

"बिल्कुल, महाराज!" डिंपल ने मज़ाकिया लहजे में अपनी बात बढ़ा-चढ़ाकर कही। या तो वो कुछ ज़्यादा ही अभिनय कर रही थी या फिर पहली बार किसी असली जासूस से मिलने के लिए बहुत ज़्यादा उत्साहित थी।

"आप अपने चाचा की ओर से रुस्तम के खिलाफ अदालती मुकदमा लड़ रहे हैं, है ना?" मैंने अपनी बात एक ऐसी बात से शुरू की जो मुझे पहले से ही पता थी।

"हाँ... लेकिन हमारे देश में दीवानी मामले इतने लंबे खिंचते हैं कि कभी-कभी तो फैसले के इंतजार में व्यक्ति की मौत हो जाती है," डिम्पल अदालती कार्यवाही से थकी हुई लग रही थीं।

मैंने आगे पूछा, "इन लोगों ने अशोक विहार में इतना कीमती बंगला कैसे हथिया लिया? और उन्होंने संपत्ति के कागज़ात भी कैसे जाली बनाए?"

डिंपल ने याद करते हुए कहा, "मुझे नहीं पता कि मेरे चाचा इन लोगों के जाल में कैसे फंस गए। शुरुआत में उन्होंने गुरप्रीत कौर नाम की एक महिला को एक लाख रुपये में बंगला किराए पर दिया था।"

"गुरप्रीत कौर उर्फ पम्मी उनमें से ही एक है। मुझे लगता है कि वे सब एक गिरोह का हिस्सा हैं," मैंने उससे कहा।

"आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। यह एक परिवार द्वारा चलाया जा रहा घोटाला है। एक व्यक्ति खुद को प्रॉपर्टी डीलर बताकर सौदा तय करता है, परिवार का कोई दूसरा सदस्य प्रॉपर्टी किराए पर ले लेता है, और फिर कोई और मालिकाना हक जताने के लिए जाली दस्तावेज़ बना लेता है। ये लोग ज़्यादातर उन एनआरआई की प्रॉपर्टी को निशाना बनाते हैं जो भारत में कभी-कभार ही आते हैं," डिंपल ने मुझे पूरी कहानी समझाते हुए बताया।

मैंने पूछा, "अदालत में मामले की वर्तमान स्थिति क्या है?"

"कुछ ख़ास नहीं, बस अंतहीन तारीख़ें और सुनवाइयाँ। और अब जबकि उनमें से एक की मौत हो गई है, तो मामला और भी लंबा खिंचेगा," डिंपल ने थोड़ी निराश होकर कहा।

Machine Translated by Google

मैं जानना चाहता था, "किस आधार पर उन्होंने बंगले पर स्वामित्व का दावा किया?"

"वे बहुत चालाक हैं। रुस्तम ने पहले मेरे चाचा से एक पावर ऑफ अटॉर्नी पर हस्ताक्षर करवाए, जिससे उन्हें संपत्ति किराए पर देने और उसकी देखभाल करने की अनुमति मिल गई," उसने मेरी ओर देखते हुए कहा।

"और फिर?" मैंने उससे आँखें मिलाते हुए पूछा।

"फिर, उन्होंने उस पावर ऑफ अटॉर्नी को एक जाली पावर ऑफ अटॉर्नी से बदल दिया। उन्होंने मेरे चाचा के हस्ताक्षर की इतनी सटीक नकल की कि मेरे चाचा भी एक पल के लिए उलझन में पड़ गए कि उन्होंने वास्तव में हस्ताक्षर किए हैं या नहीं!"

डिम्पल ने आश्चर्य से बताया।

"लेकिन फोरेंसिक जांच से यह साबित हो सकता है कि हस्ताक्षर नकली थे," मैंने कहा।

"लेकिन उन्होंने तो इससे भी बड़ी चाल चली। उन्होंने मेरे चाचा के ख़िलाफ़ धोखाधड़ी का मामला दर्ज करा दिया!"

"क्या चाल?" मैं इस योजना के बारे में और अधिक उत्सुक हो रहा था।

उन्होंने कहा, "जाली हस्ताक्षर का उपयोग करके उन्होंने डुप्लिकेट संपत्ति दस्तावेज तैयार कर लिए।"
फिर उन्होंने यह दावा करते हुए मामला दर्ज करा दिया कि मेरे चाचा ने इन फर्जी दस्तावेजों का उपयोग करके उन्हें संपत्ति बेच दी है और उनसे मूल स्वामित्व के कागजात मांगे!" डिंपल ने बताया।

"और आप यह लड़ाई अकेले लड़ रहे हैं?" मैंने पूछा।

डिंपल ने मुझे बताया, "मेरे चाचा का सिर्फ़ एक बेटा है, लेकिन उसे मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ हैं। इसलिए मेरे चाचा उसे इलाज के लिए लंदन ले गए और आखिरकार वे वहीं बस गए। मैं यहाँ उसकी लड़ाई लड़ने वाली अकेली रिश्तेदार हूँ। वह नहीं चाहते कि उनकी पुश्तैनी संपत्ति चोरी हो, लेकिन वह अपने बेटे का साथ भी नहीं छोड़ सकते। इसलिए, मुझे उसके लिए यह लड़ाई लड़नी होगी।"

"तो, अगर तुम्हारे चाचा को कुछ हो गया, तो ये लोग अपने आप ही संपत्ति ले लेंगे। उन्होंने इस पूरे घोटाले की योजना बहुत सोच-समझकर बनाई है," मैंने कहा।

"किसके नाम पर उन्होंने संपत्ति के कागजात जाली बनाए?" मैंने फिर पूछा।

"रुस्तम," डिम्पल ने उत्तर दिया।

Machine Translated by Google

"लेकिन असली कब्ज़ा तो पम्मी और विक्रम के पास है। आपको यह भी पता होगा कि वे अब उस बंगले से वेश्यावृत्ति का धंधा चला रहे हैं, जिसकी कमान पम्मी के हाथ में है," मैंने आगे कहा।

"मैं जानती हूं... इसीलिए यह और भी अधिक हृदय विदारक है," डिम्पल ने उदास स्वर में कहा।

"लेकिन अगर रुस्तम की मौत से अभी किसी को फायदा है तो वह आपके चाचा को है।
क्या वह रुस्तम को खत्म करवा सकता था?" मैंने डिम्पल की ओर देखते हुए पूछा।

उसका चेहरा तुरंत ही अस्वीकृति से कठोर हो गया।

"मैंने कल ही कहा था, हम खून-खराबे में यकीन नहीं रखते। अगर मेरे चाचा रुस्तम को मरवाना चाहते, तो उन्हें अदालत में सालों बर्बाद नहीं करने पड़ते," उसने थोड़े चिढ़े हुए स्वर में जवाब दिया।

मैंने पूछा, "यदि, भगवान न करे, आपके चाचा को कुछ हो जाए, तो संपत्ति का उत्तराधिकारी कौन होगा?"

"जाहिर है, उसका बेटा," डिम्पल ने जवाब दिया।

"लेकिन उसका बेटा मानसिक रूप से बीमार है, शायद कानूनी तौर पर भी अयोग्य। इसका मतलब है कि उसे कुछ भी विरासत में नहीं मिल सकता। ऐसे में, असली वारिस कौन होगा?" मैंने उसकी गहरी आँखों में देखा।

"हमारा परिवार बहुत बड़ा है। मुझे नहीं पता कि वह किसे उत्तराधिकारी घोषित करेंगे।"
डिम्पल ने अस्पष्टता से उत्तर दिया।

"तो क्या रुस्तम की मौत से तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा?" मैंने फिर पूछा।

"केवल वे लोग ही इससे लाभान्वित होंगे जो वर्तमान में इस संपत्ति पर कब्जा कर रहे हैं," डिम्पल का धैर्य अब जवाब दे रहा था।

"मुझे समझाओ। इससे उन्हें क्या फ़ायदा होगा?" मैंने सवाल पलटकर उससे पूछा।

डिम्पल ने जवाब दिया, "जो व्यक्ति रुस्तम के लिए जाली हस्ताक्षर बना सकता है, वह उतनी ही आसानी से उसके हस्ताक्षर बनाकर संपत्ति अपने नाम पर स्थानांतरित कर सकता है।"

"यह जालसाज़ कौन है? क्या तुम उन्हें जानती हो?" उत्तेजना में डिंपल ने एक ज़रूरी बात कह दी।

Machine Translated by Google

"नहीं! मैं ऐसे किसी को नहीं जानती... लेकिन यह तुम्हारा काम है, जासूस। तुम्हें पता लगाना चाहिए कि इस तरह का काम कौन करता है," उसने मुझे चुनौती दी।

"आपने बहुत अच्छी बात कही है, मैडम। आप न केवल सुंदर हैं, बल्कि काफी बुद्धिमान भी हैं," मैंने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता था कि महिलाएं तारीफों की कितनी कद्र करती हैं।

"तुम्हें मेरी खूबसूरती पर गौर करने में बहुत देर हो गई!" डिंपल फिर से अपनी शरारती बातों में लग गई। मेरे जाने का इशारा हो गया था।

बाहर आते ही मेरी मुलाक़ात नौकरानी से फिर हुई। प्रिया एक बार फिर मेरे दिमाग़ में कौंध गई।

"क्या तुम प्रिया नाम की लड़की को जानती हो?" मैंने उससे पूछा।

"हाँ, वह मेरी बहन है। वह पहले यहाँ काम करती थी, लेकिन उसने मुझे यह नौकरी दिलवाई और कहीं और चली गई," उसने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया।

डिंपल से मिलकर एक नया पहलू सामने आया—रुस्तम के फ़र्ज़ी ज़मीन-जायदाद के कागज़ों के पीछे कौन था? रुस्तम के कई दुश्मन थे, पर कोई भी इतना ताकतवर नहीं था कि उसकी जान ले ले। उसने हमेशा उन लोगों को सताया था जो पहले से ही किस्मत के मारे हुए थे। ऐसे लोग उसे कैसे मार सकते थे?

इस वक़्त मुझे अपने मुखबिर की याद आ रही थी। वो ज़रूर किसी ऐसे व्यक्ति को जानता होगा जो फ़र्ज़ी दस्तावेज़ बनाने में शामिल है। अगर मैं उस व्यक्ति को ढूँढ़ पाता, तो मैं ख़ुद ही सारी बातें जोड़ पाता।

Machine Translated by Google

अध्याय 16

मोहन प्यारे का आगमन

इस मामले में मुझे अपने मुखबिर से ज़्यादा मदद नहीं मिल रही थी। हालाँकि मुखबिर हर जासूस और पूरे पुलिस विभाग की रीढ़ होते हैं, लेकिन हर ताले की चाबी हमेशा उनके पास नहीं होती। इसलिए मैं अब सफदरजंग एन्क्लेव से केशवपुरम पुलिस स्टेशन जा रहा था। मुझे किसी ऐसे व्यक्ति का आपराधिक रिकॉर्ड चाहिए था जो पहले जाली दस्तावेज़ों के लिए सज़ा काट चुका हो।

जब मैं थाने पहुँचा, तो नर सिंह फिर से गायब था। लेकिन मैंने देखा कि सब-इंस्पेक्टर दिलबाग सिंह सामने से आ रहा था। वह रुस्तम हत्याकांड का प्रभारी अधिकारी था। उसे देखते ही मैं उसकी ओर चल पड़ा।

"क्या आज अफ़सर नहीं है? कहीं गया है क्या?" मैंने पूछा। उसने मुझे तुरंत पहचान लिया।

"अफ़सर सुनवाई के लिए अदालत में हैं। वो शाम तक वापस आ जाएँगे। अगर मैं आपकी कोई मदद कर सकूँ, तो मुझे बताइए," उन्होंने जवाब दिया। मुझे लगा कि नर सिंह ने उन्हें मेरे बारे में पहले ही बता दिया होगा।

मैंने सुझाव दिया, "चलो तुम्हारे ऑफिस में बैठकर बातें करते हैं।" वह आगे बढ़ा और मैं उसके पीछे अंदर चला गया।

"कृपया, बैठ जाइए," उसने अपने ठेठ पुलिसिया लहजे में कहा। मैं उसके सामने वाली कुर्सी पर धँस गया।

"मुझे बताइये, श्रीमान, मैं आपकी किस प्रकार सहायता कर सकता हूँ?" उसने पुनः पूछा।

"यह मेरे लिए नहीं, बल्कि उस केस के लिए है जिसकी आप जाँच कर रहे हैं। अगर हम इस केस को जल्दी सुलझा लेते हैं, तो आपको भी प्रशंसा मिलेगी," मैंने कहा, यह स्पष्ट करते हुए कि मुझे जो चाहिए था, वह दरअसल उनके काम का हिस्सा था। यह मेरी ख़ास शैली थी।

उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "ऐसी स्थिति में, मुझे मदद करने में और भी खुशी होगी।"

"इस मामले ने एक नया पहलू उजागर किया है - लोग जाली दस्तावेजों का इस्तेमाल कर जबरन संपत्ति हड़प लेते हैं, फिर असली मालिकों को अंतहीन जालसाजी में घसीटते हैं।"

Machine Translated by Google

मैंने समझाया, "वे अदालती सुनवाई में तब तक भागते रहेंगे जब तक कि वे या तो हार नहीं मान लेते या अदालत के बाहर समझौता नहीं कर लेते।"

"यह तो बहुत ही दिलचस्प बात है, सर," दिलबाग ने सिर हिलाया।

"मुझे पुलिस की मदद चाहिए। क्या इस इलाके में कोई ऐसा है जिसे फ़र्ज़ी दस्तावेज़ बनाने के जुर्म में जेल हुई हो?" मैंने पूछा।

"लेकिन अनुज बाबू! ये लोग कहीं से भी किसी को नौकरी पर रख सकते हैं। ज़रूरी नहीं कि इन्होंने अपने दस्तावेज़ किसी स्थानीय जालसाज़ से बनवाए हों।"
दिलबाग ने बताया।

"लेकिन मैं एक सुराग का अनुसरण करना चाहता हूँ। इस व्यापार में शामिल व्यक्ति संभवतः उसी व्यापार में अन्य लोगों को जानता होगा। इसी तरह एक के बाद एक संबंध बनते हैं," मैंने अपना दृष्टिकोण समझाया।

"मैं जहाँगीरपुरी में एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो नकली ड्राइविंग लाइसेंस बनाता था। जब मैं वहाँ थाने में तैनात था, तो मैंने उसे दो-तीन बार गिरफ़्तार किया था। लेकिन हर बार छूटने के बाद वह अपने पुराने धंधे में लग जाता था।"

अगर वो कुछ मदद कर सके, तो मैं आपको उसका पता दे सकता हूँ। इसके अलावा, मैं हमारे स्टेशन रिकॉर्ड की जाँच करूँगा और शाम तक आपको बता दूँगा," दिलबाग ने कहा।

मैंने जहाँगीरपुरी वाले आदमी का विवरण नोट कर लिया। उसके पास फ़ोन नंबर नहीं था, लेकिन कोई बात नहीं। मैं बस उससे मिलकर उनके काम के बारे में और जानना चाहता था। जाने से पहले, दिलबाग ने मुझे कुछ सुझाव दिए कि उस आदमी का विश्वास जीतने के लिए क्या कहना है और किसका नाम लेना है। मैंने उसे धन्यवाद दिया और स्टेशन से निकल गया।

अब तक मैं जहाँगीरपुरी के उस ब्लॉक में पहुँच चुका था जहाँ दिलबाग ने मुझे भेजा था। वह इलाका तंग, पच्चीस वर्ग गज के घरों और संकरी गलियों से भरा था। घनी आबादी के बावजूद, यह आपराधिक गतिविधियों का एक जाना-माना अड्डा था। मैंने एक घर का दरवाज़ा खटखटाया, और लगभग उन्नीस-बीस साल की एक किशोरी ने दरवाज़ा खोला।

"मुझे मोहन लाल से मिलना है," मैंने उस पर एक सरसरी नज़र डालते हुए कहा।

"तुम उस शराबी से क्या चाहते हो?" उसने उपहास किया।

"मैं इस विषय पर उनसे चर्चा करना चाहूंगी," मैंने उसके व्यंग्य को अनदेखा करते हुए उत्तर दिया।

"किससे बातें कर रही हो, बेचारी?" लगभग पैंतीस साल का एक आदमी आँखें मलता हुआ अंदर से निकला।

Machine Translated by Google

"यह रहा तुम्हारा प्यारा मोहन, अच्छी तरह देखो। यह बेवकूफ कल रात शराब के नशे में बेहोश हो गया था। पता नहीं तुम्हारी आवाज़ सुनकर कैसे जाग गया," लड़की ने मज़ाक करते हुए कहा, इस बार उसने मुझ पर नहीं बल्कि मोहन पर ताने कसे।

"क्या आप मोहन लाल हैं? करीम ने मुझे भेजा है," मैंने कहा।

जैसे ही मैंने करीम का नाम लिया, उसके चेहरे के भाव पूरी तरह बदल गये।

"लेकिन वह तो जेल में है... क्या तुम उससे मिले हो?" मोहन ने मुझे शक भरी निगाहों से देखते हुए पूछा।

"हम एक ही बैरक में थे। वह लंबे समय से जेल में है, लेकिन मैं कल ही बाहर आ गया। मुझे कुछ काम था, इसलिए करीम भाई ने मुझे आपसे मिलने के लिए कहा। उन्होंने मुझे आपका पता दिया," मैंने दिलबाग़ की बात दोहराते हुए कहा।

"अगर उसने तुम्हारी ज़मानत दी है, तो तुम भी हम में से एक हो। अंदर आओ," मोहन ने कहा और मुझे एक छोटे से, मंद रोशनी वाले 8x8 के कमरे में ले गया।

"बताओ, तुम्हें क्या चाहिए? नकली पासपोर्ट या कोई और दस्तावेज़?" उसने पूछा।

"मुझे जाली संपत्ति के कागज़ चाहिए। क्या आप कर सकते हैं?" मैंने चारा फेंका।

"मैं इतना बड़ा खिलाड़ी तो नहीं हूँ, लेकिन मैं आपको एक ऐसे व्यक्ति से मिलवा सकता हूँ जो इस धंधे में माहिर है। उसकी जालसाज़ी इतनी ज़बरदस्त है कि सरकारी अधिकारी भी धोखा खा जाते हैं," मोहन ने शेखी बघारी।

मैंने कहा, "यही वह काम है जिसकी मुझे जरूरत है।"

"लेकिन इस व्यवसाय में बहुत खर्चा आता है," मोहन ने संकेत दिया।

"पैसा कोई मुद्दा नहीं है। काम बिल्कुल सही होना चाहिए। मैं अच्छी रकम दूँगा।"
मैंने उसे आश्वासन दिया.

"तो फिर इसमें मेरा क्या फायदा? मैं मुफ्त में काम नहीं करता," मोहन ने आखिरकार अपना असली रूप दिखा दिया।

"चिंता मत करो, मोहन प्यारे। जब बारिश होगी, तो तुम्हें भी बूँदें मिलेंगी," मैंने अपने चिरपरिचित अंदाज में जवाब दिया।

"ठीक है, तुम उससे कब मिलना चाहते हो?" मोहन ने चमकती आँखों से पूछा।

Machine Translated by Google

लालच के साथ.

"जितनी जल्दी हो सके। अगर हो सके तो अभी चलें," मैंने कहा।

"मुझे फ्रेश होने के लिए कुछ समय दो," उसने मुस्कुराते हुए बाहर निकलते हुए कहा।

बीस मिनट बाद वह वापस लौटा, अब वह अधिक आकर्षक लग रहा था।

उन्होंने कहा, "चलो चलें, वजीरपुर गांव तक बस थोड़ी ही दूरी है।"

मैं हमें वज़ीरपुर गाँव ले गया, जो कभी एक ग्रामीण बस्ती थी और अब दिल्ली के शहरी विस्तार का हिस्सा है। अपनी कार बाहरी इलाके में पार्क करके, हम संकरी गलियों से होते हुए एक नए रंगे हुए घर तक पहुँचे।

"यहीं रुको, मैं देखता हूँ कि वह अंदर है या नहीं," मोहन ने कहा और अंदर चला गया। कुछ मिनट बाद वह एक आदमी के साथ वापस आया।

"मैं गिरीश भाई बोल रहा हूँ। मैंने इन्हें आपके काम के बारे में बताया है। ये इसे संभाल लेंगे।"
मोहन ने उनका परिचय कराया।

"मैं अनुज हूँ," मैंने गिरीश से हाथ मिलाते हुए कहा।

"चलो इस बारे में सड़क पर बात नहीं करते। अंदर आ जाओ," गिरीश ने कहा।

अंदर जाकर गिरीश ने पूछा, "आपको किस तरह के कागज़ चाहिए?"

"मुझे संपत्ति के जाली दस्तावेज़ बनाने हैं। यह हमारा पुश्तैनी घर है, लेकिन कानूनी विवादों ने इसे और पेचीदा बना दिया है। मैं अपने नाम पर कागज़ात बनवाना चाहता हूँ ताकि अदालती कार्यवाही में देरी हो, क्योंकि उस पर मेरा कब्ज़ा पहले से ही है," मैंने झूठ बोला।

"यह हो जाएगा। क्या आपके पास कोई मूल दस्तावेज़ हैं?" उन्होंने पूछा।

मैंने जवाब दिया, "मेरे पास मालिक के हस्ताक्षर वाले कुछ ही कागज़ हैं। मैं चाहता हूँ कि आप उनका इस्तेमाल करके पूरा सेट फिर से तैयार करें।"

उन्होंने विश्वास के साथ कहा, "इसकी लागत संपत्ति के मूल्य का आधा प्रतिशत होगी।"

"ठीक है," मैंने सहमति जताई, लेकिन मुझे उसके पिछले काम का सबूत चाहिए था।

गिरीश ने मुझे पिछली नौकरियों की सूची वाली एक डायरी दिखाने में संकोच किया।
मेरे छिपे हुए बटन कैमरे ने सब कुछ रिकॉर्ड कर लिया।

मैंने कहा, "अग्रिम भुगतान के साथ कल मिलते हैं।"

Machine Translated by Google

अगले दिन, मैं पचास हज़ार नकद लेकर लौटा। पैसों को देखकर गिरीश लालच से अंधा हो गया, और उसे यकीन हो गया कि वह मेरे जाल में फँस गया है। जाँच का अगला चरण: अगले दिन, दोपहर के आसपास, मैं फिर से गिरीश भाई के कमरे में उसी कुर्सी पर बैठा था
जहाँ मैं पिछले दिन बैठा था। लेकिन इस बार, मोहन लाल मेरे साथ नहीं थे—मैंने उन्हें कल ही उनकी फीस देकर विदा कर दिया था। गिरीश के सामने मेज़ पर पाँच-सौ के कुरकुरे नोटों में पचास हज़ार रुपयों का एक बंडल पहले से ही रखा हुआ था।

पैसे का आभामंडल इतना शक्तिशाली होता है कि यह किसी व्यक्ति की सोचने-समझने की क्षमता को पूरी तरह से निगल सकता है। जो कोई भी पैसा लेकर आता है, उसे तुरंत सच्चा मान लिया जाता है—कम से कम उसे पाने वाले की नज़र में तो।
इस समय, गिरीश ने मुझे एक वैध ग्राहक के रूप में पूरी तरह से स्वीकार कर लिया था क्योंकि मैंने अपना वचन निभाया था।

"गिरीश भाई, मेरा काम तो पक्का हो जाएगा ना? मैंने इस लड़ाई को जीतने के लिए वकीलों की पूरी टीम तैयार कर ली है," मैंने उनकी तरफ चापलूसी भरे लहजे में देखते हुए कहा।

"निश्चिंत रहो, अनुज बाबू! जैसे तुम भुगतान करने में विश्वसनीय हो, वैसे ही हम भी अपने काम में उतने ही विश्वसनीय हैं। कल और आज में बस इतना ही फ़र्क़ है कि कल तुम सिर्फ़ एक संभावित ग्राहक थे—आज तुम मेरे ग्राहक हो। और इसलिए यह मेरा फ़र्ज़ है कि मैं तुम्हें अपने काम में पूरा भरोसा दूँ," उसने जवाब दिया।

यह कहते हुए, उन्होंने अपनी कुर्सी के पीछे रखी अलमारी से एक डायरी निकाली और उसका एक पन्ना खोलकर मेरे सामने रख दिया। मैं थोड़ा आगे की ओर झुक गया, ताकि पन्ना मेरी कमीज़ पर लगे छिपे हुए बटन वाले कैमरे की नज़र में पूरी तरह आ जाए। फिर भी, एक सच्चे ग्राहक की तरह, मैंने जल्दी से डायरी बंद की और उसे वापस उनकी ओर सरका दिया।

"अरे गिरीश भाई! अगर मुझे आप पर भरोसा न होता, तो क्या मैं बिना पूछे ही आपके सामने पचास हज़ार रुपये रख देता? मुझे आप पर पूरा भरोसा है," मैंने एक अनुभवी व्यापारी के लहजे में कहा। गिरीश के चेहरे पर संतुष्टि के भाव फैल गए।

"आपके दस्तावेज़ एक हफ़्ते में तैयार हो जाएँगे। चैन की नींद सोइए! कई लोगों ने हमारे बनाए कागज़ात से अपनी संपत्तियाँ सुरक्षित कर ली हैं," गिरीश ने शेखी बघारी, उसका अहंकार बढ़ गया।

Machine Translated by Google

हर व्यक्ति में एक सहज इच्छा होती है कि दूसरे लोग जानें कि वे वास्तव में कितने महत्वपूर्ण हैं। यह भूख हर किसी में होती है—एक छोटे-मोटे चायवाले से लेकर एक अरबपति तक। और अभी, यही भूख गिरीश में भी उभर रही थी।

"तो फिर तो आप वाकई बहुत बड़े आदमी होंगे, गिरीश भाई! आपने अब तक किस सबसे बड़ी प्रॉपर्टी के जाली दस्तावेज़ बनाए हैं? ऐसी प्रॉपर्टी जिससे आपको इतना कमीशन मिला हो कि आप ज़िंदगी भर उसी से गुज़ारा कर सकें?" मैंने चापलूसी से सच उगलवाते हुए पूछा।

"ऐसा ही एक मौका था! लेकिन दूसरा पक्ष बेईमान निकला। उस बदमाश ने मुझे धोखा दिया—लेकिन ईश्वर ने सुनिश्चित किया कि उसे वो मिले जिसका वो हकदार था," गिरीश ने मुँह बनाते हुए कहा।

"यह आदमी कौन था, गिरीश भाई? जिसने आपको धोखा दिया?" मैंने पूछा, मेरी जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी।

"छोड़ो अनुज भाई! मैं उस आदमी का नाम लेकर अपना मूड खराब नहीं करना चाहता," उसने उदासीनता से मेरी ओर देखते हुए कहा।

"अरे छोड़ो भी, गिरीश भाई! अगर इसे दबा कर रखोगे, तो पेट ही खराब होगा। बेहतर है कि इसे बाहर निकाल दो और थोड़ी देर के लिए अपना मूड खराब कर लो," मैंने बेमतलब हँसते हुए मज़ाक किया। गिरीश भी हँसते हुए मेरी बात में शामिल हो गया।

"वह मर गया है, यार - अभी तीन या चार दिन पहले ही," गिरीश ने बेपरवाही से कहा।

उसके शब्द मेरे कानों में ऐसे पड़े जैसे शिकारी कुत्ते की सीटी।

"क्या? क्या उसे कुछ हुआ है?" मैंने सहजता से पूछा।

"एक कहावत है - 'चोर का अंत निश्चित है।' उसके साथ भी यही हुआ," उसने अपनी कहानी जारी रखते हुए कहा, जबकि मेरा गुप्त बटन कैमरा उसके हर शब्द को रिकॉर्ड कर रहा था।

जब तक उसने बात खत्म की, मेरे मन से सारे संदेह दूर हो चुके थे। हालाँकि, डिंपल की ओर से मुझे अभी भी अपने चाचा के बारे में कोई संदेश नहीं मिला था। इसलिए, मैंने रुस्तम की बहन से फिर से संपर्क करने का फैसला किया।

मैंने रागिनी को फ़ोन करके पूछा कि क्या उसने कल से संतो का विवरण नोट कर लिया है। लेकिन रागिनी ने अपना काम कभी अधूरा नहीं छोड़ा—उसने संतो का पूरा नाम, पता और फ़ोन नंबर पहले ही लिख लिया था।

Machine Translated by Google

मैंने रागिनी से संतो का नंबर लिया और उसे डायल किया। मैंने उससे लंदन में डिंपल के चाचा का नंबर माँगा।

पता चला कि सैंटो के पास इस संपत्ति घोटाले में शामिल सभी लोगों की पूरी फाइल थी, जिसमें हवेली के असली मालिक भी शामिल थे।

जो काम डिंपल ने 24 घंटे में नहीं किया था, उसे सैंटो ने मात्र 24 सेकंड में पूरा कर दिया।

मैंने उस नंबर पर कॉल किया। दो बार कोशिश करने के बाद ही किसी ने जवाब दिया।

लाइन के दूसरे छोर पर मैंने जो सुना वह इतना चौंकाने वाला था कि मेरे होश उड़ गए।

बिना एक क्षण भी गंवाए मैंने रागिनी को दोबारा फोन किया और उसे एक जरूरी काम सौंप दिया।

नए खुलासों को देखते हुए, अब मेरी पहली प्राथमिकता सीधे पुलिस स्टेशन जाकर नर सिंह से मिलना था।

Machine Translated by Google

अध्याय 17

अंतिम नियति

मैं उस समय थाने में नर सिंह के सामने, उनके दफ़्तर में बैठा था। मैंने उन्हें मामले के सारे तथ्य बता दिए थे। उसके बाद, इस मामले से जुड़े सभी लोगों को आनन-फानन में बुलाया गया। जो लोग स्वेच्छा से नहीं आ सके, उन्हें ज़बरदस्ती अंदर लाया गया।

करीब दो घंटे बाद, थाने के निजी कमरे में, नर सिंह और मेरे अलावा, निधि, विक्रम, गुरप्रीत कौर उर्फ पम्मी, पम्मी की नौकरानी प्रिया और उसका प्रेमी रमेश भी मौजूद थे। नर सिंह के साथ-साथ सबकी निगाहें मुझ पर टिकी थीं। तभी दिलबाग सिंह रुस्तम की बहन सतवंत कौर उर्फ संतो के साथ अंदर आया।

मैंने कमरे में मौजूद सभी लोगों पर नज़र डाली। मैंने देखा कि दरवाज़े पर चार-पाँच हथियारबंद सिपाही पहले से ही तैनात थे। दिलबाग़ सिंह ख़ुद दरवाज़े के पास खड़ा था।

"यह कहानी दो घनिष्ठ मित्रों - रुस्तम और विक्रम - के इर्द-गिर्द घूमती है।
लगभग पंद्रह साल पहले, जब वे लगभग तीस साल के थे, उन्होंने एक हाउसिंग प्रोजेक्ट शुरू किया था। उन्होंने सैकड़ों लोगों को घर का सपना दिखाकर झांसा दिया और फिर लगभग दो करोड़ रुपये गबन कर दिल्ली भाग गए। इतनी बड़ी रकम होने के कारण, दिल्ली में बसना उनके लिए मुश्किल नहीं था। रुस्तम और विक्रम दोनों ने एक ही इलाके में अलग-अलग फ्लैट खरीदे। दिल्ली आने के बाद भी, उनकी दोस्ती सालों तक मज़बूत रही। लेकिन दरार तब पड़ने लगी जब विक्रम को पता चला कि रुस्तम का गुरप्रीत कौर उर्फ पम्मी के साथ अफेयर चल रहा है—जो असल में विक्रम की पत्नी थी।

"क्या बकवास कर रहे हो? मैं तुम्हें मार डालूँगी!" यह सुनकर पम्मी गुस्से से चिल्लाई।

"चुप रहो! किसी और के बोलने से पहले अनुज को अपनी बात पूरी करने दो," नर सिंह की कठोर आवाज़ ने कमरे को शांत कर दिया।

"तुम्हें मेरा खून पीने के बहुत से मौके मिलेंगे—मैं इसे तुम्हें कॉफी मग में पिलाऊँगी। लेकिन अपनी बात पूरी करने के बाद ही," मैंने तथाकथित सुंदरी की ओर मुस्कुराते हुए कहा।

Machine Translated by Google

"लेकिन आपने मुझ पर रुस्तम के साथ संबंध होने का आरोप क्यों लगाया?"

"मेरे पास एक गवाह है जो तुम्हारे अवैध संबंध की पुष्टि कर सकता है। क्या मैं उसकी गवाही लाऊँ?" मैंने अपना धैर्य खोते हुए जवाब दिया।

"अनुज, किसी के सवालों का जवाब मत दो - बस अपनी कहानी जारी रखो," नर सिंह ने मुझे निर्देश दिया।

"तो, जैसा कि मैं कह रहा था, पम्मी और रुस्तम के रिश्ते की वजह से रुस्तम और विक्रम की दोस्ती में खटास आ गई। वे रियल एस्टेट सेक्टर में बिज़नेस पार्टनर भी थे। हालाँकि, जायज़ प्रॉपर्टी डीलिंग के बजाय, वे धोखाधड़ी में माहिर थे—नकली दस्तावेज़ों के ज़रिए प्रॉपर्टी हड़पना।

उनके संबंध ऐसे लोगों से थे जो फ़र्ज़ी मालिकाना हक़ के कागज़ात बनाने में माहिर थे। ऐसे ही फ़र्ज़ी दस्तावेज़ों का इस्तेमाल करके उन्होंने अशोक विहार स्थित एक हवेली पर कब्ज़ा कर लिया, जिसका मालिक विदेश में रहता था। अपने इकलौते बेटे की मानसिक बीमारी के कारण, मालिक भारत वापस नहीं आ सका। उसके भरोसे का फ़ायदा उठाकर, रुस्तम और विक्रम ने रुस्तम के नाम पर संपत्ति के फ़र्ज़ी कागज़ात बनाए और हवेली हड़प ली। इस घोटाले की अनोखी बात यह थी कि असली मालिक को अपना असली मालिकाना हक़ साबित करने के लिए अदालत के चक्कर काटने पड़े, और अक्सर उम्मीदें टूट जातीं। या तो असली मालिक संपत्ति के बारे में भूल जाता, या फिर उसे अदालत के बाहर समझौता करने के लिए मजबूर होना पड़ता।"

मैं एक पल के लिए रुका और सबके हाव-भाव देखने लगा। ख़ासकर विक्रम, अपनी सीट पर बेचैनी से हिल रहा था और बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा था।

"लेकिन अशोक विहार की यही हवेली रुस्तम के पतन का कारण बन गई। चूँकि जाली संपत्ति के कागज़ रुस्तम के नाम पर थे, पम्मी ने मौका देखा और उससे संबंध बना लिए। रुस्तम, जो पहले से ही उसकी खूबसूरती पर मोहित था, ने उसके प्रस्ताव का स्वागत किया। हालाँकि, जब विक्रम को उनके रिश्ते का पता चला, तो वह असुरक्षित महसूस करने लगा। उसे डर था कि रुस्तम और पम्मी एक दिन उसे दूध में पड़ी अनचाही मक्खी की तरह रिश्ते से बाहर कर देंगे। उसने ज़िद शुरू कर दी कि संपत्ति के कागज़ों में उसका नाम भी जोड़ दिया जाए। हालाँकि, यह असंभव था क्योंकि असली मालिक पहले ही मामला अदालत में ले जा चुका था। लेकिन विक्रम इस बात को समझ नहीं पाया।"

"ये तो सब उनके बारे में है, लेकिन रुस्तम की हत्या कहाँ हुई और उसकी लाश को कैसे ठिकाने लगाया गया? जल्दी से पता करो," नर सिंह ने अधीरता से पूछा।

मुझे।

Machine Translated by Google

"थोड़ा धैर्य रखो। मैं हत्या और उसका मकसद दोनों एक साथ बता दूंगी," मैंने नर सिंह की तरफ हल्की सी मुस्कान बिखेरते हुए कहा, जो चुप हो गया।

"रुस्तम की मौत अनगिनत श्रापों का नतीजा थी। उसने इतने लोगों को धोखा दिया था कि कई लोग उसकी मौत की कामना करते थे। यही वजह है कि कई संदिग्ध थे, लेकिन किसी के खिलाफ कोई ठोस सबूत नहीं था। हालाँकि, आखिरकार रुस्तम को मारने वाले वे लोग थे जिन पर हम कभी शक भी नहीं करते—आम लोग।

मैंने कहा, "सर, प्रिया, उसके प्रेमी रमेश और पम्मी को गिरफ्तार कर लीजिए।"

जैसे ही मैंने यह कहा, उन तीनों के चेहरों पर भय छा गया।

"मैंने क्या किया है? मुझे क्यों गिरफ़्तार कर रहे हो?" पम्मी फिर चिल्लाई।

तब तक दो महिला कांस्टेबलों ने उसके हाथ पकड़ लिए थे। हालाँकि, प्रिया और रमेश ने कोई अफ़सोस नहीं जताया।

"रुको! कहानी अभी खत्म नहीं हुई है," मैंने कहानी में रहस्य को और गहरा करते हुए कहा।
कमरा।

"अब तक तो हर कोई सोच रहा होगा कि रुस्तम ने प्रिया और उसके प्रेमी के साथ ऐसा क्या धोखा किया होगा जिसके कारण उन्होंने उसकी हत्या कर दी।"
सच तो यह है कि ये तथाकथित निर्दोष लोग पेशेवर हत्यारे हैं—ये भाड़े पर हत्याएँ करते हैं। इन्हें दो महीने पहले रुस्तम की हत्या के इरादे से पम्मी के घर में मज़दूरों के तौर पर रखा गया था। हालाँकि, उस समय पम्मी को उनके इरादों का अंदाज़ा नहीं था। बदकिस्मती से, बाद में वह उनके जाल में फँस गई। और अब, जैसा कि आप देख सकते हैं, वह अपराधियों के बीच खड़ी है। लेकिन एक पहलू गायब है—इस साज़िश का चौथा खिलाड़ी। असली सवाल यह है कि रुस्तम की हत्या का आदेश किसने दिया?"

एक बार फिर सबकी नज़रें मुझ पर थीं। अब तक सबकी नज़रें प्रिया और पम्मी पर टिकी थीं।

"कौन था?" इस बार सवाल नर सिंह ने नहीं बल्कि रुस्तम की बहन संतो ने पूछा।

"रागिनी, कृपया मैडम को अंदर ले आओ," मैंने ऊंची आवाज़ में आदेश दिया।

तीखे नैन-नक्श, थोड़ा सांवला रंग, गाल पर एक सौंदर्य चिन्ह और गहरे गड्ढे वाली एक महिला कमरे में दाखिल हुई, उसके साथ

Machine Translated by Google

रागिनी ने पुलिस अधिकारी की तरह उसकी कलाई मजबूती से पकड़ रखी थी।

"ये डिम्पी मैडम हैं। कल सुबह ही मेरी उनसे मुलाक़ात हुई थी, और उन्होंने जो जानकारी दी, उससे मुझे इस हत्याकांड का राज़ सुलझ गया," मैंने नर सिंह की तरफ़ देखते हुए कहा। उसके हाव-भाव से पता चल रहा था कि उसे अभी भी पूरी बात समझ नहीं आई थी।

"डिम्पी अशोक विहार हवेली के असली मालिक की भतीजी है।
वह संपत्ति को लेकर कानूनी लड़ाई में अपने चाचा का प्रतिनिधित्व कर रही थीं।
हालाँकि, उसके चाचा का दो साल पहले निधन हो गया था, और वे अपने पीछे केवल अपने मानसिक रूप से बीमार बेटे को छोड़ गए थे, जो इस समय लंदन के एक अस्पताल में भर्ती है। शुरुआत में उसने अपने चाचा के प्रति वफ़ादारी के लिए मुकदमा लड़ा, लेकिन उनके निधन के बाद उसकी ईमानदारी लालच में बदल गई। वह हवेली 500 वर्ग गज में फैली है और आज उसकी कीमत ₹50 करोड़ से कम नहीं है। उस संपत्ति का एक छोटा सा हिस्सा भी पाने की चाहत ने उसे कुछ भी करने को तैयार कर दिया।

"प्रिया पहले डिम्पी के घर नौकरानी का काम करती थी। उसे पता चला कि प्रिया का प्रेमी रमेश एक सुपारी किलर है। मौका देखकर, उसने प्रिया को पम्मी के घर नौकरी दिलवा दी, ताकि रुस्तम के हत्यारे आसानी से उस तक पहुँच सकें।"

"और रुस्तम के शव के पास मिले निधि के अंतर्वस्त्र का क्या हुआ?"
नर सिंह ने पूछा।

"संभवतः यह पहले से ही उस अपार्टमेंट में पड़ा था जिसे विक्रम और निधि अपने प्रेम-आश्रय के रूप में इस्तेमाल करते थे। इसलिए, जब रुस्तम का शव वहाँ फेंका गया, तो यह संयोग से वहाँ मौजूद था।"

"तो, अंतिम संदिग्ध कौन हैं?" नर सिंह ने पूछा।

"डिंपी, रमेश, प्रिया, और दिव्य सुंदरी, गुरप्रीत कौर उर्फ पम्मी," मैंने घोषणा की।

"उन सबको बंद कर दो!" नर सिंह ने आदेश दिया।

जब यह हुआ, तो सैंटो ने अपना आशीर्वाद भरा हाथ मेरे सिर पर रखा, उसकी आंखों में दुख और राहत के मिश्रित आंसू थे।

"आपकी वजह से मेरे भाई के हत्यारे जेल जा रहे हैं," उसने कृतज्ञतापूर्वक कहा।

"दिलबाग, इन सबको कोठरी में बंद कर दो और इन्तजाम करो

Machine Translated by Google

कल उन्हें अदालत में पेश करो। और सबके लिए चाय-कॉफ़ी मँगवाओ।
"ओह, और अनुज बाबू के लिए एक स्ट्रॉन्ग कॉफ़ी बना देना क्योंकि अब से मैं हर मामले में उनकी मदद लूँगा। मैंने आज उन्हें अपना गुरु मान लिया है," नर सिंह ने कहा, उसके शब्दों के साथ ही कमरे में ज़ोरदार हँसी का दौर शुरू हो गया।

"लेकिन साहब, इस बेचारे की एक विनम्र विनती सुन लीजिए... मुझे इस केस के लिए कोई फीस नहीं मिलेगी, इसलिए कम से कम उस धोखेबाज से मेरे पचास हज़ार रुपये तो वापस दिला दीजिए," मैंने नर सिंह की ओर देखते हुए कहा।

"अपने पैसों की चिंता मत करो! उस धोखेबाज़ को जल्द ही पकड़ लिया जाएगा... और मैं विक्रम के ख़िलाफ़ जाली दस्तावेज़ बनाने का मामला भी दर्ज कराऊँगा।"
नर सिंह ने दृढ़ता से कहा, "निधि को छोड़कर बाकी सभी इस मामले में जेल जाएंगे।"

यह सुनकर निडर दिखने वाला विक्रम अचानक पीला पड़ गया, जबकि निधि ही एकमात्र ऐसी थी जिसने राहत की सांस ली।

तभी संतो आगे बढ़ी और अपना आशीर्वाद भरा हाथ मेरे सिर पर रख दिया। उसकी आँखों में दुःख और राहत का मिला-जुला भाव था।

"तुम्हारी वजह से मेरे पति के हत्यारे जेल जा रहे हैं... अपनी फीस की चिंता मत करो। वो जल्द ही तुम्हारे पास पहुँच जाएगी," निधि मेरे पास आते हुए बोली। उसकी बात सुनकर मेरे होंठों पर मुस्कान आ गई।

"मुझे माफ़ कर दो निधि। मैंने अपने भाई की हत्या के लिए तुम पर शक किया था," संतो ने माफ़ी मांगते हुए कहा।

"बिल्कुल नहीं, बहन! आप मुझसे बड़ी हैं, और आपको जो भी महसूस हो, कहने का पूरा हक़ है... मैं बुरा क्यों मानूँगी?" निधि ने संतो के हाथ अपने हाथों में लेते हुए धीरे से जवाब दिया।

रागिनी ने मेरी तरफ देखा और हल्के से मुस्कुराई... तब तक सबके लिए कॉफ़ी आ चुकी थी। मैं सब कुछ भूलकर अपने पसंदीदा काम में लग गई—अपनी कड़क कॉफ़ी की चुस्कियाँ लेने में।

अंत.